In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

1239
All India Ayurvedic Congress
"Dhanwantari Bhavan,"

तत्काल फलप्रद प्रयोग

(लाखों-रोगियों पर पूरी तरह सुपरीक्षित)

(द्वितीय-भाग)

— संपादक —

आयुर्वेद की दर्जनों पुस्तकों के प्रख्यात लेखक

न्यायायुर्वेदाचार्य वैद्य पं० चन्द्रशेखर जैन शास्त्री।

अध्यक्ष — आयुर्वेद-चिकित्सक संघ।

संपादक— 'आयुर्वेद चिकित्सक' (आयुर्वेदिक उत्तम मासिकपत्र)

लाखाभवन, पुरानी चरिहाई, जबलपुर।

सर्वाधिकार पूरीतरह सुरक्षित है। Rs 3-50

राज संस्करण — ढाई रुपया।

वसन्तपंचमी
वि. सं. २०१०

प्रथमबार
१०००

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

—हमारी चुनिन्दा अत्यन्त प्रामाणिक औषधें—

संघ मकरध्वजवटी (पुरुषों के लिये उत्तम) २१ गोली १।।) ४१ गोली २।।)

संघ ज्वरहर (ज्वरनाशक स्वादिष्ट-दवा) ४ औंस १) आठ औंस १।।।)

संघ बालबन्धु (मीठी घुटी) प्रचलित पैक।-) मंझोला ।।) चौगुना ।।।-

चेचक सुधा (शर्तिया चेचक नहीं निकलने देती) पूरा को[illegible]

चैतन्य-कारिणी (मुर्दे में जान फूकने वाली रस-वटिका) ३ माशा ३)

स्तंभन वटी (निरापद एवं अत्यन्त शक्तिप्रद) एक शीशी ढाई रुपया।

हब्बा-डब्बा (बच्चों के जूड़े की शर्तिया दवा, झट आराम) एक शीशी १)

जिगर-तिल्ली की दवा (बच्चों के जिगर-तिल्ली पर रामबाण) १ माह २।।)

पेटदर्द नाशक (भयंकर पेटदर्द फौरन ठीक करता है) प्रति पैक १।)

रक्तरोधक रस (रक्तार्श, अत्यार्तव, रक्तप्रदर में अत्युत्तम) प्रति पैक ३)

स्वप्नप्रमेहहर रस (स्वप्नदोष की सर्वश्रेष्ठ औषध) प्रति पैक ३।।)

तत्काल-पीड़ाहर (शरीर के सारे दर्दों में अकसीर) प्रति पुड़िया ‒)।।

नेत्रामृत-रसायन (कमजोर, बूढ़े, रुग्णनेत्रों को) १ माह का कोर्स २।।)

सौन्दर्य-वर्धक (मुंहासे, चिट्टे, चेचक, दाग मिटाता है) प्रति पैक २।।)

संघ दन्त-मंजन (दांतों को सुन्दर, मजबूत बनाता है) छोटा ।।।) बड़ा १।)

संघ स्वादिष्टचूर्ण (विशुद्ध,पाचक,स्वादिष्ट) १ छटांक १।) आधा पाव १।।।

सुगंधित धूप (अनेक रोगनाशक) ५ तो.।।।) १० तो. १।=) २० तो. २।।

संघ पाचक-अर्क (शुद्ध, दीपक, पाचक, रोचक अर्क) प्रति शीशी १)

संघ शक्तिप्रद पेय (मीठा, स्वादिष्ट एवं सुगंधित) प्रति पैकिंग २)

संघ प्रदर हर (कमरदर्द हड़फूटन और सिरदर्द पर) प्रति पैक ३।।)

कामदीपक तिला	२।।)	प्रदरहर सैट	६।)
नपुन्सकत्वहर पोटली (८)	२)	संग्रहणी नाशक सैट	१२।।)
विरेचक वटी (५० गोलियां)	।।।)	मंदाग्नि नाशक सैट	५।।)
संघ कस्तूरी वटी (१०० गोली)	।।।)	क्षयान्तक सैट	२१।।)
संघ प्रसूतहर (पूरा कोर्स)	१०)	अर्शरिपु सैट	६।।)
भूतप्रेत-बाधाहर सैट	६।।)	श्वासनाशक सैट	७।=)

आयुर्वेद-चिकित्सक संघ, लाखाभवन, पुरानी चरिहाई, जबलपुर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तत्काल-फलप्रद-प्रयोग

All India Ayurvedic Congress
"Dhanvantari Bhavan,"
Road 66, Punjabi Bagh; New Delhi-1100..

(द्वितीय-भाग)

अब मेरे ज्ञानदाता और परम्परागत अनुभवदाता गुरु भी रहे,
उन्हीं श्री स्वर्गीय पूज्यपाद पितृदेव को यह सविनय अकिंचन भेंट।

अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन

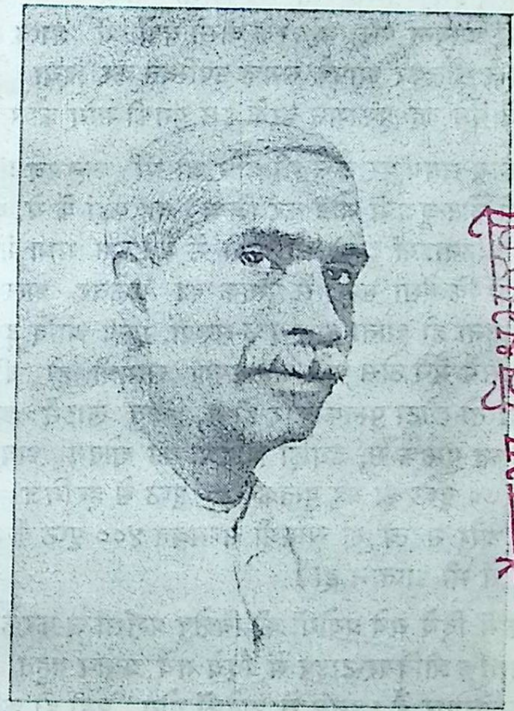

चौखम्भा विद्याभारती
चौक (चित्रा सिनेमा के सामने)
वाराणसी-२२१००१

पूज्य स्वर्गीय पिता पं० नेकीराम जी जैन शास्त्री महोदय।
—मिति आषाढ़ वदी २, शुक्रवार सम्वत् १६४८ वि. सं.।
हण—मिति ज्येष्ठ-शुक्ला चतुर्थी, रविवार सं. १६६६ वि. सं.।
विनयावनत पुत्र—वैद्य पं. चन्द्रशेखर जैन शास्त्री 'पाढ़मीय'।
प्रवास-स्थान—लाखाभवन, पुरानी चरिहाई, जबलपुर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

—अपनी बात—

'तत्काल फलप्रद-प्रयोग' प्रथमभाग के बाद यह अद्वितीय द्वितीय-भ प्रकाशित करते हुए मुझे बड़ी ही प्रसन्नता है। प्रथम-भाग की सहृदय पाठकों ने अत्यधिक प्रशंसा की और मेरा उत्साह बढ़ाया। फल-स्वरूप यह दूसरा-भाग लेकर मैं आयुर्वेद-जगत की सेवा में उपस्थित हो रहा हूं। यह कैसा है ? इसका निर्णय तो अपने प्रेमी-पाठकों पर ही छोड़ता हूं, किन्तु मैंने इसमें अत्यन्त परिश्रम करके बीसों वर्षों में प्राप्त हुए अपने अनुभव को दिल खोलकर आपके समक्ष उपस्थित कर दिया है। अपने मित्रों की रायमें मैंने यह प्रकाशन करके इस युगकी मांग को समझा है।

मुझे समय-समय पर जैसे भी और जो भी अनुभव प्राप्त हुए, मैंने उन्हें अपनी नोट-बुक में नोट कर लिया। वह कहां के थे, कैसे प्राप्त हुए, क्या-क्या कठिनाइयां हुई, उस विषय में मैंने इस भाग में कुछ भी नहीं लिखा, क्यों कि ऐसा करने से पुस्तक का कलेवर अत्यधिक बढ़ जाता, विषय इतना ही आता और पृष्ठ-संख्या, मूल्य आदि दूना करना पड़ता। अतः इसमें मैंने ठोस और महत्वपूर्ण सामग्री ही दी है। यह प्रकाशन दीखता तो छोटा पुस्तकाकार ही है, किन्तु लाइनें और मेजर किसी भी प्रचलित पुस्तक से, ड्योढ़ी सामग्री का द्योतन अवश्य करता है। इस तरह १७० पृष्ठ की यह पुस्तक २०० पृष्ठ से हरगिज कम नहीं है। इतनी ठोस, और महत्वपूर्ण सामग्री सम्भवत ४०० पृष्ठ के नामधारी किसी बड़े पोथे में भी प्राप्त न हो।

इस पुस्तक में दिये गये प्रयोगों की विशेष प्रशंसा न करके मैं इतना अवश्य लिखूंगा कि ब्रीवियर-टाइप में दिये गये प्रयोग बहुत ही मार्के के और बड़े ही जोरदार हैं। इनमें से अनेकों योग बड़ी ही कठिनाई से प्राप्त हुए हैं। समय और रुपया अत्यधिक खर्च करना पड़ा, फिर भी ये कठिनाई से ही प्राप्त हुए। श्री परमब्रह्म परमात्मा की असीम अनुकम्पा से यह महत्वपूर्ण कार्य सफल हुआ समझता हूं।

आभार-प्रदर्शन —

इस प्रकाशन में हमें अप्रत्यक्ष-रूप से कई पुस्तकों की सहायता

000126

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भी अवश्य लेनीपड़ी है। क्योंकि हमने अपनी नोट-बुकमें जहां से जो भी उत्तम सामग्री मिली, झट नोट कर ली और उस पर अनुभव प्रारंभ कर दिया और सफलता मिलने पर उसे जनता के समक्ष उपस्थित कर दिया। इस प्रकार हमउन प्राचीन विद्वान लेखकोंका भी सविनय आभार प्रदशन अवश्य कर रहे हैं, जिनकी हमने किसी रूप में भी सहायता ली है।

साथ ही साथ अपने स्नेही-मित्रों को भूल जाना भी अकृतज्ञता होगी। श्री. पं. रामसेवक जी शुक्ल मेरे बड़े सहयोगियों में हैं। आपसे मुझे सदा के लिये सहयोग का निश्चित-आश्वासन प्रामाणिक-रीत्या प्राप्त है। श्री. ठा. गौरीशंकरसिंह जी चन्देल भी अवसर पर मुझे उत्तम सुझाव भेजते रहते हैं। मेरी धर्मपत्नी वैद्या प्रकाशवतीदेवी विशारदा ने भी मेरे इस पुण्य-प्रयासमें पर्याप्त-सामग्री और सहयोग देकर हाथ बटाया है। अतः मैं इन सबका एवं अन्यान्य प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोगदाता ग्राहकों-अनुग्राहकों का, लेखकों का और प्रशंसकों का हृदय से आभारी हूँ। इनके पुनीत सहयोग के बिना प्रगति करना बिलकुलही असम्भव होता।

इस ग्रन्थ की कतिपय विशेषतायें—

(१) इसमें एक भी प्रयोग ऐसा नहीं है, जो सुविधासे न वनाया जासके।
(२) दो-चार योगों को छोड़कर किसीका भी मूल्य दो-आनेसे अधिक नहीं।
(३) साधु-महात्मा, त्यागी-व्यक्ति जैन-वैष्णव सभी धार्मिक-बन्धु इन औषधों का प्रयोग कर सकें, यह ध्यान पूरा-पूरा रखा गया है।
(४) विशुद्ध प्रामाणिक आयुर्वेदीय प्रयोग ही इस पुस्तक में दिये हैं।
(५) वैद्यबन्धुओं के अतिरिक्त साधारण जनताभी इनका प्रयोग करसकेगी।

तत्काल-फलप्रद प्रयोग (तृतीय–भाग)

इस पुस्तक के बाद ही इसका प्रकाशन हो रहा है। अपनी कठिनाइयाँ मैं ही समझता हूं, फिर भी न जाने कौन-सी अनिर्वचनीय शक्ति मुझे आगे बढ़ने के लिये प्रेरित कर रही है; मैं यह कभी नहीं कर सकता था। मेरा अटल विश्वास है कि मैं नियमित रूपसे लगातार आयुर्वेदीय-सेवा करता रहूंगा, चाहे जो भी विघ्न-बाधायें क्यों न आवें।

तीसरा भाग प्रेस में है। पराधीनता की वेबसी एक भुक्तभोगी ही जानता है। इसलिये पाठक धैर्य रखें और मुझे क्षमा करें। पुस्तक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शीघ्र से शीघ्र प्रकाशित करने के लिये मैं अत्यधिक प्रयत्नशील हूँ। इसके भी साधारण और राज दोनों संस्करण होंगे, मूल्य क्रमशः २) और २।।) होगा। पृष्ठ-संख्या और सामग्री दूसरे भाग से भी अधिक होगी। अधिक प्रशंसा करना पसन्द नहीं। पहिले और दूसरे भाग को देखकर ही आप स्वयं अनुमान कर सकते हैं। इसे भी अवश्य मंगाइये। अभी से मनीआर्डर द्वारा रुपया भेज देनेवालों को आधापोस्टेज माफ रहेगा। साधारण संस्करण के लिये २।) और राजसंस्करण के २।।।) मनीआर्डर से भेज दीजिये। हम पुस्तक रजिस्ट्री से भेज देंगे।

'आयुर्वेद-चिकित्सक' के विषय में—

इसवर्ष से अत्युत्तम, अनुभवपूर्ण ठोस-सामग्री ही दीजायगी। पृष्ठ-संख्या में भी गत-वर्ष की अपेक्षा अवश्य वृद्धि होगी। अपनी पुस्तकों के प्रत्येक ग्राहक से मैं सविनय अनुरोध करता हूँ कि वह 'आयुर्वेद चिकित्सक' का ग्राहक अवश्य बने। जिन ग्राहकों ने यह पुस्तक मंगाली है, और तृतीय भाग मंगाना है, वे २।) सवा दो-रुपया उसी के साथ और भी भेज दें। साधारण अंकों के अतिरिक्त वर्षान्त में प्रकाशित होने-वाला एक विशेषांक भी भेंट किया जायगा। इस तरह आप विशेष लाभ में ही रहेंगे।

माननीय लेखकों और विज्ञापन-दाताओं से निवेदन—

यदि आपके पास नारी-रोगों या बालरोगों पर शतशोऽनुभूत प्रयोग हैं तो फौरन ही लौटती डाक से भेजने का कष्ट कीजिये। प्रयोग सुलभ, अल्प-व्ययकर एवं सरलता से निर्माण-योग्य हों। आपके प्रयोग को हम साभार सपरिचय प्रकाशित कर देंगे।

विज्ञापन-दाताओं से निवेदन है कि वे विज्ञापन के रेट मंगाकर, पुस्तक प्रकाशित होने के पर्याप्त समय पहिले अपना रुपया और विज्ञापन साथ ही भेज दिया करें। ताकि हम उन्हें उत्तमरीत्या प्रकाशित कर सकें। पूरा रुपया पेशगी भेजना हरगिज न भूलें।

कृपया योग्य सम्मति आदि भेजकर अवश्य अनुग्रहीत करते रहिये।

वसन्त-पंचमी } आपके विशेष-अनुग्रह का अभिलाषी—
सं० २०१० } वैद्य पं० चन्द्रशेखर जैन शास्त्री।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तत्काल-फलप्रद प्रयोग (द्वितीय-भाग) की

—प्रयोग-सूची—

(१) दस-हजार में भी सस्ता 'शर्तिया पुत्रोत्पादक प्रयोग'।
(२) चार-दिन में 'हिस्टेरिया' का शर्तिया इलाज।
(३) गर्भिणी की 'हिस्टेरिया' पर रामवाण-योग।
(४) गर्भिणी के नव-माह की हिस्टेरिया पर।
(५) गर्भ-स्थापक एवं गर्भाशय-विकारनाशक अनुपम-प्रयोग।
(६) 'अफीम' हमेशा के लिये छुड़ा देनेवाला कारगर-प्रयोग।
(७) मरे हुए बच्चे को गर्भ से फौरन निकालने वाला प्रयोग।
(८) कब्ज-नाशक 'जादू की सौंफ'।
(९-१०-११) भयानक प्रदरों से तीन-दिन में शर्तिया छुटकारा।
(१२ से १५) गर्भाशय की गांठ और उस पर अनुभूत चिकित्साक्रम।
(१६) योनिकन्द-नाशक रामवाण-योग।
(१७) अनन्तवात या पुराने-हठी सिरदर्द पर अव्यर्थ-प्रयोग।
(१८-१९) गर्भाशय-शोथ पर सुपरीक्षित उपचार-पद्धति।
(२०) गर्भाशय से मवाद बहने पर शर्तिया-इलाज।
(२१) रक्तप्रदर पर तत्काल-फलप्रद प्रयोग।
(२२-२३) 'बायशूल' में तत्काल-फलप्रद दो-प्रयोग।
(२४) 'अव्यर्थ महिला-रसायन' (५० रोगों की शर्तिया दवा)
(२५-२६-२७) खांसी-नाशक तीन अव्यर्थ-प्रयोग।
(२८) 'एक तीर में चार-शिकार' (सोम, रक्त-श्वेतप्रदर, प्रसूत हर)
(२९) महिलाओं की 'छाजन' पर अनुभूत चिकित्सा-पद्धति।
(३०-३१-३२) आर्तव-शोधक रामवाण-सैट (चुनिन्दा औषधें)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(३३) आर्तव-शोधक एवं ऋतु-प्रवर्तक वर्ति ।
(३४) बालिकाओं के 'अस्थित्त्य' पर विशेषानुभव ।
(३५) 'सुलभ महिला-रसायन' (सूखी-सी किशोरियों के लिये) ।
(३६) 'महिला-मित्र' [सुपरीक्षित एवं पचासों-रोग नाशक] ।
(३७) मृतवत्सार्थ शास्त्रीय-पद्धति ।
(३८) भयंकर वायुशूल, पेटदर्द, अफारा आदि में अति सुलभ योग ।
(३९) मनमाना विरेचन करानेवाला 'उत्तम विरेचक' ।
(४०) हमेशा के लिये बाल साफ ।
(४१) 'गर्भ न रहे' (वन्ध्या-करण) सन्तति-निरोध-प्रयोग ।
(४२-४३) भूत-प्रेत की बाधा दूर करनेवाले रामवाण योग ।
(४४-से-४७) टी. बी., राजयक्ष्मा का शर्तिया इलाज ।
(४८) महिला-रोगों पर रामवाण 'चांदी की गोली'
(४९) गर्भस्राव एवं गर्भपात की शर्तिया औषध ।
(५०) सरल मासिक-खोल ।
(५१ से ५५) हिस्टेरिया-नाशक सैट (उत्तम औषध-संग्रह) ।
(५६) उत्तम-प्रदरान्तक प्रयोग ।
(५७) उत्तम गर्भ-रोधक प्रयोग ।
(५८) उत्तम वन्ध्यात्व-नाशक प्रयोग ।
(५९) रजः प्रवर्तिनी वटी (निरापद और श्रेष्ठ) ।
(६०) महिलाओं के 'रक्तविकार' में अत्युत्तम प्रयोग ।
(६१) श्वासरोग पर तत्काल-फलप्रद प्रयोग ।
(६२) श्वास-नाशक एक चुटकुला ।
(६३) 'कुचले-कटे-पिटे घाव ठीक करनेवाला' बढ़िया प्रयोग ।
(६४ से ६८) खांसी-नाशक सरल किन्तु रामवाण चुटकुले ।
(६९) गृध्रसी पर उत्तम-प्रयोग ।
(७०-७१) सूजन और जलन्धर पर दो लाभप्रद-प्रयोग ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(७२) 'उदरशूल-नाशक' तत्काल-फलप्रद प्रयोग।
(७३) हैजानाशक अव्यर्थ रामबाण-प्रयोग।
(७४) तत्काल वात-पीड़ा शामक।
(७५) पेडू के दर्द पर सरल एवं लाभप्रद प्रयोग।
(७६) स्तन-वर्धक प्रयोग।
(७७) उदरामृत-चूर्ण।
(७८) खूनी-प्रदर पर सरल एवं सुपरीक्षित दो-प्रयोग।
(७९) गर्भिणी की अरुचि पर 'स्वादिष्ट-अवलेह'।
(८०) गर्भपोषक-चुटकुला।
(८१) विभिन्न योनि-रोगों पर सुलभ-वस्ति प्रयोग।
(८२) प्रसूता का दूध बढ़ाने वाला प्रयोग।
(८३) प्रसूता के सर्व विकारों पर सुपरीक्षित 'सौभाग्य-शुण्ठी पाक'।
(८४) प्रसूता को पुनर्जन्म देनेवाली शर्तिया औषध-पद्धति।
(८५-से-८७) तीव्र काम-लिप्सा शान्त करने वाला प्रयोग-त्रय।
(८८) अव्यर्थ 'सन्तानदाता' वटी।
(८९) गर्भ-परीक्षा करने के दो-चुटकुले।
(९०) गर्भस्राव-निवारक चुटकुला।
(९१) भयंकर-रक्तप्रदर पर सरल-प्रयोग।
(९२) सर्व प्रदरान्तक प्रयोग।
(९३-से-९५) गर्भिणी के श्वेत-रंग के योनि-स्राव पर औषध-क्रम।
(९६) प्रदर-नाशक और धातु-वर्धक उत्तम-पौष्टिक 'हलवा'।
(९७) सोमरोगान्तक एवं पौष्टिक-प्रयोग।
(९८) कब्ज दूर करनेवाला 'स्वादिष्ट, मीठा और श्रेष्ठ-प्रयोग'।
(९९) चोट से पैदा हुए दर्द और सूजन पर उत्तम-प्रयोग।
(१००) सरल संग्रहणी-संहार।
(१०१) 'मुख-व्रणहर' मुंह के छालों की उत्तम औषध।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१०२) अग्निदग्ध-नाशक मरहम।
(१०३) वात-विकारों पर 'घरेलू-तैल'।
(१०४) वातविकार-नाशक 'सस्ता तैल'।
(१०५) योषापस्मार और कम्पवात पर उत्तम प्रयोग।
(१०६) दांत और मसूढ़ों के दर्द पर 'लाल-दवा'।
(१०७) प्रसूत-रोगों पर सरल और सुपरीक्षित-प्रयोग।
(१०८) आर्तव-शोधक अर्क।
(१०९) आर्तव-शोधक रामबाण वटी।
(११०) सम्पूर्ण-प्रदरों पर अपूर्व-योग।
(१११) मृतवत्सार्थ अत्युत्तम अमीरी-प्रयोग।
(११२) प्रदर-नाशक अव्यर्थ-वटी।
(११३) पेट-दर्द पर रामबाण-औषध।
(११४-५) योनि-रोगरक्षक दो अत्यावश्यक-मन्त्र।
(११६) बिना आपरेशन के टी. बी. के व्रण भरनेवाला शर्तिया प्रयोग।
(११७) शीघ्र प्रसव-कारक चुटकुला।
(११८) यह गर्भिणी है या नहीं ? पेट में पुत्र है या त्री ? इसकाज्ञान।
(११९) वन्ध्या-चिकित्सार्थ कतिपय सरल एवं उत्तम-प्रयोग।
(१२०) प्रसूत-विकारों पर देहाती प्रयोग।
(१२१) प्रसूत-रोगों पर देहाती प्रयोग।
(१२२ से १३०) गर्भिणी का नावमासिक-चिकित्सा-क्रम।
(१३१) गर्भस्राव-निरोधक चूर्ण।
(१३२) गर्भस्राव-पर सुपरीक्षित और अव्यर्थ शास्त्रीय प्रयोग।
(१३३) वायु के कारण सूखे हुए गर्भ को हरा-भरा करना।
(१३४) योनि-स्राव के कारण गर्भ पुष्ट न होने पर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१३५) झूठे गर्भ पर एक अनुभव।

(१३६) गर्भिणी की मस्तिष्क-भ्रमजन्य मूर्च्छा पर।

(१३७) गर्भिणी के बांयटे और उनकी चिकित्सा।

(१३८) गर्भिणी की कब्ज-चिकित्सा।

(१३९) जादू जैसा काम करने वाला 'दस्तावर-प्रयोग'।

(१४०) गर्भिणी के कतिपय-रोग और उनकी सफल चिकित्सा।

(१४१) सुख से प्रसव कराने वाले कतिपय सुलभ-प्रयोग।

(१४२) प्रसूता के दुग्ध-वर्धक उत्तमोत्तम योग।

(१४३) स्तनशोथ (थनैला) और उसकी किकित्सा।

(१४४) स्तनों के (अधिक दूध भर जाने से) चतर्राने पर प्रयोग।

(१४५) प्रसूता का दूध विशुद्ध करने वाले कतिपय प्रयोग।

(१४६) गर्भिणी के छठे-सातवें माह के प्रदर पर।

(१४७) प्रदरों पर अति-प्रचलित शास्त्रीय-योग 'चन्दनादि चूर्ण'।

(१४८) प्रदरों पर रामवाण 'पुष्यानुग चूर्ण'।

(१४९-५३) योनिदाह और उसकी सफल-चिकित्सा।

(१५४) अनेक योनिरोग-नाशक 'सुगन्धित-घृत'।

(१५५) विभिन्न योनि-रोगों पर कतिपय सरल और सफल प्रयोग।

(१५६) योनिरोगों को मार भगाने वाला 'मोदक'।

(१५७) महिलाओं के लिये परमामृत 'फलघृत'।

(१५८ से १६०) योनि-संकोचक रामवाण प्रयोग-त्रय।

(१६१) दुबली-पतली महिलाओं को मोटा बनाने वाला प्रयोग।

(१६२) पचासों-रोगों पर अकसीर 'लाभप्रद-प्रयोग'।

(१६३) जनसंख्या न बढ़ने देने वाला प्रयोग-संग्रह।

(१६४) मरे हुए बच्चे को गर्भ से निकाल देना।

(१६५) मरा बच्चा निकल जाने के बाद पेट साफ करने वाली औषध।

(१६६) प्रसव के बाद की स्वानुभूत अत्युत्तम औषध-व्यवस्था।

(१६७-८) प्रसूता के विषय में दो आवश्यक-वक्तव्य।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१६९) प्रसूता के छोटे-छोटे रोगों की चिकित्सा।
(१७०) चेहरे के काले, लाल और सफेद दाग-चकत्तों का इलाज।
(१७१) छीप- नाशक प्रयोग।
(१७२) मुंहासे नाशक प्रयोग।
(१७३) मुंह के मस्से नाशक प्रयोग।
(१७४) बाल काले करने वाले प्रयोग।
(१७५) बालों के लिये अमृत-तुल्य—'आंवलों का उत्तम-तैल'।
(१७६) बालों को बढ़ाने और काले करने वाले प्रयोग।
(१७७) सिर की फियास दूर करने वाले उपाय।
(१७८) गंज रोग और उसपर विशेषानुभव।
(१७९) गर्भाधान में अत्यन्त आवश्यक जानने योग्य बातें।
(१८०) महिलाओं के लिये हजारों रुपयों की अनमोल बातें।
(१८१) मासिकधर्म के विषय में अत्यावश्यक जानकारी।
(१८२) गर्भ रहने की खास-खास सच्ची नौ-पहिचानें।
(१८३) गर्भिणी के लिये सदा याद रखने योग्य हिदायतें।
(१८४) गर्भिणी के कतिपय विशेष-रोग और उनकी चिकित्सा।
(१८५) गर्भपात के विषय में आवश्यक जानकारी।
(१८६) प्रसव की झूठी-पीरें और उसपर सफल उपचार।
(१८७) गर्भ में पुत्र या पुत्री की पहिचान।
(१८८) बच्चे का मुंह आने से होने वाली स्तनपीड़ा पर अव्यर्थ योग।
(१८९) छोटे बच्चों के दूध छुड़ाने का निरापद उपाय।
(१९०) माता के विषय में एक विशेष सावधानी और जानकारी।
(१९१) पति-पत्नी के आपसी आवश्यक ज्ञातव्य-संबन्ध।
(१९२-९३) गर्भिणी के वमन पर दो शर्तिया प्रयोग।
(१९४) सन्तान न हो, किन्तु मासिक नियमित चालू रहे।
(१९५) पर-परीक्षित सन्तति-निरोधक प्रयोग।
(१९६) गर्भावस्था में कृमिजन्य-विकृति पर उपचार।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१९७) महिलाओं के मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और सुजाक पर।
(१९८) कान में दर्द उठने पर उत्तम प्रयोग।
(१९९) बढ़ी हुई कामातुरता का शामक-प्रयोग।
(२००) बिच्छू के विष पर शर्तिया और सस्ती औषध।
(×××) स्वस्थ-महिला परिषद अत्युपयोगी लेख।
(२०१-८) विभिन्न नारी-रोगों पर अत्युत्तम आठ-प्रयोग।

—बहू-बेटियों के लिये 'सर्वश्रेष्ठ-उपहार'—

(तत्काल-फलप्रद प्रयोग 'द्वितीय और तृतीय-भाग')

वैवाहिक प्रसंगों पर भारतीय-पद्धति के अनुसार बिदा करते समय पुत्री को और घर आने पर बहू को कुछ न कुछ विशेष-उपहार अवश्य भेंट किया जाता है। आप ऐसे समय पर ऐसा उपहार दीजिये, जो उनके लिये आजीवन उपयोगी रहे। हमारे ये दोनों-भाग महिलाओं के लिये अत्युपयोगी हैं। पग-पग पर इनकी आवश्यकता है। इनके बिना गृहस्थी का अनुभव अधूरा और बे जान है।

आजीवन प्रसन्न, नीरोग और व्यवस्थित रहने के लिये इन पुस्तकों का राज-संस्करण (जो अत्युत्तम श्रेष्ठ कागज पर छपा है) ही मंगाइये। प्रत्येक भाग का मूल्य २॥) मात्र है। दोनों-भाग एक साथ मनी-आर्डर से पांच-रुपया पेशगी भेजकर मंगाने से पोस्टेज माफ रहेगा। पांच से अधिक प्रतियां इकट्ठी मंगाने पर और भी विशेष रियायत दी जायगी। एजेण्ट-महोदय जबाबी-पत्र द्वारा सइ व्यवहार का निश्चय करेंगे।

वैद्य पं० चन्द्रशेखर जैन शास्त्री, संपादक-'आयुर्वेद चिकित्सक'।
अध्यक्ष-आयुर्वेद चिकित्सक संघ लाखाभवन, जबलपुर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

— हमारी लाभप्रद योजनायें —

हमारा विचार है कि हम अपना समस्त अनुभव-भन्डार जनता के समक्ष निष्कपट-रीत्या प्रगट करदें; एतदर्थ हम सतत-प्रयत्नशील हैं। अतः ये लाभप्रद योजनायें रख रहे हैं। उनसे सबको विशेष-लाभ है।

प्रथम योजना—आप १२५) एकमुश्त भेजकर 'आजीवन-ग्राहक' बन जाइये। इससे आपको आजीवन 'आयुर्वेद-चिकित्सक' तो मिलेगा ही; साथ ही साथ प्रकाशित हुई और प्रकाशित होनेवाली प्रत्येक पुस्तक की ४-४ प्रतियां रजिस्टर्ड बुकपोस्ट से भेंट स्वरूप नियमित मिलेंगीं।

इस तरह दस वर्ष में ही आप अपने रुपयों से दूने मूल्य की चीज प्राप्त करलेंगे। क्योंकि हम प्रति वर्ष ५) रुपये के मूल्य का साहित्य अवश्य प्रकाशित करेंगे ही। इस तरह मय पोस्टेज हमको २२५) खर्च करने होंगे और ३५) के मूल्य का 'आयुर्वेद चिकित्सक' फ्री भेजना होगा। आपको आगामीकाल में भी हमेशा के लिये सारी-सुविधायें मिलेंगीं। हमें यह लाभहै कि आपका रुपया मिलने से हम अपने अप्रकाशित-साहित्य को फौरन प्रकाश में लाकर आपकी भेंट कर सकेंगे।

दूसरी-योजना—आप मात्र ६१) एक मुश्त भेज दीजिये। आप 'आयुर्वेद-चिकित्सक' के आजीवन-ग्राहक माने जांयगे। आपको 'आयुर्वेद-चिकित्सक' हमेशा नियमित मिलेगा। साथ ही साथ हमारी स्वयं की प्रकाशित सभी पुस्तकों की चाहे जितनी प्रतियाँ पौने मूल्य पर मिलेंगीं। सिर्फ इनका पोस्टेज ही आपको देना होगा। दस प्रतियां इकट्ठी मंगाने पर मार्गव्यय हम ही देदेंगे। इसप्रकार आप और हम दोनोंही लाभ में रहेंगे।

तीसरी योजना—जो सज्जन एकमुश्त ५०१) भेंट कर देंगे, उनको प्रत्येक पुस्तक की २०-२० प्रतियां भेंट-स्वरूप रजिस्टर्ड बुकपोस्ट से भेज देंगे। साथ ही साथ उनका सपरिचय चित्र भी आगामी प्रत्येक पुस्तक में दिया जायगा और उन्हें 'आयुर्वेद-चिकित्सक' भी आजीवन मिलेगा।

विनीत—वैद्य पं० चन्द्रशेखर जैन शास्त्री,

संपादक—'आयुर्वेद चिकित्सक' लाखाभवन, पुरानी चरिहाई, जबलपुर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

—आद्य-वक्तव्य—

वर्तमान-युग में महिला-रोगों पर विशेष-साहित्य की अत्यधिक आवश्यकता है। उसकी पूर्ति के लिये आयुर्वेद-संसार प्रयत्नशील है। उसमें थोड़ा-सा अकिंचन सहयोग हमने भी दिया है। हम यह दावा तो नहीं कर सकते कि हमारा प्रयास सर्व श्रेष्ठ है; किन्तु हाँ, इतना अवश्य है कि हमने अपना २१ वर्ष का अनुभव-भण्डार आयुर्वेद-जगत के समक्ष निष्कपट-रीत्या रख दिया है। मेरा समय धर्मार्थ औषधालयों की सेवा में ही अधिकतर बीता है और अब भी उस सेवा से विरत नहीं हुआ हूं, अतः मेरे अनुभव गरीब-जनता से प्राप्त हुए हैं और आज के युग में वे सर्वाधिक उपयोगी भी हैं। प्रत्येक पाठक मेरे ग्रन्थ-गुम्फित अनुभवों का दर्शन करके उनकी सरलता और प्रामाणिकता पर अवश्य मुग्ध हो जायगा। इस ग्रंथ में प्रायः अनुभूत और तत्काल फलप्रद प्रयोग ही दिये हैं। जिन प्रयोगों में कहीं भी परीक्षित, सुपरीक्षित आदि लिखा है, उन्हें तो रामबाण ही समझिये।

चिकित्सा में प्रयोग-संग्रह अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। जैसे बिना उत्तम शस्त्रास्त्रों के सैनिक युद्धकौशल प्रदर्शित नहीं कर सकता, उसी प्रकार बिना उत्तम-अनुभूत एवं प्रामाणिक प्रयोगों के वैद्य की गति भी नहीं होती। अतः उत्तम प्रयोग-भण्डार अत्यावश्यक है। किन्तु काम इतने से ही नहीं चलता, वैद्य या चिकित्सक को अपनी बुद्धि का भी पर्याप्त उपयोग करना पड़ता है। अन्धाधुन्ध औषध-प्रयोग से सफलता हाथ नहीं लगती, प्रत्युत कहीं-कहीं हानि भी हो जाती है। इस विषय में मैं कतिपय अनुभव दे-देने का लोभ-संवरण न कर सकूंगा।

(१ गर्भाधान-विषक एक अनुभव—

रजोवर्धक प्रयोगों से 'रजोवृद्धि' करके पुनः 'रजःशोधन' भी कर लिया गया। उधर पुरुष-महोदय ने भी वीर्यवर्धक-प्रयोगों को सफलता से काम में लिया। निश्चित-समय पर व्यवस्थित-रीति से प्रसंग में तत्पर हुए। किन्तु वीर्यक्षरण के अनन्तर ही पुरुष झट हट गया, फलत, गर्भ न

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रहा। प्रसंगोपरान्त पांच मिनट तक उसी अवस्था में पति-पत्नि को रहना आवश्यक था, किन्तु शीघ्रता के कारण वह अवसर चुका गये। ऐसी छोटी-छोटी बातें अवसर पर असफलता दे-देती हैं।

(२) प्रदर की चिकित्सा और उसमें सावधानी—

हमने इस ग्रन्थ में प्रदर-रोगनाशक अनेकों प्रयोग दिये हैं। महिलाओं में यह रोग सर्वाधिक होता है। इनमें से चुनकर कोई भी प्रयोग किया; प्रारंभ में सफलता मिली, फिर वही हाल हो गया। ऐसी स्थिति में पथ्य व्यवस्था (परहेज) का अधिक ध्यान रखना चाहिये। प्रदरकारक आहार-विहार से बचना नितान्त आवश्यक है। आप पथ्य-व्यवस्था पर पूरा ध्यान रखिये। इशारे में इस विषय का वर्णन 'पथ्यदर्शक' में है, वहां से देखें। गुड़, तेल, खटाई, लालमिर्च, प्रसंग, सूखाभोजन आदि आहार-विहारों से बचावें। केला, पपीता, टमाटर आदि दें।

(३) चिकित्सा में सफलता की कुन्जी—

लोग जरा-सी बीमारी में डाक्टरों के पास भागे हुए चले जाते हैं। महिलायें लेडी-डाक्टर के पास चक्कर के बाद चक्कर काटती हैं। वैद्य या वैद्या कतिपय प्रसंगों में किंकर्तव्यविमूढ से रहे आते हैं। अतः अपने अनुभव का एक तरीका आपके सामने रखे देते हैं, जिससे आप रुग्णा को शीघ्र स्वस्थ कर सकें और उस पर अपना प्रभाव भी डाल सकें। सारांश यह है कि महिलाओं के प्रसंग में आप प्रयोग नं० ११४ और ११५ पर अवश्य ध्यान रखिये। उनके रोगों पर 'खाने, धोने और लगाने' या 'खाने, पीने और धोने' की दवाओं का पूरा-पूरा खयाल रखिये। अकेली खाने की दवा ही न दीजिये, किन्तु साथ ही साथ पीने की दवा, धोने या लगाने की दवा भी अवश्य दीजिये। इस पद्धति से लाभ नियमित होता है और प्रभाव भी बहुत अच्छा पड़ता है।

(४) चिकित्सा में सावधानी रखिये—

चिकित्सा में जल्दबाजी करना ठीक नहीं। रोगी का रोग-निर्णय व्यवस्थित-रीति से करिये। रोग के कारणों को समझिये और आवश्यक प्रश्नों जैसे—कब्ज तो नहीं रहता, आखें जलती हैं, हड़फूटन रहती है,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हाथ-पैर के तलवों में जलन है, कमर या सिर में दर्द तो नहीं रहता आदि का पूरा उत्तर अवश्य लीजिये। फिर सिर में लगाने का तेल, पीने की दवा, चाटने को अवलेह, गोलियां आदि औषधें दीजिये। किस समय कौन-सी औषध लेनी है, यह स्पष्ट समझा दीजिये। यह बात बताना भी हरगिज न भूलिये कि औषध किस चीज के साथ लेनी है। 'पथ्य-व्यवस्था' या 'सौ रोगों का सफल इलाज' पुस्तक में से आप कोई भी सरल अनुपान चुनकर बता सकते हैं। यहां पर भी हमने अपने प्रत्येक प्रयोग में अनुपान को प्रायः समझाकर भली भांति स्पष्ट कर दिया है।

(५) रोगों की चिकित्सा में 'पानी' का ध्यान—

जिसप्रकार कतिपय वैद्य अनुपान बदल कर, इनी-चुनी ५–७ औषधों द्वारा ही संसार के तमाम-रोगों की चिकित्सा करते रहते हैं, इसी प्रकार मैंने देखा है कि कुछ वैद्य पानी के विभिन्न प्रयोगों की हिदायत करके मामूली औषधों से ही रोगी को रोग-मुक्त कर देते हैं। मेरा दावा है कि जो वैद्य अनुपान और पानी का खयाल रखता है वह गोदन्ती, कामदुधा, गुरवेल-सत्व (गिलोयसत्व), शौक्तिक भस्म आदि ५–७ इनी–गिनी औषधों से भयानक रोगों पर भी विजय प्राप्त कर लेता है। 'आयुर्वेद–चिकित्सक' के आगामी–अंकों में हम एक ऐसे वैद्य की पूरी चिकित्सा-पद्धति स्पष्ट कर देंगे। वह बड़ा ही प्रामाणिक एवं लाभप्रद लेख होगा। ग्राहक बनकर उससे पूरा लाभ लीजिये।

हां तो, यदि रोगी या रुग्णा को कब्ज रहता है तो हिदायत कर दो कि पानी में 'सौंफ' डाल कर पियो। २ सेर पानी में, १ तोला सौंफ डलवाकर गरम कराओ और फिर छानकर रख दो स्वयं ठंडा हो जायगा; प्यास लगने पर यही पानी पिलाओ। पानी क्या है, अर्क–सौंफ है। कब्ज मिटा देता है। इसका प्रत्येक घूंट असर करता है। इसीप्रकार किसी रोगी को दस्त लग रहें हों तो आवश्यकतानुसार 'सोंठ' का पानी उक्तविधि तैयार करके दो। आंव गिरती हो तो 'ऐंठी–मरोड़फली' का पानी पिलाओ। कै होती हो तो 'बड़ी इलायची—डोंडा' का पानी दो। गरमी बढ़ी हुई हो तो 'धना-धनियां' का पानी पिलाओ। जी मचलाने और पेट दर्द में

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

'पोदीना' और 'कालानमक' का पानी दो। हैजे के समय में 'नीबू का रस, गंधक तेजाब (४ बूंद), शक्कर, मिलाकर पानी दो। अर्थात् जैसा भी रोग हो तदनुसार आप पानी का विधान करलें। आपकी साधारण औषध भी जोरदार कारगर रहेगी। हम इस विषय पर एक विस्तृत जोरदार लेख 'आयुर्वेद-चिकित्सक' के किसी अंक में देंगे। यहां तो बुद्धिमानों को इशारा भर कर दिया है।

—महिला-रोगों पर विशेषानुभव—

महिलाओं में जहां शारीरिक-चिकित्सा पर पूरा ध्यान रखना होता है, वहां मानसिक-चिकित्सा भी उपेक्षित नहीं की जा सकती। मेरा अनुभव है कि महिलाओं में शारीरिक-रोगों की अपेक्षा मानसिक-रोग अधिक-मात्रा में होते हैं। हिस्टेरिया, फिट, प्रभृति रोगों में इस बात पर और भी विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। सामाजिक और कौटुम्बिक बाधायें नारी-रोगों की वृद्धि में कम महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखतीं। मेरे परमस्नेही श्री. पं. रामसेवक जी शुक्ल ने ऐसी ही बातें स्पष्ट करने के लिये 'स्वस्थ-महिला परिषद' शीर्षक से एक महत्वपूर्ण लेख लिखा है, जो, इसी विशेषांक में पृष्ठ १४६ पर दिया गया है। चिकित्सक को ऐसी जगह अत्यन्त सान्त्वना और दिलासा देने की आवश्यकता होती है।

कहीं-कहीं महिलाओं को व्यवस्थित भोजन या मन चाही चीजें खाने न मिलने से, कहीं किसी प्रतिबन्ध-जन्य मानसिक अशांति से, कहीं पारिवारिक कलह से उत्पीड़ित होकर रोग के विशेष-ढोंग भी करने पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में वैद्य को योग्य विचार और सलाह द्वारा उन्हें दूर करना चाहिये। ऐसे विषयों पर पूरा प्रकाश डालने के लिये बड़े भारी पोथे की आवश्यकता है। सचमुच ऐसी स्थितियों में वैद्य को बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। एक प्रसंग यहां दे रहा हूं;—

एक रुग्णा को तीन माह से फिट आया करते थे। चिकित्सा चालू हुई। वैद्यों, ओझाओं और मिलने-जुलनेवालों, डाक्टरों-हकीमों ने मिलकर खिलाने-पिलाने की औषधों, इन्जैक्शन आदि से ठीक करने का पूरा प्रयत्न किया; किन्तु वह ठीक नहीं हुई। प्रत्युत 'मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दवा की' वाला हाल होगया था। मैं भी बुलाया गया, मैंने देखा और सोच कर कहा कि इनका इलाज यहां नहीं हो सकता, इनको कहीं बाहर शान्ति में रखा जाय या इनसे तीर्थ-यात्रा कराई जाय। उसके भाई-भाभी तैयार हो गये, फलतः दूसरे दिन से ही उसे आराम होने लगा। उसका भीतरी कारण था, घर वालों का न सुहाना और उन्हें देखकर क्रोध और क्षोभ उभड़ना। मैं इसे भाँप गया और उसी कारण को पहिले दूर किया। पथ्य-व्यवस्था में भी उसका ही इष्ट-पथ्य दिया, वह दूसरे दिन से ही होने लगी थीं। चिकित्सा में ऐसे ही कई प्रसंग आ जाते है। उन पर विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

ऐसे ही एक रुग्णा बार-बार बेहोश होजाती थी। उसपर औषधें, इंजेक्शन, तत्र-मंत्र खूब चले; किन्तु वह ठीक न हुई। इसका मन फलों पर था। जब यह कारण मालूम होगया तो अनार, सन्तरा, सेब आदि के साथ औषध-प्रयोग कराया। गरीब घर की वह महिला ठीक होगई।

इसी प्रकार की पचासों घटनायें रोज होती हैं। सफल-चिकित्सक सावधानी से कारणों का पता लगाकर, यशस्वी बन जाता है। अतः प्रयोगों से अधिक बुद्धि का उपयोग कीजिये।

—महिला-रोगों पर असावधानियां—

भारतीय महिलाओं के रुग्ण होने के दो विशेष-कारण हैं। एक अज्ञान और दूसरा असावधानी। अज्ञान के कारण वे रोगों को जानती नहीं और उनकी उपेक्षा करती रहती हैं। असावधानी के कारण रोग पनपते रहते हैं और वे निर्बल-निस्तेज होती जाती हैं। यहां पर ऐसी ही दो-एक काम की बातें दे रहा हूं, जिन पर महिलाओं को विशेष-रूप से ध्यान रखना चाहिये।

१—निरन्तर गर्भस्राव होना—

कई महिलाओं को १॥ या दो माह में, वर्ष में २-३ बार तक, गर्भस्राव हो जाता है। कइयों को चार-माह बाद गर्भपात भी होजाता है। ऐसे प्रसंगों में, जिससमय गर्भस्राव या गर्भपात होता है, तब वे खूब चिल्लातीं और पेट पकड़कर रोती हैं। किन्तु जैसे ही काम पूरा हुआ,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फिर वही लापरवाही चालू हो जाती है। फलतः वे आजीवन वैद्य-डॉक्टरों की शरणापन्न ही बनी रहती हैं। ऐसे प्रसंगों में महिलाओं और उनके अभिभावकों को कठोर नियंत्रण की आवश्यकता है। ऐसी महिलाओं को आठ से दस दिन तक प्रसूता की स्थिति में रखो। पूरा विश्राम दो और गरम पानी पिलाओ। गुड़, तिल, मैथी आदि गरम पदार्थ ही खाने को दो। दाल-भात, बासा भोजन, गरिष्ठ-आहार प्रभृति से बचाये रहो। ठंडा पानी, बर्फ, कच्चे साग आदि ठंडी चीजें न दो और न फलों को खिलाकर ऊपर से ठंडा पानी ही पिलाओ। फलाहार के पौन-एक घंटे बाद, वही उबाल कर ठंडा किया हुआ पानी पिलाया जा सकता है।

यदि इन बातों की सावधानी न रखी गई तो गर्भाशय बिगड़ जायगा। यदि गर्भाशय में कुछ विकृत-रक्तांश भी शेष रह गया तो और भी अनेकों प्रकार के भयानक रोग हो जांयगे। इसलिये ऊपर-लिखी हिदायत पर पूरा-पूरा ध्यान रखिये। आजकल इन्हीं बातों की लापरवाही के कारण घर-घर चिकित्सकों की भरमार है। इस जरा-सी लापरवाही से अपने कुटुम्ब को रोगाक्रान्त होने से बचाइये।

२—प्राथमिक रजोदर्शन के बाद लापरवाही—

पहिली बार जब किसी किशोरी के अपत्य-मार्ग द्वारा रजःस्राव होता है तो उसे 'रजो-दशन' कहते हैं। यह विभिन्न-विभिन्न प्रकृति के अनुसार, अनिश्चित आयु में, प्रायः १२ वर्ष से लेकर १६ वर्ष की आयु तक भारत में होता है। ठडे देशों में २० वर्ष की आयु तक 'रजोदर्शन' होता हुआ देखा जाता है।

'रजोदर्शन' में भारतीय किशोरियां अजानकारी एवं लज्जा के कारण इस महत्वपूर्ण ज्ञातव्य-नियम से दूर रहती हैं और फलतः आयु भर रुग्णा बनी रहती हैं। प्राथमिक 'रजोदर्शन' होते ही शर्म छोड़कर अपनी माता, मौसी या भाभी को इसका स्पष्ट विवरण दे-देना चाहिये। ताकि वे इस समय के लिये अत्यावश्यक सारी बातें भली-भांति समझादें।

प्रायः स्रावस्थान पर (गुप्त-भाग में) रखने के लिये एक साफ धुला हुआ कपड़ा, बत्ती-सी बनाकर रखना आवश्यक होता है, ताकि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रजरक्त इधर-उधर न छुए और न फैले। दिन में दो-चार तक इस तरह वस्त्र को बदलना चाहिये। पहिले के वस्त्र को निकालकर इधर-उधर न फेंकें, किन्तु उसे जलादें। क्योंकि प्रचलित-पद्धति और विचार के अनुसार ग्रामीणजनता का यह मत बनगया है कि इसपर (प्राथमिक रजोवस्त्र पर) 'टोटका' सफलता से लागू होता है। इस मन के वहम को निकाल देने के लिये इस रज-रक्त युक्त कपड़े का अग्निसंकार कर देना सर्व श्रेष्ठ है। क्योंकि यह रक्त संक्रामक-रोगकर्ता भी है।

'रजोदर्शन' के बाद किशोरी, रजःस्वला की भाँति ही अपनी सारी चर्या करे। ठंडा पानी न पिये, उबला हुआ पानी ही पिये। चार दिन तक स्नान बिलकुल भी न करे। यदि हाथ-पैर धोने हों तो उनपर भी ठंडे पानी का स्पर्श न होने दे, उस समय गरम पानी ही काम में ले। अपने को श्रृंगार, दतौन आदि से पूर्णरूपेण बचावे। आराम से गद्दों पर न सोकर, चटाई पर सोवे। दिन में बिलकुल भी न सोवे, गरिष्ठ आहार न करे। ताजा सुपाच्य आहार भी भरपेट न करके आधा-पेट करे। इन सब बातों पर पूरी-पूरी सावधानी अवश्य रखे। अन्यथा आजीवन रुग्णा ही बनी रहेगी।

इन दिनों दंत मंजन, आंखों का अंजन, श्रृंगार, सौन्दर्य-प्रसाधन, काम में बिलकुल भी नहीं लेने चाहिये। नाचना, गाना, कूदना, हँसना आदि से भी बचना आवश्यक है। ये बातें देखने में मामूली हैं, किन्तु अज्ञानतावश इन्हीं की उपेक्षा से जीवन में रोग-बीज जड़ जमा लेता है। यदि इन बातों की उपेक्षा की जाती है तो कमर दर्द, हाथ-पैरों की जलन, हड़फूटन, सीने (छाती) की कमजोरी आदि लक्षण आजीवन परेशान किये रहते हैं।

वयस्क महिलाओं से—

मासिक के समय महिलाओं की शारीरिक एवं मानसिक स्थितियों में एक विशिष्ट परिवर्तन हो जाता है। अनुभवी-व्यक्ति अच्छे फैशन में लिपटी हुई भी रजःस्वला-महिला को देखते ही बता सकता है कि वह रजःस्वला है। रजःस्वलावस्था में अधिकतर आलस्य, अंगड़ाई,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिड़चिड़ापन आदि बातें विभिन्न-विभिन्न प्रकार से देखने में आती हैं। प्रायः सभी रजःस्वलायें प्रमादग्रस्त होती हैं। यह 'पुष्पितावस्था' कहलाती है। सभी को इस स्थिति में नितंब, पेडू और कमर में भारीपन मालूम देता है। किन्तु श्रमशील महिलाओं की अपेक्षा आराम-तलब महिलाओं में इसकी मात्रा विशेष होती है।

इस विषय पर इस थोड़े से स्थान में विशेष लिखना असम्भव है। विशेष ज्ञान के लिये सन् '५३ की 'आयुर्वेद चिकित्सक' की फाइल देखें। सारांश में प्रत्येक महिला इस रजःस्वलावस्था में संयम-नियम से रहे, अन्यथा उसे रुग्णा होने से संसार की कोई शक्ति नहीं बचा सकती।

नवयुवतियां सावधान रहें—

आजकल 'ठगो के धन्धों' का बाजार तेजी से गर्म है। अतः कतिपय आवश्यक-हिदायतें महिलाओं के लिये दे देना आवश्यक हैं। महिलायें उनपर सावधानी से पूरा ध्यान रखें।

१—किसी भी अपरिचित व्यक्ति से, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, गली-कूचों में, रेलगाड़ी में, देहात के एकांत रास्ते पर, अथवा आमोद-प्रमोद के स्थानों पर कभी मत बोलो और न बात करो।

२—सड़क और गली में अकेली मत घूमो। यदि कोई पुरुष या स्त्री ऐसी स्थिति में बात करने के लिये आ-लपके तो फौरन पुलिसमैन के समीप या जन-समूह में पहुंचो।

३—कोई पुरुष या स्त्री बहाने बाजी से तुम्हारे सामने गिर पड़े, तो पुलिसवाले को पुकारो; अन्यथा तुम्हें लूटा या ठगा जा सकता है।

४—धार्मिक संस्थाओं में कोई भी अपरिचित निमन्त्रण दे तो अकेली हरगिज न जाओ।

५—मोटर, टैक्सी, रिक्शा, तांगा में यदि कोई अपरिचित-व्यक्ति तुम्हें पहुंचा देने की बात कहे तो उसके साथ भूलकर भी न जाओ।

६—यदि कोई मानपत्र, अभिनन्दन-पत्र आदि स्वीकार करने के लिये कहे तो वहां भी अपरिचित के साथ न जाओ। होटल या मनोविनोद के स्थानों पर अकेली न जाओ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

७—अस्पताल की नर्स या अन्य किसी भेष में कोई व्यक्ति तुम से आकर कहे कि 'तुम्हारा फलां व्यक्ति वहां दुर्घटना-ग्रस्त है, घायल है, उसने बुलाया है'—तो वहां मत जाओ या सावधानी से काम लो।

८—रुपया दूना करनेवाले, पति को वश में कराने वाले, पुत्रदाता, कलह-नाशक साधु ज्योतिषियों से बची रहो।

९—ट्रेन में यदि कोई यह खबर दे कि तुम्हारा पति मर गया तो सावधानी से काम लो। एकदम घबड़ाओ मत, हक्की-बक्की न हो।

१०—ट्रेन में, मेले में, एकान्त-स्थान आदि में यदि कोई खाने को मीठा, पान-सुपारी-तमाखू आदि; फल, फूल, पानी, शरबत, चाय आदि दे तो स्वीकार मत करो।

११—इत्र, तेल, फुलेल आदि सुंघाने वाले से अत्यन्त सावधान रहो। बदमाशों द्वारा इन चीजों में विषैला-द्रव्य मिलाकर बेहोश करके नाजायज लाभ उठाने की आशंका रहती है।

१२—अखबार के विज्ञापन या किसी अनजान के कहने पर कहीं की नौकरी स्वीकार मत करो। पूरा-पूरा पता लगालो कि विज्ञापनदाता कहीं उचक्का तो नहीं है।

१३—रात के लिये बाहर न जाओ। कदाचित् जाना ही पड़े तो सुरक्षित स्थान का पता भली-भाँति लगालो। स्कूल और कालेज में पढ़ने वाली नवयुवतियां इस विषय में बहुत ही अधिक सावधान रहें।

१४ – नये संबंधियों के साथ जाना हो तो सावधानी से जाओ और व्यर्थ की लज्जा छोड़कर उन्हें भली-भाँति पहिचाने रहो, ताकि भूल से अन्य किसी के साथ न चली जाओ। कतिपय वैवाहिक-घटनाओं के मजेदार विवरण समाचार-पत्रों में मिलते हैं कि 'पत्नियां बदल गईं' 'बहू अपने पति को ही भूली'–'कुम्हार की लड़की नाई–दूल्हे के साथ' आदि; ऐसे प्रसंगों की आवृत्ति अपने पर न होने दो

१५—सामने कोई रुपया आदि फेंककर चल दे तो मत उठाओ, 'वह ठग इधर तुमने रुपया उठाया, उधर वह तुम्हारी गठरी या ट्रंक या पेटी उठाकर भाग गया' का हाल करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१६—परदेश में व्यर्थ का परदा न करो, अपने सामान की देख-भाल भली-भांति करो। यदि कोई तुम्हारे सामने नंगा खड़ा होकर लज्जित करे तो सावधानी से अपना माल-असबाब देखती रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुमने आंखें मूंदीं और वह सामान उठाकर चंपत हो जाय।

१७—बिलकुल अपढ़ मत रहो। बड़ी उम्र हो जाय तब भी अवश्य पढ़ो। निरक्षर युवतियों की कठिनाइयों का पारावर नहीं है।

इत्यादि बातों पर नव-युवतियों को विशेष-ध्यान रखना चाहिये।

नारी-जीवन पर कतिपय अत्यावश्यक आर्ष-वाक्य—

हमारे ऋषि-महर्षियों ने नारी-जीवन को सुखमय बनाने के लिये जोरदार आवश्यक हिदायतें की हैं। उनके विषय में यहां पर इशारा-मात्र दे रहे हैं। महिलायें इन्हें गांठ में बांध लें।

(१) जो गृह-कार्य में दक्ष है, सन्तान-पालन जानती है, पति को प्रसन्न रखने में निपुणा है, पतिव्रता-सदाचारिणी है; वही श्रेष्ठ पत्नी है। वह अपने कुटुम्ब को प्रसन्न रखकर स्वय प्रसन्न रहती है। पति को आमदनी के अनुसार घर का अच्छे से अच्छा प्रबन्ध करती है।

(२) जो पत्नी पति का कार्य पूरा करने में 'दासी' की भांति तत्पर रहती, रति-संभोग के समय पति को 'वेश्या' की भांति अनुरक्त रखती, भोजन कराते समय बड़े प्रेम और आग्रह से 'माता' की भांति बनाती-परोसती और विपत्ति पड़ने पर योग्य परामर्श देकर 'मंत्री' का कार्य करती है; वह पत्नी कभी दुखी नहीं रहती।

(३) पत्नी एक मिट्टी की पुतली या सजी-बजी गुड़िया मात्र नहीं है, वह अपने पति की सर्वश्रेष्ठ परममित्र है। अपने को दुखी रखकर भी अपने साथी को सदा प्रसन्न रखती है। संसार की संपूर्ण मित्रताओं से बढ़कर उसकी मित्रता होती है। जिसमें मनसा, वाचा और कर्मणा तीनों तरह पूरी-पूरी पवित्रता होती है।

(४) 'भार्या समं नास्ति शरीर-तोषणम्'। पत्नी के बराबर शरीर को तुष्ट रखने वाला संसार में अन्य कोई नहीं है, पत्नी व्यवस्थित रीति से भोजन, प्रियवचन और सेवा द्वारा पति के शरीर का 'तोषण' करती है, वह धन्य है। वह और भी धन्य है जो 'पति-प्राणा' है। जिसका एक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दिन का अभाव भी पति बरदाश्त नहीं कर सकता। यह भोग-दृष्टि से नहीं, अपितु प्रेम-संबंध से है। १०-१५ दिन के लिये ही यदि पत्नी मायके आदि चली जाती है तो पति को सूनापन, अकेलापन और खालीपन खटकने लगता है और वह अपने साथी को शीघ्र ही सन्निकट चाहता है।

(५) योग्य 'रमणी' वह है, जो प्रारंभ से जीवन के अन्तिम क्षण तक अपने पति को सदा ही प्रसन्न रखती है। 'पदे-पदे यन्नवतामुपैति, तदेव रूपं रमणीयतायाः'—का सिद्धान्त प्रत्येक पत्नी को याद रखने योग्य है। पत्नी ऋतु-काल और प्रसंग के अनुसार अपनी वेष-भूषा नवीन तरीकों से परिवर्तित करती हुई 'रमणीय' रहे और पति को प्रसन्न रखे।

(६) पत्नी वह है जो शिक्षिता है, स्वस्थ है, सुन्दर है, स्वच्छता से रहती है, उत्तम भोजन व्यंजन-पकवान आदि बनाना जानती है, जो वस्त्रों की सजावट, परिधानों का रंजन और घर को सजाकर स्वर्ग बनाने के ढंग जानती है। जिसके मन में पवित्रता, प्रेम, भक्ति और उदारता का निवास है। इन गुणों में से जिसकी भी कमी हो, प्रत्येक महिला उसी की पूर्ति में सावधानी से संलग्न रहे।

(७) शास्त्रों में कुलीन-वधू के धर्म ऐसे लिखे हैं कि—

१—पति के बाहर से आने पर जो पति का स्वागत करे।
२—पति से बातचीत करने पर हमेशा नम्रता का पूरा ध्यान रखे।
३—पति के लिये आसन, भोजन और सेज का प्रवन्ध स्वयं करे।
४—पति के सुखदुःख में दूध-पानी की तरह हिलमिल जाय।
५—पति से उदासीन न रहे और पति को अधिक-भोगासक्त न रहने दे।
६—सदा प्रसन्न रहे और विपत्ति में भी धैर्य और पति-संग न छोड़े।
७—मानसिक-पवित्रता रखे। छोटे-छोटे प्रसंगों में अधिक उत्तेजित और क्षुब्ध न हो जाय। सुने अधिक और बोले सिर्फ काम की बात।

(८) पत्नी सिर्फ इसी लोक की ही साथिन नहीं, अपितु परलोक की भी है। धन्य है वह महिला, जिसका पति यह चाहता है कि परभव में भी मुझे इसी का सम्बन्ध प्राप्त हो। पत्नी सिर्फ भोग-पत्नी ही नहीं किन्तु उसके बहुत अधिक धर्म-पत्नी है। 'भार्या मूलं त्रिवर्गस्य'-पत्नी धर्म, अर्थ और काम इन तीनों पुरुषार्थों की मूल कारण है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(६) पति को वश में करने के उपाय मंत्र, तन्त्र, वशीकरण, टोटके आदि हरगिज नहीं हैं। ऐसा करने पर पत्नी में से विश्वास उठ जाता है। पति ऊपर बताई हुई योग्यताओं से ही वश में रह सकता है। पत्नी एक योग्य खूंटा है, जिसपर पतिरूपी उन्मत्त-वृषभ स्वयं आकर प्रेम से बंधता है। इसके आन्तरिक अभिप्राय को हृदयंगम करो।

शेष तृतीय-भाग के 'आद्य-वक्तव्य' में स्पष्ट करेंगे।

— वैद्य पं० चन्द्रशेखर जैन शास्त्री।

—प्रेमी पाठक अवश्य नोट कर लें—

'तत्काल फलप्रद (तृतीय-भाग)' अर्थात् इस पुस्तक का 'उत्तरार्द्ध' प्रेस से छपते ही भेज दिया जायगा। कृपया तब तक धैर्य रखिये। विनीत—वैद्य पं० चन्द्रशेखर जन शास्त्री।

उत्तरप्रदेश, बिहार, पंजाब, मध्यप्रदेश में स्कूलों वाचनालयों के लिये स्वीकृत।

वार्षिक मूल्य—३)
प्रति अङ्क—।–)

शिक्षा-सुधा

सम्पादक—
वीरेन्द्रकुमार B.A. विशारद

(शिक्षा-सम्बन्धी एकमात्र सचित्र मासिक-पत्रिका)

जो १६ वर्ष से मासिक-रूप में पाठकों की सेवा कर रही है; जिसमें स्कूल के अध्यापकों तथा विद्यार्थियों सम्बन्धी :—

❀—परीक्षोपयोगी लेख ❀—जीवन-दाता जीवन
❀—साहित्यिक लेख ❀—कहानियां
❀—विदेशों में शिक्षा ❀—कविताएँ
❀—शिक्षा-सिद्धान्त ❀—जनरल नालिज का प्रश्न-पत्र
❀—स्वास्थ्य तथा कृषि संबंधी लेख ❀—शिक्षा समाचार (भारत के)
❀—अध्यापक समाचार ❀—संसार समाचार ❀—चुटपुट

और इसके अतिरिक्त बच्चों के लिए ८ पेज बालबन्धु के छपते हैं। तुरन्त ही वार्षिक मूल्य तीन रुपया भेजकर ग्राहक बनिये। इस पते पर:—

मैनेजर—"शिक्षा-सुधा" मु०, पो० धनौरा (मुरादाबाद)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तत्काल फलप्रद प्रयोग

(द्वितीय-भाग)

हाँ श्रीमान् जी, आप 'तत्काल फलप्रद-प्रयोग' (प्रथमभाग) की भांति ही चाहते हैं कि दूसरे भाग का पहला प्रयोग भी इतना जोरदार हो, जिसका सानी प्रयोग दूसरा न मिले। यही एक प्रयोग 'सातों भागों' का मूल्य प्रदान करदे। लीजिये, हम भी आपको एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग भेंट करते हैं। इससे दूसरों ने लाखों रुपये कमाये हैं और आप भी उन्हीं की तरह मालामाल बन सकते हैं। प्रयोग की उत्तमता की पूरी गारन्टी है। यह अत्यन्त गुप्त-प्रयोग सेवा में सादर समर्पित है—

(१) शर्तिया पुत्रोत्पादक प्रयोग—

यह प्रयोग उनके लिये है, जिनके हर बार 'कन्या ही कन्या' पैदा होती हैं। लम्बे समय तक प्रतीक्षा रहती है कि इस बार तो अवश्य पुत्र होगा, किन्तु होती कन्या ही है। घरवाले प्रसूता की भी लापरवाही कर दिया करते हैं। फलतः वह अनेकों रोगों का शिकार होकर अन्त में यमराज के घर की राही हो जाती है। ऐसी स्थिति में आपको यह हजारों बार का सुपरीक्षित प्रयोग भेंट किया जा रहा है। अवश्य ही बेधड़क काम में लाइये। प्रयोग इस प्रकार है—

मयूरचन्द्रस्य गुड़ेन मध्यं, तृतीय-मासे वटिकां विनीय।
याश्नाति योषित्पयसा प्रभाते, सुतं हि सूते न कदापि कन्याम्॥

—यह एक शास्त्रीय-प्रयोग है। विभिन्न-विभिन्न आयुर्वेदीय-पत्रों में लोगों ने इसे अपना आविष्कार घोषित करके प्रगट किया है। वास्तव में है अनुपम-प्रयोग, अपना सानी नहीं रखता। मान्य वैद्यराज वैषम्पायन जी से मुझे सन् ३६ में प्राप्त हुआ था। इसी प्रयोग ने उनकी ख्याति में चार-चांद लगा दिये थे। हांसी जैसे शहर में प्रतिवर्ष ३-४ ऐसी चिकित्सायें करके वे पूर्ण सफल होते थे। वहां मात्र इसी योग से तीन-हजार रुपयों के साथ-साथ वे नाम भी कमा लेते थे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इस शास्त्रीय-प्रयोग की वास्तविक स्थिति, सर्वसाधारण के समक्ष में आने योग्य शब्दों द्वारा पूरी तरह स्पष्ट कर रहा हूं। छिपाने योग्य इसमें कुछ भी नहीं रखा गया।

उक्त शास्त्रीय-श्लोक का अर्थ इस प्रकार है—

मयूरचन्द्र (मोर के चांद) की गुड़ के साथ गोली बनाकर जो महिला तीसरे-माह में सेवन करती है, वह कन्या का प्रसव कदापि नहीं करती, शर्तिया पुत्र ही उत्पन्न करती है। —यह अर्थ इशारे में है, जिसे प्रत्येक वैद्य तो सरलता से जान सकता है, किन्तु आम जनता इसे नहीं जान सकती।

इसका पूरा स्पष्टीकरण इस प्रकार है—

मोर के पंख ले लो। उनका ऊपरी किनारे वाला चमकदार हिस्सा, जो गोल-गोल-सा होता है, उसे काटकर रखलो। फिर उसके आस-पास का नीले-गोल दायरे का ऊपर वाला भाग भी कैंची से काटकर बाहर फेंक दो। अब इस नीले-रंग के खूब चमकदार गोल भाग को कैंची से बारीक-बारीक काट लो। याद रखो, इतना बारीक काटो कि जितना भी बारीक हो सके। फिर एक माशे या डेढ़ माशे गुड़ में इसकी गोली बनालो। यह एक गोली बनी। ऐसी ही तीन-गोलियां बनाकर तैयार रखो। बस, औषध तैयार हो गई।

महिलाओं में जब यह निश्चय हो जाय कि यह निश्चित गर्भिणी है, और इस स्थिति को हुए लगभग दो-माह पूरे हो रहे हैं, तीसरा माह शुरू होने वाला है। ऐसी स्थिति में प्रातः गर्भिणी को शौचादि से निवृत्त कराकर, निराहार एक गोली निगला दो और ऊपर से धारोष्ण गोदुग्ध दो। इस प्रकार प्रतिदिन प्रातः-काल १-१ गोली ताजे दूध से निगलवाओ, बाद में फिर इसप्रयोग की आवश्यकता नहीं है। बस, तीन गोलियों में ही काम हो जायगा।

कई महिलाओं को ये गोलियां बड़ी अप्रिय लगती हैं। आंखें मून्द के खिलाने पर भी उन्हें वमन हो जाता है और गोली बाहर आ जाती है। ऐसी स्थिति में 'कैपसूल' में रखकर एकमात्र 'मयूरचन्द्र' बिना गुड़

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मिलाये, बारीक कतरा हुआ दें। इसे निगलवा कर ऊपर से दूध दे दें। वमन आदि कुछ न होगा और काम बन जायगा।

इस प्रयोग को किस कठिनाई से प्राप्त किया गया, इसका इतिहास एक पूरा पोथा है। पाठक विश्वास रखें कि यह प्रयोग अपना सानी नहीं रखता। यह आयुर्वेदिक चामत्कारिक प्रयोग है। धर्मशास्त्र, कर्म-सिद्धान्त, ईश्वर की मरजी आदि का विवेचन यहां नहीं चलता, यहां तो 'अचिन्त्यो हि मणिमंत्रौषधानां प्रभावः' ही ध्यान रखने योग्य है।

हजार रुपये देकर भी आपको जो प्रयोग पूरी विधि-युक्त नहीं मिलता, वह पूरी तरह स्पष्ट खोलकर समझा दिया है। अवश्य प्रयोग करिये। सुपरीक्षित है।

('गर्भस्थापक' अत्युत्तम योग इस पुस्तक के उत्तरार्द्ध में देंगे)

(२) चार-दिन में हिस्टेरिया का शर्तिया इलाज—

यह प्रयोग भी गजब का है। सस्ता भी इतना है कि आप देख कर आश्चर्य में रह जांयगे। यह प्रयोग प्रथमभाग पृ. ८२ की सूचनानुसार पूरीतरह स्पष्ट दिया जा रहा है। प्रयोग इसप्रकार है—

खुरासानी बच एक तोला।

—यह एक जाति की बच है। खाने में जरा तेज लगती है। अत्तारों-पंसारियों के यहां खुरासानी-बच के नाम से मिल जाती है। भाव प्रायः २) से २।।) सेर तक रहता है। जैसा माल हो और जो बाजार-भाव हो। इसे एक तोला लेकर खूब बारीक कूट डालें और बारीक कपड़छन कर लें। याद रखें कि इसे तीन बार कपड़छन करना चाहिये। एक बार कपड़े में छानकर फिर दुबारा और फिर तिबारा छानना चाहिये। बस, औषध तैयार है।

इसकी मात्रा अवस्थानुसार एक से दो-रत्ती तक है। दिन में चार-बार दें। दवा को बढ़िया घी में मिलाकर चटा दें या वैसे ही फँका दें। मलाई या घी में चटाना बहुत ही अच्छा है। बाद में रुग्णा को बढ़िया दूध की खीर खिलावें। दूध-रोटी भी दिया जा सकता है। सारांश यह कि दुग्धाहार या दुग्धयुक्त आहार ही देना चाहिये। बाद

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में आवश्यकतानुसार सेव-सन्तरा-अंगूर आदि फल भी दिये जा सकते हैं। इस प्रकार यह प्रयोग लगातार चार दिन अवश्य करना चाहिये।

आप निश्चितरूप से देखेंगे कि फिटों की संख्या कम हो गई है। दिन में जो दस-दस, १५-१५ बार फिट आते थे, अब घटकर दो-तीन रह गये हैं। इससे आगे वे स्वयमेव लगातार कम होते जांयगे। बाद में भी आवश्यकतानुसार ३-४ दिन के अन्तर से फिर भी इसका प्रयोग इसी प्रकार किया जा सकता है। अत्यन्त सस्ता, निरापद एवं सुपरीक्षित प्रयोग है। अवसर पर बेधड़क काम में लाइये।

(३) गर्भिणी के योषापस्मार (हिस्टेरिया) पर—

योषापस्मार (हिस्टेरिया) के अनेकों भेद हैं। इन सब पर विवेचन करने से बड़ा भारी पोथा बन जायगा। पुस्तक के प्रारम्भ में इस विषय पर कुछ आवश्यक नोट, हिदायतें आदि दिये गये हैं, वहां से देखिये। गर्भिणी-हिस्टेरिया पर आवश्यक चिकित्साविधि यहां पर दी जारही है।

जिन महिलाओं में गर्भपूर्व यह रोग होता है, तभी इसकी गर्भावस्था में भी संभावना होती है। प्रायः गर्भिणियों में यह रोग नहीं होता। जो महिलायें अधिक कामातुर रहती हैं और गर्भ के कारण अपनी वासना-पूर्ति नहीं कर पातीं, उनमें यह रोग सम्भव है। कभी-कभी इस हिस्टेरिया के दौरे में गर्भिणी को घबराहट एवं श्वास दोनों बढ़ने लगते हैं, आवाज रुंध जाती है, रुग्णा अस्थिर चित्त होकर चित्त पड़ी रहती है। कभी-कभी विशेष झटके भी आने लगते हैं। ऐसी स्थिति में नं० २ वाले प्रयोग को स्वर्णयुक्त औषधों के साथ प्रयुक्त करें। स्वर्ण सूतशेखर, स्वर्णभस्म या सोने के उत्तम वर्क, सारस्वतारिष्ट, द्राक्षासव आदि के साथ वच का प्रयोग बड़ा लाभदायक पाया गया है।

ऐसे समय में रुग्णा को विशुद्ध वंशलोचन २-२ रत्ती की मात्रा में दिन में ५-६ बार देना चाहिये और ऊपर से धारोष्ण या उत्तम उबला हुआ गोदुग्ध देना चाहिये।

ऐसी रुग्णाओं के फिट फलाहार और दुग्धाहार से सरलता से ठीक हो जाते हैं। गर्भिणी को जहां तक सम्भव हो मानसिक-चिन्ता या वेदना से ग्रस्त नहीं होने देना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(४) गर्भिणी को नवमें महीने में होनेवाले हिस्टेरिया पर—

कई महिलायें इस रोग से गर्भ के नवें माह में ग्रस्त होती हैं। घरवाले घबड़ा जाते हैं और उधर के झाड़फूक वालों को टटोलते हैं। किन्तु यह झाड़फूक ऐसी स्थिति में कुछ भी काम नहीं देती, इससे उलटी हानि की सम्भावना ही रहती है।

ऐसी स्थिति में ब्राह्मी और बच का प्रयोग दूध के साथ करना चाहिये। मेरा अनुभव है कि प्रायः प्रसव के पश्चात् यह बीमारी स्वयं चली जाती है। गर्भिणी को ऐसे समय अन्याहार की अपेक्षा दूध पर ही अधिक रखें। निश्चित रहें, यह हिस्टेरिया प्रसव के बाद बिना औषधों के ही गायब हो जाता है।

(५) गर्भस्थापक एवं गर्भाशय विकार-नाशक अनुपम-प्रयोग—

यह प्रयोग अनेकों देहाती-महिलाओं पर परीक्षित है। ये मासिक-धर्म से खुलकर नहीं होती थीं। खिलाने की अनेक औषधें खिलाई जा चुकी थीं, किन्तु लाभ न हुआ। यह प्रयोग देहात से ही मिला और वहीं अधिकतर प्रयुक्त हुआ। इस प्रयोग में सावधानी की बहुत बड़ी आवश्यकता होती है। इसलिये प्रयोग की निर्माणविधि एवं प्रयोगविधि खूब समझकर इसका प्रयोग करना चाहिये।

गर्भस्थापक-वर्ति का प्रयोग इस प्रकार है—

देवदाली (बंदाल) का फल (इसका ऊपर का छिलका अलग कर दें, किन्तु भीतर की जाली और बीज काम में लें) एक तोला।
महुए के बीजों की मज्जा (गिरी) दो-तोला।
एलवा (बढ़िया) ६ माशे। नये इन्द्रजौ (कड़वे) ६ माशे।
अरण्ड (अन्डी) के बीजों की गिरी ६ माशे। सूखा बैरोजा ६ माशे।

—इन सब को बारीक कूट-पीसकर कपड़छन करलो। बाद में पांच तोला पुराना गुड़ लेकर इतना मिलाओ कि बत्ती बनने लायक हो जाय। बरसात में तो यह काम सरलता से हो जाता है, किन्तु उस समय औषध बनाई नहीं जाती। अन्य ऋतुओं में बनाते समय गुड़ भी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कूट डालिये और फिर उक्त बारीक चूर्ण में खूब मिला लीजिये। इसे एक चौड़े मुंह की शीशी में रख लीजिये।

इसके बाद इस औषध के १० हिस्से करिये। दूसरी ओर बांस की बारीक-बारीक १० सींकें १॥-२ अंगुल लम्बी बनवाइये। इस प्रत्येक सींक के सिरे पर मजबूत किन्तु पतला धागा बांधिये, जो बँधने के बाद एक बिलस्त से कुछ अधिक ही लटका रहे।

अब एक हिस्से दवा को लेकर 'अर्क सौंफ' या ताजे पानी से गीला करले। याद रखे २-२ बून्द ही अर्क-सौंफ या पानी डाले। ज्यों-ज्यों मिलता जाय, त्यों-त्यों और मिलाते जाइये। ध्यान रहे कि बहुत पतला न हो जाय। फिर इसे 'बांस की सींक' पर लगा दीजिये। धागा बाहर रहे, उस पर औषध नहीं लगाना है। ऐसे दसों सींकों पर दवा को गीली करके लगा लीजिये। बाद में धागों को खूंटी पर लपेट कर, छाया में इस बत्ती को सुखा लीजिये। ध्यान रहे बत्ती ऐसी बनाइये कि आगे की ओर पतली रहे और पीछे की ओर मोटी। प्रायः बड़ी हरड़ जैसे आकार की बत्ती बनानी चाहिये।

जब ये बत्तियां छाया में रखी हुईं बिलकुल सूख जांय तो धागा खोलकर एक ओर रखे। एक कांच के बरतन में एक माशा केशर और एक माशा कस्तूरी पानी में पतली घोंट-घोलकर रखें। वह घोल इन दसों बत्तियों पर चुपड़ दें और सुखा लें। फिर एक चौड़े मुंह की शीशी में ये दसों बत्तियां ढक्कन लगाकर रखें। ये 'बत्ती' तैयार हो गईं।

इस बत्ती की प्रयोग-विधि—

जब मासिक का प्रथम दिन हो, उस दिन इस प्रयोग को करें। पहिले रुग्णा को लिटाइये। सिर का भाग नीचा और पैरों का भाग ऊंचा रहे, इस प्रकार सीधी चित्त लिटावे। चतुर दाई इस बत्ती को रखे। बत्ती को रखने के पूर्व, दाई इस बत्ती को मधु (उत्तम शहद) से अवश्य तर करले, ताकि रखने में कठिनाई न हो। बत्ती का पतला हिस्सा आगे रखे और मोटा हिस्सा पीछे, ताकि बत्ती गर्भाशय-मुख में प्रविष्ट हो सके। इस उपाय से उन स्त्रियों को भी मासिक खुलकर आने लगेगा, जिन्हें अनेकों औषधें खिलाने पर भी मासिक खुलकर नहीं आया।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कतिपय परिस्थितियां बहुत तेज होती हैं। कई महिलायें शरीर से अच्छी शक्तियुक्त होती हैं, फिर भी उन्हें मासिक नाममात्र होता है। उन पर इस औषध का प्रयोग करिये। इससे पहले दिन ही हैज अच्छी तरह जारी हो जाता है। यदि इतने से जारी न हो तो दूसरे दिन दूसरी-बत्ती को हुक्के के पानी से तर करके योनि में रखें। अवश्य हैज जारी हो जायगा।

इस वर्तिका के प्रयोगमें अवश्य ध्यान रखनेयोग्य बातें—

१—यह प्रयोग ग्रामीण एवं बलिष्ठ महिलाओं के लिये है। सुकुमारी, दुबली-पतली, रक्तहीन महिलाओं को यह न दें।

२—बत्ती में धागा इसलिये लगा रहता है कि चाहे जब बत्ती खींचकर निकाली जासके। इस बत्ती को लगाने से कभी-कभी बड़ा कष्ट होता है, रुग्णा बत्ती निकाल देना चाहती है, किन्तु इसे कुछ देर अवश्य रखना चाहिये। यदि लत्ती पर मधु अच्छी तरह लगा दिया जाय तो फिर उतना कष्ट भी नहीं होता।

३—इसे तीन घन्टे तक योनि में रखना चाहिये। इस समय तक रुग्णा सीधी-चित्त लेटी रहे। फिर निकाल दें। यह बत्ती सूजन कर देती है। दाई जब बत्ती निकाल ले तो बाद में अन्दर तक घी अवश्य चुपड़ दे। यदि सूजन अधिक प्रतीत हो तो हरी मकोय मँगाकर पीसकर बाहर लेप करदे। सूजन मिट जायगी।

४—इस बत्ती को माह में एक बार ही प्रयुक्त करना चाहिये। बलिष्ठ एवं सहनशील रुग्णा दो-बार भी यह कर सकती है।

५—बत्ती निकाल कर उस स्थान को भली-भांति साफ करले, पोंछले; फिर घी आदि लगावे। बाद में रुग्णा लेटी न रहे, बैठ जाय।

इस बत्ती के प्रयोग से होने वाले विशेष लाभ—

१—इससे बन्द हुआ मासिक-रक्त अच्छीतरह खुलकर आता है।
२—फूल (गर्भाशय) के भीतर का जहरीला-पानी निकल जाताहै।
३—प्रयोग करने के अगले माह में गर्भ अवश्य रहता है।
४—गर्भाशय-शोथ प्रभृति अन्यान्य विकार भी ठीक हो जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रत्येक चिकित्सक इस प्रयोग को सावधानी से काम में ले। तत्काल फलप्रद है। समय पर अच्छा काम दिखाता है। अनेकों ऐसी रुग्णाओं पर सुपरीक्षित है। परिस्थिति एवं बलाबल देखले।

(६) अफीम छुड़ा देनेवाला कारगर प्रयोग—

मारवाड़ में अनेकों महिलायें अफीम का प्रयोग करती हैं। कई तो इसे बुढ़ापे का सहारा मानती हैं। अफीम के अभाव में उन्हें बड़ी परेशानी होती है, तब वे चिल्लाती हैं कि किसी प्रकार हमारा यह दुर्व्यसन छूट जाय। पुरुषों में भी बहुत से इस बला से छूटने के लिये प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसों के लिये मैं एक अत्युत्तम अनुभूत प्रयोग भेंट कर रहा हूं। पाठक आवश्यकता पर इससे अवश्य लाभ उठावें।

अफीम छुड़ाने वाला प्रयोग इसप्रकार है—

धतूरे का पंचाग, जो जाड़ों में सुविधा से प्राप्त हो जाता है, लीजिये। याद रखें धतूरे को मय-जड़ के उखाड़कर इसके पत्ते, फल, फूल, डाल, जड़ों को ५ सेर लेकर जौकुट करके दस गुने पानी में भिगो दो। दूसरी ओर आधा सेर काली-चिकनी दक्षिणी-सुपारी भी पीसकर दस गुने पानी में भिगो दीजिये। इन दोनों को ४८ घन्टे पानी में खूब भीगने दीजिये। बाद में अलग-अलग आगपर चढ़ाइये। चौथाई पानी शेष रहने पर मल-छान लीजिये।

फिर इन दोनों काढ़ों को इकट्ठा करके एक कढ़ाई में डाल दीजिये। नीचे मंदाग्नि जलाकर गाढ़ा कीजिये। गाढ़ा होते-होते अफीम के रंग का गाढ़ा जमा हुआ-सा द्रव्य तैयार हो जायगा। इसे मामूली-सा गीला रहने पर आग पर से उतार लें। फिर खुरचकर दो-दो या एक-एक रत्ती की गोलियां बना डालें। इन गोलियों का रंग, गंध अफीम से मिलता-जुलता होजाता है, किन्तु स्वाद में अन्तर रहता है। बस, यह औषध तैयार हो गई।

इस तैयार औषध को एक डाटदार उत्तम शीशी में रख लीजिये। जो बहिनें अफीम से छुटकारा पाना चाहती हों वे इन गोलियों का सेवन करें। यदि चार-रत्ती अफीम का प्रतिदिन प्रयोग करती हों तो

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एक-डेढ़रत्ती की गोली खावें। प्रतिसप्ताह थोड़ी-थोड़ी मात्रा कम करती हुई चली जांय। इससे अफीम के समकक्ष (बराबर) नशा होगा और धीरे-धीरे कम करते हुए फिर नशा करने की आदत बिलकुल ही छूट जायगी। सुपरीक्षित है।

यह बहुत ही उत्तम प्रभावक योग है। इन गोलियों के सेवनकाल में पर्याप्त मात्रा में घी-दूध दें। अन्यथा सिर के विकार,भ्रम आदि लक्षण होकर बड़ी हानि होगी।

(७) मरे हुए बच्चे को गर्भ से निकालना—

प्राप्त हुए अन्यान्य प्रयोगों से यह प्रयोग अधिक सस्ता एवं प्रभावक है। ओंगा, आधाझारा,चिरचिटा,अद्धाझारा, आंधी, बकजीरा आदि अनेकों नाम वाले इस पौधे से अनेकों व्यक्ति परिचित हैं। प्रायः देहात में रहने वाले सभी व्यक्ति इससे सुपरिचित हैं। यही पौधा इस भयानक-रोग को सरलता में परिणत कर देता है।

प्रयोग का विवरण इसप्रकार है—

यदि बच्चा पेट में मर जाय और चीराफाड़ी करके मरे बच्चे को निकालने वाला डाक्टर मौजूद न हो तो ऐसी स्थिति में नीचे लिखे प्रयोग को बेधड़क शीघ्र ही काम में लें, देर करने पर मरे हुए बच्चे का ज़हर माता में चढ़ जायगा और फिर उसकी भी मृत्यु का खतरा हो जायगा। यदि डाक्टर मौजूद भी हो, फिर भी आप इतना झंझट क्यों पसन्द करते हैं? यह सरल एवं निरापद उपाय क्यों न काम में लायें?

आधाझारा को पूरी जड़ समेत उखाड़िये। फिर जड़ को मामूली-सा साफ करके उसे ४-५ अंगुल की लम्बाई में काट लीजिये। इसके एक सिरे पर मजबूत धागा बांधिये। अब इस जड को योनि में रख दीजिये। डोरे (धागे) वाला भाग नीचे रहे और डोरा योनि से बाहर लटका रहे। चन्द मिनटों में बच्चा बाहर आ जायगा। जब बच्चा निकल आवे, धागे को खींचकर लकड़ी फौरन बाहर निकाल लो और घर के बाहर दूर फेंक आओ। बड़ा बढ़िया रामबाण योग है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इस उपाय से अनेकों महिलाओं की जान बचाई जा चुकी है। मुफ्त में सर्वत्र मिलनेवाला यह देहाती-प्रयोग, डाक्टर नामधारियों के कान काटता है। बड़ा ही जोरदार और उत्तम प्रयोग है। अवसर पर काम में लीजिये। आवश्यकतानुसार इस जड़ को पहिले से भी तैयार रखा जा सकता है। किन्तु ताजी जड़ तत्काल फलप्रद है।

(८) कब्जनाशक—'जादू की सौंफ'—

लीजिये, आपकी सेवा में एक बहुत बढ़िया लाजवाब कब्जनाशक प्रयोग भेंट कर रहा हूँ। हजारों रोगियों पर सुपरीक्षित है। अवश्य काम में लाइये। वह उत्तम प्रयोग इस प्रकार है—

जमालगोटा एक छटांक लाकर रखिये। एक गमले में खेत की खाद-युक्त मिट्टी दस-सेर भरिये। उसी में ये एक छटांक जमालगोटे के बीज बो दीजिये। प्रतिदिन उनपर थोढ़ा-थोड़ा पानी भी अवश्य छिड़कते रहना चाहिये। तीन दिन बाद वे बीज गमले में से निकाल लीजिये और छिलका अलग करके, बीच से उन्हें दो फांक कर, बीच वाला पत्ता भी निकाल दीजिये। इसके बाद इन्हें सिल पर बारीक पीस डालिये।

दूसरी ओर पांच सेर बढ़िया दूध लेकर उसमें ये बीज घोल दीजिये। फिर उसमें जामन देकर दही जमा दीजिये और अठारह घन्टे बाद उस दही को मथकर घी निकाल लीजिये।

इस घी को कांच की प्याली में रखिये और उसमें आधा-पाव साफ की हुई अच्छी बड़ी सौंफ डाल दीजिये। फिर इसे तेज धूप में रखिये। सौंफ सारा घी पी जायगी। दूसरे दिन एक बार और धूप में रखिये, ताकि घृत भली-भांति प्रविष्ट हो जाय। घी सूख जाने पर इसे साफ शीशी में भर लीजिये। बस, यही 'जादू की सौंफ' है।

आवश्यकता पर दो-दाने सौंफ पान में रखकर दीजिये। आराम से बिना कष्ट हुए एक उत्तम विरेचन हो जायगा। क्रूरकोष्ठवालों के लिये मात्रा अधिक कर लें। महिलाओं के लिये यह प्रयोग निरापद है। हजारों पुरुषों एवं महिलाओं की कब्ज पर सुपरीक्षित है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भयानक प्रदरों से तीन-दिन में छुटकारा—

महिलाओं में प्रदर सर्वाधिक होता है। इससे कई तो बिलकुल खोखली हो जाती हैं। हड़फूटन, कमर में दर्द, सिर-दर्द, सीने में दर्द, आलस्य, अंग टूटना प्रभृति अनेकों लक्षण उनमें हो जाते हैं। यदि सावधानी से चिकित्सा न की जाय तो, धीरे-धीरे रोग बढ़ता हुआ, बढ़ी हुई अग्नि का-सा व्यापकरूप धारण कर लेता है, तब बड़ी परेशानी होती है। इसलिये इस पर पूरा ध्यान रखना चाहिये। कीमती चिकित्सायें तो बहुत हैं, किन्तु सरल-पद्धति से इस रोग को भगा देने वाली यह अनुभूत-पद्धति है। पाठकों के समक्ष पूरी प्रगट की जारही है।

(९) सर्व-प्रदरों में 'खाने की औषध' यह है—

'अशोक वृक्ष' की भीतरी छाल लेकर छाया में सुखा लो और फिर उसका बारीक चूर्ण कर डालो। अब उत्तम गोदुग्ध डेढ़-पाव लो और उसमें २ तोला उक्त चूर्ण डालकर मंदाग्नि से पकाओ। जब पावभर दूध रह जाय तो २॥ तोला, मिश्री पीसकर मिला दो और नीचे उतार लो। बस, इसे ठंडा करके चम्मच से धीरे-धीरे खाओ। प्रतिदिन प्रातः-सायं दोनोंसमय यह उपाय तीन दिन तक करो। प्रदर ठीक हो जायगा।

गरमी के दिन हों और गरमी के कारण प्रदर हो तो अशोक की भीतरी छाल चार तोला लेकर जौकुट करके, डेढ़-पाव पानी में, मिट्टी के बरतन में शाम को भिगो दो। प्रातः मल-छानकर धारोष्ण गोदुग्ध पावभर और मिश्री २॥ तोला मिलाकर पियो। प्रातः फिर इसी तरह अशोक-छाल भिगो दो और शाम को मल-छानकर ताजे दुहे हुए गोदुग्ध में मिला, मिश्री डालकर पियो। यह उपाय अत्यार्तव, रक्तप्रदर में बड़ा अच्छा है। यदि जाड़ों में यह प्रयोग करें तो उस समय काढ़ा बनाकर (पानी में औषध उबाल कर) और दूध-मिश्री मिलाकर पियें।

यदि ताजी छाल न मिले तो कहीं से भी सूखी छाल लेकर फिर उक्त तरीके से प्रयोग में लें। अशोक-छाल सर्वत्र मिलती है और चाहे जो अत्तार-पंसारी इसे बेचता है। इस प्रयोग से भीतरी विकार मिटकर रक्त, श्वेत, पीत, कृष्ण आदि अनेक-रंगों वाले प्रदर ठीक हो जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१०) प्रदर-रोग में 'बांधने की औषध' इसप्रकार है—

प्रदर-रोग में महिलाओं का पेड़ू प्रायः अत्यन्त कठिन हो जाता है। दर्द, सूजन आदि भी उधर पाया जाता है। इसे ठीक करना अत्यावश्यक है। इस पर स्वानुभूत सुपरीक्षित यह उपाय आपको भेंट कर रहा हूँ। प्रयोग इस प्रकार है—

बड़ के नये-नये पत्ते लीजिये। उन्हें अच्छी तरह साफ करके, उनपर रेंडी (अन्डी) का तेल (Caster oil) चुपड़ दीजिये। फिर उन्हें कंडे की आग दिखाकर गर्म कर लीजिये, या कंडों पर रखकर सेक लीजिये। कंडे न हों तो तवा गरम करके और उस पर पत्ते रखकर वे सेके जा सकते हैं। इन सुहाते-सुहाते गरम पत्तों को पेड़ू पर बांध दीजिये। यह प्रयोग शाम को या रात को सोते समय करना चाहिये। पेड़ू की फूलन, दर्द आदि दूर करने में सस्ता अव्यर्थ योग है। अकेला ही काफी काम करता है। कई बार अन्य पतले लेप भी पेड़ू पर करने पड़ते हैं, किन्तु उनपर भी ऊपर से नये बट-पत्र अंडी-तेल चुपड़कर बांधे जाते हैं। एकमात्र यह ही पर्याप्त होता है। सर्वत्र सुलभ इस प्रयोग को चाहे जब उपयोग में लेसकते हैं। इसके तीन दिन के प्रयोग से प्रदर एवं पेड़ू-विकार ठीक हो जाते हैं। रक्तप्रदर एवं अत्यातव की तेजी में यह प्रयोग न करें; करें भी तो सावधान रहें।

खाने के प्रयोग के साथ-साथ यह 'बांधने का प्रयोग' भी अवश्य करें।

(११) प्रदर-रोग नाशक 'पोटली' का प्रयोग इसप्रकार है—

छोटी-छोटी काली-काली दो-हरें लो और उनका बारीक कपड़छन चूर्ण करलो। इसे कपड़े की, साफ धुली हुई, छोटी-सी पोटली में रखो; उसी में २-३ दाने चने भी रखदो और पोटली को बांध लो। ध्यान रहे कि पोटली का कपड़ा बिलकुल साफ, अच्छा स्वयं के हाथ का धुला चाहिये, धोबी का धुला भी न हो।

इस पोटली को रात में सोते समय सावधानी से भग (योनि) में रखें। प्रातः सारे विकार पोटली में केन्द्रित हो जांयगे, तब इस पोटली को निकालकर फेंक दें। प्रदर-विकारों को दूर करने में यह सर्वोपरि है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सस्ता होते हुए भी निरापद, तत्काल-फलप्रद एवं प्रभावक है। इस पोटली का प्रयोग भी उक्त दोनों औषधों के साथ-साथ तीन दिन तक करना चाहिये। हजारों रुग्णाओं पर सुपरीक्षित है।

आराम होने के बाद रुग्णा का आहार-विहार पूरी तरह व्यवस्थित रखना चाहिये। इस विषय के आवश्यक निर्देश इसी पुस्तक में अथवा इसके उत्तरार्द्ध में देंगे। वहां से ध्यानपूर्वक समझ लें।

गर्भाशय की गांठ और उस पर अनुभूत-चिकित्साक्रम—

कई महिलाओं के पेट में विशेष दर्द रहता है। मासिक के समय भी कष्ट हुआ करता है। अंगुली से अन्दर टटोलने पर गर्भाशय के नजदीक कुछ कड़ा-सा भाग प्रतीत होता है। जनाने अस्पतालमें दिखाने पर बताया जाता है कि गर्भाशय पर अनावश्यक मांस-चर्वी बढ़ गये हैं, आपरेशन (चीर-फाड़) करके उसे निकाला जायगा। फिर पतिदेव के हस्ताक्षर हास्पिटल लेता है और रुग्णा को बेहोश करके छोटा-आपरेशन कर दिया जाता है। प्रायः जनाने नामवर अस्पतालों का यही क्रम है।

यह बीमारी प्रायः सभी युवतियों में संभव मानी जाती है। चाहे वे अब तक गर्भिणी हुई हों अथवा न हुई हों। ५-५ बच्चे वाली महिलाओं का भी ऐसा आपरेशन स्थानीय जनाने अस्पताल में होता रहता है। किन्तु इतने बवंडर में न पड़कर नीचे लिखे क्रम से चिकित्सा करने में पर्याप्त सुविधा रहेगी। जहां अस्पतालों में एक-एक महिला को जीवनभर में ३-३ या ४-४ आपरेशन कराने पड़ते हैं, मात्र एक ही आपरेशन से छुटकारा नहीं मिलता, वहां यह प्रयोग स्थायी लाभ बताता है। फिर यह सुगम भी है, चाहे जब किया जा सकता है। अतः इसका ही प्रयोग करना ठीक है।

(१२) गर्भाशय की सूजन में खाने-पीने की औषधें—

इसरोग में प्रायः निम्नलिखित शास्त्रीय प्रयोगों में से आवश्यकतानुसार सभी या कतिपय प्रयोगों को करना चाहिये। तारामन्डूर दशमूलारिष्ट, कुमारी आसव, अशोकारिष्ट प्रभृति इनमें उत्तम हैं। जहां पर ये प्रयोग संभव न हों, वहां पर निम्नलिखित योग दें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ताजे गोमूत्र को लेकर उसे आग पर रखो। नीचे धीमी-धीमी आग जलाओ। जब सेर भर गोमूत्र जलते-जलते पावभर रह जाय तो उसमें दो-तोला मन्डूरभस्म डाल दो। यदि यह भी न मिले तो कोई चिन्ता नहीं, वैसे ही उतारकर आप उसमें निम्नलिखित चूर्ण मिलालें।

पीपल, चित्रकमूल (चितावर की जड़), दंतीमूल, कुटकी, पीपलामूल, स्याहजीरा और अजवायन इन सबको ६-६ माशे लेकर बारीक कपड़छन चूर्ण बनालो और इस चूर्ण को डालदो। सम्भव हो तो दो-तोला मन्डूरभस्म भी मिला लेना। अब इसे मन्दाग्नि से आग पर पकने दो। जब आधा-पाव ही गोमूत्र शेष रह जाय तो इसे उतार लो और फिर एक खरल में डालकर खूब घोंटो। इतना घोंटो कि गोली बनाने योग्य हो जाय। फिर १-१ माशे की गोलियां बनालो।

प्रातः एक गोली गरम पानी से दो। सम्भव हो तो गोमूत्र से दो। प्रातः कालीन नाश्ते के बाद दशमूलारिष्ट पिलाओ अथवा दशमूल-क्वाथ थोड़ा-सा दो। भोजन के बाद कुमारी-आसव दो। शाम को भोजन के पहिले उक्त गोली फिर दो। भोजन के २ घन्टे अनन्तर अशोकारिष्ट दो।

इस तरह खाने-पीने की औषधों का प्रयोग करने से रोग भीतर से नहीं बढ़ने पाता। फिर नीचे लिखा हुआ भाफ का प्रयोग करो।

(१३) गर्भाशय-शोथ पर भाफ की औषध—

आंवला चार तोला। सम्हालू की पत्ती और छाल २ २ तोला। आक के पत्ते तीन माशे। फिटकरी एक माशे। मेथी दो-माशे। हरड़ बहेड़ा नीम की छाल वकायन की छाल वकायन की पत्ती एरण्ड (अण्डी) की जड़ जंगली तुलसी दारुहल्दी अशोक पत्र — प्रत्येक एक-एक तोला।

—इन तमाम चीजों को पहिले 'जौकुट' करलो (मोटी-मोटी कूट डालो) फिर एक सुराही में भर दो और ऊपर से डेढ़-सेर पानी डाल दो। यह काम रात को ही कर लेना चाहिये। प्रातः-काल इसका प्रयोग किया जाता है। प्रयोग-विधि इस प्रकार है—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विना धुएँ वाले कोयलों को जलाओ और उसपर सुराही रखदो। ध्यान रहे कि आग बहुत तेज न रहे। प्रायः मंदाग्नि से यह काम करना बहुत अच्छा रहता है। दस-पन्द्रह मिनिट में जब सुराही का पानी खूब उबलने-सा लगे, उसमें से अच्छी तरह भाफ निकलने लगे, तो रुग्णा को एक छेददार कुर्सी, यदि वह न हो तो बिनी हुई चारपाई पर बैठादो। प्रायः कुरसी से विशेष-सुविधा रहती है, अतः बेंत की बुनी हुई कुरसी का उपयोग करें।

इसके बाद रुग्णा नीचे-से कपड़ा हटा दे। चारपाई पर बैठे तो उकड़ू आसन से बैठे ताकि भाफ योनि में सीधी पहुंच सके। कुरसी पर भी यह ध्यान रखना चाहिये। सुराही द्वारा यह काम करने पर विशेष सहूलियत रहती है।

यह भाफ १५-२० मिनट तक धीरे-धीरे लगने देनी चाहिये। नीचे की आग काफी मंद नाममात्र रखें, ताकि रुग्णा को भाफ लेने में कष्ट न हो। अच्छा तो यह है कि आप सुराही को भाफ के समय आग पर न रखें, यूंही भाफ लगने दें। भाफ कम होती प्रतीत हो तो फिर उसे आग पर रख दें। उबलने पर फिर रुग्णा भाफ ले।

यह उपाय आठ दिन तक करना चाहिये। इससे उत्तम-रीत्या गर्भाशय का शोधन हो जाता है और उसके दर्द, शोथ, गांठ प्रभृति विकार सरलता से ठीक हो जाते हैं। भाफ देने के बाद नीचे लिखा हुआ पोटली का प्रयोग भी करना चाहिये।

(१४) गर्भाशय-गांठ नाशक पोटली—

रसौंत हल्दी कायफल अजवायन आम की गुठली बायविडंग प्रत्येक एक-एक तोले।

—इनको कूट-पीस कर खूब बारीक (कपड़छन) करले। फिर दो माशे दवा लेकर मधु (उत्तम शहद) में मिलाकर गूंध ले, ताकि खूब अच्छी तरह मिल जाय। इसकी पोटली बनाकर (एक साफ कपड़े में रखकर, पोटली बनाले) योनि में भीतर गर्भाशय के पास रखे। या तो स्वयं रखले या किसी चतुरा से रखा ले। यह पोटली २२ घण्टे रखी रहेगी। दूसरे दिन भाफ लेने से एक घन्टा पहिले अलग कर दी जायगी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इस प्रकार भाफ देने के बाद प्रतिदिन आठ दिन तक इसका प्रयोग करते रहें। ऐसा करने पर गर्भाशय के गांठ आदि विकार सुविधा से ठीक हो जांयगे। सावधानी और आलस्याभाव की विशेषावश्यकता है। भाफ लेने से पहिले डूस (उत्तरवस्ति) ले लेना बड़ा निरापद रहता है। इसके लिये एक उत्तम प्रयोग और भी दिया जा रहा है। पहिले इसका प्रयोग करके पुनः भाफ दे और फिर पोटली रखे।

(१५) गर्भाशय-विकार-नाशक योनि धोने की (डूस की) उत्तम औषध

गूलर की छाल बहेड़ा मकोय के पत्ते २-२ तोले।
बड़ी हरड़ का छिलका एक तोले। आंवला चार तोले।

—इनको जौकुट करके एक सेर पानी में डालो। २-३ घन्टा रखा रहने के बाद फिर आग पर गरम करो और उबालो। जब पानी जलते-जलते आधा रह जाय तो उतार कर छान लो और कोष्ण (गुनगुना) रहने पर 'उत्तर-वस्ति' दो। एनीमा के जनाने नोजल से यह काम सहूलियत से हो जाता है। अन्यथा साधारण पिचकारी से भी धीरे-धीरे इसे किया जा सकता है। यह प्रयोग किसी भी योनिविकार में सरलता से प्रयुक्त होता है। इससे प्रदर, कमरदर्द, गर्भाशय की सूजन आदि विकार सरलता से ठीक हो जाते हैं। लेडी डाक्टर तो बस, 'पोटाश परमैगनेट' या कभी 'बोरिक-एसिड' डालकर डूस दे-देती हैं; उससे सफाई तो अवश्य हो जाती है, किन्तु रोग को लाभ नहीं होता। इसलिये यह प्रयोग बहुत अच्छा है। धोने के समय पोंछने और सुखाने के लिये डाक्टरों की भांति पूरी तरह से साफ की हुई रुई या साफ कपड़े का उपयोग करना चाहिये।

(१६) योनिकन्द-नाशक एक और उत्तम प्रयोग—

ऊपर लिखे १२-१३-१४-१५ नम्बर के प्रयोग अपना सानी नहीं रखते। किन्तु कभी-कभी अत्यन्त शीघ्रतावश यदि वैसा करना सम्भव न हो तो फिर इस उत्तम प्रयोग को कर लेना चाहिये। प्रयोग इसप्रकार है
रसौंत सुरमा कायफल हल्दी आम की गुठली गेरू
ये छहों चीजें प्रत्येक बराबर-बराबर लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

—इनको कूट-पीस घोंटकर बारीक करलें। जितना बारीक हो सके उतना ही अच्छा है। फिर दो-माशे औषध लेकर शहद में भली-भांति मिश्रित करके, बारीक-पतले कपड़े में पोटली जैसी बांधकर गर्भाशय की गांठ पर रखें। ऊपर की अन्य विधियों के साथ, यदि पोटली के नं० १४ वाले प्रयोग के स्थान में, इसे किया जाय तो भी ठीक रहता है।

दो आवश्यक नोट—

१—कभी-कभी एक मात्र अजवायन की ही भाफ देते हैं। ऐसे समय में आधा-पाव अजवायन लेकर हलकी कूट ली जाती है और उसे डेढ़-सेर पानी में भिगो दिया जाता है। बाद में ऊपर की विधि से ही शेष सारी क्रियायें की जाती हैं।

२—आधा आराम प्रायः चौथे-दिन ही हो जाता है। तब डूस की दवा में परिवर्तन किया जा सकता है। ऐसी हालत में फिटकरी का डूस दिया जा सकता है। प्रयोग-विधि इस प्रकार है—

दो-तोला फिटकरी को ढाई सेर पानी में डालकर खूब उबालो, जब उबलते-उबलते आधा-सेर पानी शेष रह जाय तो डूस देने की क्रिया करो।

मात्र सफाई के लिये ही यदि यह प्रयोग करना चाहें तो सफेद फिटकरी लें। प्रदरनाशक क्रिया के लिये सफेद या गुलाबी कैसी भी फिटकरी ले सकते हैं। प्रदर में खाने के लिये सफेद फिटकरी न देकर, गुलाबी फिटकरी ही काम में लेते हैं।

(१७) अनन्तवात (उल्ल) अथवा पुरातन हठी-सिरदर्द पर—

घटना काफी पुरानी है। जोंधरी (मेरी जन्मभूमि) की बात है। एक महिला के सिर में दर्द बराबर बना रहता था। प्रारम्भ में रोग की बिलकुल लापरवाही ही की गई। जब दर्द अधिकतर बना रहने लगा तो छोटे-मोटे उपचार चालू रहे। उनसे कभी तो सिरदर्द दब जाता और कभी तेजी से उभड़ जाता था।

प्रारम्भ में माथे पर घी-मात्र मला गया। इससे शान्ति न हुई तो फिर सारे सिर में तिल का तेल! खूब अच्छी तरह मल-मलकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लगाया गया। कभी-कभी कायफल के कपड़छन चूर्ण की नस्य (सूंघने की तमाखू की तरह) दे दी जाती थी। इससे बढ़ती हुई तेजी पर एक-दम ब्रेक लग जाया करता था; किन्तु सिरदर्द मिटता न था। खाने में भोजन की अच्छी सुविधा कर दी गई। हलुआ खिलाया जाने लगा, दूध भी पर्याप्त-मात्रा में दिया; फिरभी सिरदर्द चाहे जब धर दबाता था।

एक बार बेहद जोर से सिरदर्द हुआ। कोई भी उपचार काम न करता था। तब एक स्थानीय वृद्धा ने बताया कि 'घी-कपूर' मिलाकर सुंता दो। उसने अपने अनुभव की पुट देते हुए बताया कि उसका हमेशा बना रहने वाला सिरदर्द इसी उपाय से ठीक हुआ था। इसी प्रयोग को किया। फलतः दर्द कुछ दिन शान्त रहा।

उसके एक माह बाद अब दर्द ने करवट बदली। अब दर्द गरदन से उठकर भौंहों की ओर जाता और दुस्सह वेदना देता था। सारे उपचार फेल हुए। प्रायः निम्नलिखित उपचार किये जा चुके थे। उनका संक्षिप्त-विवरण इस प्रकार है—

१—गरम घी में लौंगें पीसकर माथेपर लेप कियागया और सिकाई की।
२—फिर गरमी समझकर सौ-बार धुला हुआ मक्खन मलवाया गया।
३—छोटी इलायची पीसकर, घिसे चन्दन में मिलाकर लगाई गई।
४—पान में देशी कपूर रखकर खिलाया। कभी-कभी पान में इलायची और दालचीनी भी रखकर दी गई।
५—प्रातः सूर्योदयसे पहिले घी-शक्कर-कालीमिर्च खिलाई,दूध पिलाया।
६—सिर पर जमाल-गोटा लगाया। जमाल-गोटे का ऊपरी छिलका दूर करके अन्दर की मिंगी को घी में घिसा जाता था और फिर सींक से दर्द-स्थान पर बून्दें रखी जाती थीं। फिर उन्हें ३-४ मिनट में ही पोंछ दिया जाता था।
७—अरीठा पानी में चन्दन की तरह घिसकर, नाक में सुंताया गया।
८—'तत्काल फलप्रद-प्रयोग प्रथमभाग' का नं० २० का प्रयोग किया।
९—कालीमिर्च का कपड़छन चूर्ण करके उसे हुलास की तरह सुंघाया।
१०—आक का दूध, चूल्हे की राख में मिलाकर फिर उसकी नस्य दी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

११—अमृतधारा का घृतयुक्त प्रयोग, लेप रूप में किया गया।
१२—अत्यन्त परेशान होकर 'अमृताञ्जन-पेनबाम' भी मली गई।
१३—अन्यान्य अनेकों बाम, सिरदर्द-हर मरहम आदि लगाये गये। यहां तक कि षडबिन्दु तैल की नस्य भी दी गई और खाने को शिरोवज्र-रस गुलकन्द में खिलाया।
१४—सेव का मुरब्बा, आंवले का मुरब्बा, शरबत अनार आदि जिसने जो भी बताया और अपने ऊपर आजमूदा प्रगट किया, वही प्रयोग काम में लिया। कभी नकछिकनी सुंघाई गई और कभी कोई प्राइवेट नस्य दिया गया, किन्तु कुछ भी सफलता न हुई।

(इन सब प्रयोगों को इसलिये दिया गया है कि प्रायः ऊपर लिखे सभी प्रयोग सिरदर्द की अवस्था-विशेष में बहुत अच्छा काम करते हैं। उक्त प्रयोग-संग्रह किसी भी व्यक्ति को समय पर अच्छे से अच्छे वैद्य-डाक्टर का काम दे सकता है। इसलिये इसे ध्यान से दिमाग में भर लेना आवश्यक है।)

जब यह देखा कि मर्ज ला-इलाज होता जा रहा है। लाभ होने की बजाय, ज्यों-ज्यों दवा की जाती है, त्यों-त्यों मर्ज बढ़ता ही जाता है, तो बड़ी परेशानी हुई। एक दिन तो यह मालूम होने लगा कि बाईं आंख निकलकर एक दम बाहर ही गिरी पड़ती है। आंसुओं की धारा चालू हो गई। फौरन एक डाक्टर बुलाये गये, उन्होंने 'मारफिया विथ एट्रोपीन' का इंजेक्शन दिया। दर्द कुछ देर के लिये दब गया, किन्तु तीन घन्टे बाद फिर इस तेजी से दर्द शुरू हुआ कि रुग्णा दहाड़ देकर रोने लगी। जो भी वह रोना सुनता, एकदम दया से भीग जाता और उसके कष्ट को दूर करने के लिये भगवान से प्रार्थना करता था।

शायद भगवान के रूप में, एक जंगली मनुष्य आया। वह इनकी दूकान से सौदा-पता खरीदता था। दूकान बन्द देखकर पूछा तो लोगों ने सारा समाचार बता दिया। तभी वह घर आया। यह हालत देखकर उसने लाला जी के कान में कुछ कहा।

लाला जी फौरन उठकर दूकान में गये। दवा आई और पानी डालकर खूब घोंटी गई। दूसरी ओर दूध-जलेबी मंगाकर रखी गई और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रुग्णा से कहा गया, जितनी चाहो उतनी जलेबी खालो और दूध पीलो। अभी तुम्हारी बीमारी ठीक करदी जाती है।

रुग्णा चारपाई पर लिटाई गई। सिरहाने की चौखट से नीचे लटकाकर उसका सिर रखा गया। ड्रापर से बाईं ओर के नकुए में १० बून्द दवा डाली गई। दाईं ओर का नकुआ और मुंह फौरन बन्द कर दिये गये। अर्थ यह हुआ कि औषध सांस के साथ ऊपर पहुँच गई। देखने वालों को दीख रहा था कि बलिदान के बकरे जैसा हाल है।

रुग्णा का सारा मुंह, गला और नाक कड़वी-कड़वी हो गई। वह बुरी तरह रो रही थी। दो मिनट बाद रुग्णा को उठाकर आराम से बैठा दिया गया। इस समय नाक और आंख से तेजी से पानी बह रहा था। पानी के बहने के साथ सिरदर्द भी घटता जा रहा था। कभी-कभी नाक में से पानी के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के छिछड़े भी निकलते थे। दो-घन्टे बाद फिर दूध-जलेबी दी गई। प्रायः तीन दिन इसी प्रकार का क्रम रहा। रुग्णा नीरोग हो गई। तब से अब तक उसे सिरदर्द की शिकायत हुई ही नहीं।

प्रयोग का पता लगाया गया। सारांश इस प्रकार है—

देवदाली (जिसे बिन्दाल, बन्दाल या गगर-बेल) कहते हैं, के पांच फल लीजिये। इनका ऊपरी कांटेदार छिलका और भीतर के बीज निकाल कर (बीज हिलाने से ही निकल जाते हैं) फेंक दीजिये। शेष जाली मात्र भाग रह जायगा। इसे एक कांच या चीनी या पत्थर के खरल में डालकर भिगो दीजिये। पानी ४०-५० बून्द तक डालना चाहिये। फिर थोड़ी देर में खूब घोंट डालिये और पानी छान लीजिये। यही पानी उत्तम औषध है। इसी को ड्रापर द्वारा नाक के उस नकुए में डालना चाहिये, जिस ओर सिरदर्द हो।

इस प्रयोग का उपयोग मैं पचासों बार,सफलता से कर चुका हूँ।

ध्यान रहे कि यह प्रयोग है तो उत्तम, किन्तु इससे बड़ी परेशानी होती है। अमीरों पर इसका प्रयोग न करें। अमीर-गरीब सभी का इस प्रकार का दर्द दूर करने के लिए एक अत्युत्तम प्रयोग हमने 'तत्काल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फलप्रद प्रयोग' (प्रथमभाग) में दिया है, वहां से अवश्य देखिये। वह प्रयोग अपना सानी नहीं रखता। बहुत ही अच्छा प्रयोग है। उस पुस्तक का मूल्य १।।) है। दो-रुपये मनी आर्डर से भेजकर अवश्य मंगाइये। उसमें काम-काम के चुनिन्दा १०० प्रयोग और भी दिये हैं। पूरा विवरण इसी पुस्तक में अन्यत्र देखिये।

गर्भाशय-शोथ पर सुपरीक्षित उपचार—

गर्भाशय की गांठ पर उत्तम चिकित्साक्रम पिछले प्रयोगों में दिया जा चुका है। यहां पर गर्भाशय की सूजन पर सरल परीक्षित-विधि दी जा रही है। आवश्यकता पर अवश्य काम में लें। गर्भाशय की सूजन गर्भाधान में प्रायः विशेष-बाधक होती है। इसलिये इसका उपचार यथाशक्य शीघ्र कर लेना चाहिये।

(१८) गर्भाशय-शोथ में डूस (उत्तर-वस्ति)—

सबसे पहिले गर्भाशय की सफाई अत्यावश्यक है। उसके लिये निम्नलिखित प्रयोग तैयार करें। प्रयोग सरल और अनुभूत है। वह इस प्रकार है—

नीम की भीतरी छाल	गूलर की छाल	१०-१० तोला।
दशमूल (इकट्ठा मिला हुआ)	त्रिफला	५-५ तोला।

—इन्हें शाम को पांच सेर पानी में भिगो दीजिये और प्रातः हलकी आग पर उबालिये। जब सवासेर मात्र जल रह जाय तो उतार कर छान लीजिये। पांच मिनट बाद फिर दुबारा और छान डालिये, इस तरह दो-चार छन जाने पर जल-मात्र शेष रह जायगा। इसका डूस दें। यह प्रयोग लगातार सात दिन करना चाहिये। अधिकतर इसी प्रयोग से गर्भाशय की सूजन घटकर उसकी शुद्धि हो जाती है।

जो गर्भाशय-शोथ से बचना चाहें, उन्हें प्रतिमाह मासिक के पश्चात् यह प्रयोग अवश्य कर लेना चाहिये। जहां पर विभिन्न आनन्द-प्रद लेपों द्वारा रतिक्रिया सम्भव होती है या सफाई नहीं होती, वहां यह रोग जड़ जमा लेता है। ऐसे प्रसंग में नीरोग-महिला को भी प्रति सप्ताह इस प्रयोग से सफाई कर लेनी चाहिये। इससे भीतर संचित

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विष-द्रव्य सरलता से बाहर निकल जाता है।

(१६) गर्भाशय-शोथ में भीतर रखने की औषध—

बढ़े हुए रोग में मात्र 'डूस' से काम नहीं चलता। साथ ही साथ अन्यान्य उपचार भी करने होते हैं। अतः उक्त नं० १८ के प्रयोग के बाद फिर इस प्रयोग को करिये।

मकोय का रस, (मकोय के फलों का रस मिल जाय तो अत्युत्तम है, अन्यथा तो फिर पत्तों का रस ही कूटकर लेना चाहिये) चार तोला।
फिटकरी (बारीक कपड़छन पिसी हुई) एक माशा।
महानारायण तैल (उत्तम शास्त्रीय-योग) छह माशे।

—पहिले एक कटोरी में मकोय का रस डालो और फिर उसमें पिसी हुई फिटकरी मिला लो। बाद में महानारायण तैल डाल दो और आग पर जोश दे लो। फिर नीचे उतार कर उसमें साफ धुली रुई की मोटी बत्ती बनाकर डाल दो। सुहाती-सुहाती इस पिचु को योनि के भीतर, गर्भाशय के पास जहां सूजन है, वहां रखो। डूस करने के बाद अच्छी तरह पोंछ-पांछ करके फिर आधा घन्टे में यह पिचु रखो।

इससे गर्भाशय की सूजन, गर्भाशय की पीड़ा एवं अन्यान्य जन्तुविकार अवश्य दूर हो जांयगे। मेरा अनुभव है कि जिनके पतिदेव विभिन्न लैंगिक रोगों से पीड़ित हैं, उनकी पत्नियें इन दोनों प्रयोगों को अवश्य काम में ले। पति महोदय पुरानी कुटेबें छोड़कर, ये दोनों प्रयोग यदि स्वयं पर भी करें तो अत्युत्तम है। यह उत्तम जन्तुघ्न एवं उच्च कोटि का परिमार्जक है। अवश्य काम में लीजिये।

इसी के साथ-साथ ऐसी रुग्णाओं को खाने की औषधों में पुनर्नवादि मन्डूर, योगराज गूगल, चन्द्रप्रभावटी, प्रदरान्तक लौह, प्रदरारि रस आदि का प्रयोग भी यथास्थिति करते रहना चाहिये। भोजन सुपाच्य करें और उसके बाद पुनर्नवासव, दशमूलारिष्ट या पत्रांगासव या अशोकारिष्ट समभाग जल में मिलाकर पिया करें। अवश्य ही गर्भाशय के सारे विकार सरलता से ठीक हो जांयगे। यदि रोग अधिक बढ़ा हुआ हो तो पति-प्रसंग से अवश्य बचना चाहिये, अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि की ही विशेष सम्भावना रहेगी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२०) गर्भाशय से मवाद बहने पर—

कभी-कभी विभिन्न-कारणों से गर्भाशय में व्रण या क्षत हो जाते हैं। उनके फूटने पर मवाद बहने लगता है। गर्भाशय में दर्द रहे और फिर मवाद बहे तो उसे सावधानी से समझ कर निर्णय देना चाहिये। वह प्रदर न होकर प्रायः गर्भाशय का तेज विकार होता है। उस समय की उपेक्षा बड़ी खतरनाक होती है। ऐसी स्थिति में यह उपचार करें—

ढाई-सेर पानी में पिसी हुई फिटकरी एक तोला और नीम के साफ पत्ते आधा सेर लेकर मिलालें और फिर दो-घन्टे बाद आग पर गरम करें। जब पानी जलकर आधा रह जाय तो छान डालें और उसका डूस दें। इस उत्तर-वस्ति (डूस) से भीतरी सफाई खूब अच्छी तरह हो जायगी। इसके बाद अच्छी तरह साफ रुई को गरम पानी में डाल-उबाल कर, निचोड़ लें और अपत्यमार्ग खूब अच्छी तरह धोडालें।

पन्द्रह मिनट बाद शास्त्रीय प्रयोग 'जात्यादि तैल' लेकर, उसमें अंग्रेजी बढ़िया रुई की मोटी बत्ती बनाकर भिगो दें, साधारण निचोड़ कर और पिचु बनाकर योनि में रखें। समय पर जात्यादि-तैल न मिले तो उत्तम गोघृत में बारीक कपड़छन हल्दी चौथाई भाग मिलाकर उसमें बत्ती भिगोकर योनि में रखें। सम्भव हो तो चमेली के पत्तों का रस और समभाग घी मिलाकर आग पर गरम करलें, जब चमेली के पत्तों रस जल जाय तो घी को नीचे उतार लें। उसी गरमागरम घी में चौथाई भाग कपड़छन हल्दी मिलालें और एक दिल करलें।

इसप्रयोग को रात्रि में लगातार सात-दिन करना चाहिये। इससे गर्भाशय के व्रण, दाह, खुजली, मवाद बहना एवं शोथ प्रभृति विकार सरलता से ठीक हो जाते हैं।

(२१) रक्तप्रदर पर तत्काल-फलप्रद योग—

रक्तप्रदर सारे शरीर को जर्जर बना देता है। ऐसी स्थिति में निम्नलिखित प्रयोग की प्रथम मात्रा ही सत्वर फल दिखाती है। हालांकि तत्काल फलप्रद-प्रयोग (प्रथमभाग) का प्रयोग नं० २३ भी अपना सानी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नहीं रखता, किन्तु यह प्रयोग भी विशेष परिस्थितियों में अच्छा काम करता है। प्रयोग इस प्रकार है—

उत्तम षडगुणबलि-जारित एवं अन्तर्धूमविपाचित रससिन्दूर अथवा किसी भी प्रामाणिक कम्पनी का (पनवेल, डाबर, झंडु आदि का) रससिन्दूर नं० १ ले लीजिये।

रससिन्दूर एक माशा। फुलाई हुई फिटकरी ५ माशा।

—दोनों को खूब घोंटकर एकदिल करले। मात्रा दो-रत्ती से चार रत्ती तक, अवस्थानुसार गोदुग्ध में दें। गाय का दूध कम से कम दो-छटांक अवश्य हो। दिन में दो-बार यह प्रयोग करें। पहिली मात्रा ही तत्काल-फलप्रद है। पथ्य में सिर्फ मूंग की दाल और रोटी दें, या दाल-भात दें। इससे 'रक्तप्रदर' तो मिट ही जाता है, साथ ही योनि-संकोच होकर योनि-पीड़ा भी मिटती है। सरल एवं निरापद योग है।

(२२) महिलाओं के 'वायुशूल' में तत्काल-फलप्रद योग—

जब 'वायुशूल' (वायु के कारण पेटदर्द) उठ खड़ा होता है, तो पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को अधिक कष्ट का सामना करना पड़ता है। वे पेट पकड़कर बैठ जाती हैं। वायु रुक जाने के कारण बड़ी घबराहट होती है। प्रायः अपानवायु की विकृति से यह रोग होता है। महिलाओं में प्रायः वातविकार अधिक रहता है। इसलिये चन्द्रप्रभावटी, गोक्षुरादि गूगल प्रभृति वातशामक-प्रयोग उनपर विशेष कारगर होते हैं।

अच्छा, 'वातशूल' पर प्रयोग देखिये—

अमलतास का गूदा दो-तोला। घी पांच तोला।

—प्रायः 'अमलतास का गूदा' बाजार में इसी नाम से मिल जाता है। यदि कदाचित न मिले तो फिर 'आरग्वध (अमलतास की फली)' लेकर फोड़ लें और उसके भीतर से बीज अलग करके गूदा चाकू से निकाल लें। यह गूदा प्रायः गोल-गोल शक्ल में सूखा हुआ होता है। —इस गूदे को दो-तोले लें और पांच तोले घी में आग पर भली-भांति भून लें। दूसरी ओर पावभर गाय का दूध गरम करें और उसमें उक्त सेका हुआ गरमागरम अमलतास का गूदा डाल दें। ठंडा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हो जाने पर अमलतास का गूदा निकाल लें और उसमें १०-१२ काली मिर्चों का बारीक कपड़छन चूर्ण मिला लें।

डेढ़ माशे कालानमक (बारीक पिसा हुआ) फँकाकर ऊपर से उक्त औषध खिलादें और ऊपर से दो-चार घून्ट गरम पानी दे दें। दवा देते-देते दस मिनट में आराम हो जायगा। अद्भुत प्रयोग है। वायु का अनुलोमन करता है, दस्त साफ लाता है और मुंह का जायका भी खराब नहीं होने देता।

आवश्यक नोट—यदि भोजन के वाद ऐसा शूल उठे तो शास्त्रीय 'चित्रकादि वटी' २-३ गोली पीसकर गरम पानी से दे दें। पेट पर हाथ फेरें या गरम वोतल फेरें; दर्द मिट जायगा।

(२३) तत्काल-फलप्रद 'वायुशूल-नाशक' योग—

यह योग भी अनेकों बार का सुपरीक्षित है। ऊपर के प्रयोग से सरल है। लाभ में मात्र १९-२० का अन्तर है। प्रयोग इस प्रकार है—

अंडी का तेल (Caster oil) २ तोला, अदरख का रस २ तोला।

—दोनों को मिलाकर पिला दो। ऊपर से २-१ घून्ट गरम पानी या दूध देदो। फौरन आराम होगा। पुरुषों के वायुशूल पर भी सुपरीक्षित है। दो-घन्टे में आराम कर देता है। गुणवर्णन नं० २२ की भांति है।

(२४) पचास-रोगों की एक शर्तिया-दवा (अव्यर्थ महिला-रसायन)

यह प्रयोग इतना अधिक अनुभूत है कि इसकी प्रशंसा में विशेष लिखना विज्ञापन करना है। इस सरल-प्रयोग को सावधानी से वनाइये और नारी-रोगों पर सुविधा से प्रयोग करिये। महिलाओं को नीरोग करने वाला यह प्रयोग अपना सानी नहीं रखता। पहिले इसके बनाने की विधि लिखते हैं, वाद में इसके गुणों का विवेचन करेंगे।

फागुन या चैत के दिनों में बढ़िया बड़े-वड़े पके आंवले ले लीजिये। इनका वजन करलें। तौलकर ढाई सेर ले लें। एक उत्तम कलईदार कढ़ाई जिसमें दस-सेर सामान बहुत ही आराम से आजाय लें। इस कढ़ाई, में उक्त बड़े-बड़े और पंके हुए आंवले डाल दें और एक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सेर गोदुग्ध (गाय का दूध) भी छोड़ दें। आंवले जब खूब उबल-पक जांय तो उतार लें और कढ़ाई में से निकालकर एक काठ या पत्थर या कलईदार बरतन में रखें। दूध को भी एक कलईदार पात्र में अलग रखें।

अब इन आंवलों को फोड़कर गुठलियां निकाल लें और सिलपर बारीक पीस डालें। बाद में एक मोटे खद्दर के कपड़े में आंवलों की इस पिट्ठी को डालकर छान डालें। बीच-बीच में थोड़ा-थोड़ा उक्त दूध भी मिला सकते हैं, ताकि आंवले आराम से छन जांय। इस छनी हुई आंवले की पिट्ठी को एक ओर रखलें।

दूसरी ओर अशोकवृक्ष की भीतरी छाल (अन्तर-छाल) पांचसेर मँगावें और उसे खूब कुचल कर एक मिट्टी के या कलईदार पात्र में दस सेर पानी डालकर भिगो दें और उसे मथानी (रई), जिससे दही मथा जाता है, द्वारा दो-घन्टे खूब मथें। बारह घन्टे बाद फिर एक घन्टे मथकर उसे मोटे खद्दर के कपड़े में छान लें और निचोड़ लें। इस छने हुए पानी वाले भाग को एक-दो घन्टा रखा रहने दें और फिर पतले मल-मल के कपड़े में छान लें और अच्छी तरह से निचोड़ लें। इससे सारा मोटा-भाग भली-भांति छन जायगा। इसे अब आग पर रखें। जब जलते-जलते आधा-पानी जल जाय तो फिर पहिले के पिसे हुए आंवलों की पिट्ठी इसी कलईदार कढ़ाई में डाल दें और दोनों को खूब पकने दें। जब दोनों गाढ़े होने आवें तो नीचे उतार लें। ध्यान रहे कि खूब कड़ा गाढ़ा न होने दें। ठंडा हो जाने पर इसे तीन पाव घी में खूब अच्छी तरह सेक लें। इतना सेको कि कढ़ाई में बिलकुल लगे नहीं।

इसके बाद बीस तोला आंवलासार गंधक लें। दूसरी ओर एक बड़ा-सा लोटा, जिसमें दो सेर सामान आ जाय, लें। इस लोटे पर पतला—मलमल का साफ धुला हुआ मजबूत छन्ना खूब मजबूती से गहरा बांधें और इसमें आधा-सेर कच्चा गाय का दूध भर दें।

तीसरी ओर एक बड़े-से कलछे में बीस-तोला उक्त आंवलासार गंधक रखें और उसी में ८ तोला घी भी मिला लें। चम्मच इतना बड़ा रहे, चाहे वह किसी भी धातु लोहे आदि का हो, कि उसमें आधा-सेर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

के लगभग सामान आ सके। इस चमचे को जलते कोयलों की आग पर रखें। जब गंधक-घी पिघलकर बिलकुल रबड़ी जैसे हो जांय तो झटपट उक्त छन्ने-बँधे लोटे में उड़ेल दें। सारा भाग छन्ने से निकल जायगा और दूध में जा पड़ेगा। एक छन्न-सी आवाज होगी।

बाद में छन्ना खोलकर उस गंधक को निकाल लें और पानी से खूब अच्छी तरह धो डालें। उस घृत-मिश्रित दूध को लोटे से निकाल कर अलग पात्र में रखदें। और फिर आधा सेर ताजा गोदुग्ध लोटे में भरकर, ऊपर से पहिले की भांति छन्ना बांधकर रखदें। फिर ८ तोला घी लेकर उक्त विधि से गंधक को बुझायें। ऐसे सात-बार में उस २० तोले गंधक को, प्रतिबार दूध और घी बदल-बदल कर शुद्ध करलो।

फिर २० तोला कालीमिर्च लेकर बारीक घोंट-पीस कर कपड़छन कर डालो और गंधक में मिलाकर घोंटो। फिर दोनों को २० तोले घी में भली-भांति घोंट डालो। बाद में पांच सेर मिश्री की कलाकन्द जैसी चाशनी बनाकर ऊपर के सारे द्रव्य मिला लो। फिर घृत से घुटा हुआ यह गंधक भी मिला दो। और फिर अवलेह की तरह गाढ़ा चाटने योग्य, अथवा बरफी की तरह बनाकर रखलो। 'अन्यर्थ महिला-रसायन' प्रयोग तैयार हो गया।

नोट—(१) यदि मिश्री की चाशनी न मिलाना चाहें तो वैसे ही अमृतबान में भरकर रखलें।

(२) जो महिलायें 'मधु' (शहद) का व्यवहार करती हैं, वे मिश्री से स्थान पर चार सेर उत्तम प्रामाणिक मधु इसमें मिला लें। चाशनी न करें, वैसे ही मिला लेना चाहिये। अथवा औषध सेवन करते समय मधु में मिलाकर चाट लें। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक उत्तम है।

प्रयोग विधि—इसकी मात्रा दो-तोले से चार-तोले तक है। यदि इसे बिना मधु या मिश्री का लेना हो तो मात्रा एकतोले से दोतोले तक है। उसे चाशनी या मधु में मिलाकर चाटें। प्रातः सायं दोनों समय

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसका उपयोग करना चाहिये। औषध लेने के आधा-घन्टे बाद उत्तम दूध भी मिश्री मिलाकर लिया जा सकता है। गरमी में ताजा ठंडा दूध लें, किन्तु जाड़ों में गरम करलें।

इस प्रयोग से निम्नलिखित रोग सत्वर ठीक होते हैं—

हाथ-पैरों की जलन, सिर का दर्द, कमर का दर्द, रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, मैथुनासह्यता, खून की कमी, ज्वर, खांसी, अशक्ति, मंदाग्नि, कब्ज, जिगर-तिल्ली की खराबी, गरमी, दाह, अरुचि, बारबार जुकाम होना, आंखों की कमजोरी, कम दीखना, खट्टी डकारें आना, पेशाब पीला होना, मूत्रदाह, योनि की खाज, वमन, जी मचलाना, दिल की धड़कन, स्मरणशक्ति की कमी, आलस्य बना रहना, अधिक निद्रा, मासिक-धर्म ठीक न होना, हाड-मात्र होना (दुबलापन), हड्डी चटकना, पीलिया आदि पचासों नारी-विकार सरलता से ठीक हो जाते हैं। दो-माह तक नियमित प्रयोग करना चाहिये। दो-माह पूर्ण संयम से रहें।

इसके अतिरिक्त यह प्रयोग नवयुवकों और मनुष्यों के लिये भी बड़ा हितकर है। प्रमेह, नपुंसकता, धातुक्षीणता, गरमी, सुजाक, दाद-खाज, अन्यान्य रक्तविकार, स्वप्नदोष, कफविकार, प्रारम्भिक दमा, सम्पूर्ण पित्तज विकार आदि पुरुषरोग भी सरलता से ठीक करता है। बाल-रोगों पर भी इनका प्रयोग संभव है।

ताजे आंवले, ताजा अशोक, उत्तम गंधक रसायन, मिश्री-घृत इन सभी का उक्त मिश्रण बड़ा ही लाभप्रद है। हजारों रुग्णाओं और पुरुष-रोगियों पर सुपरीक्षित है। अवश्य बनाकर रखिये।

इसके सेवन काल में तेल, लालमिर्च, खटाई एवं अन्यान्य वातल-पदार्थों से अवश्य बचें। कामोत्तेजक वातावरण से दूर रहें। पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहें। प्रयोग अवश्य लाभ करेगा। यह प्रयोग कभी व्यर्थ नहीं जाता। बनाने की विधि भी अत्यन्त सरल है।

(२५-२६-२७) खांसी-नाशक तीन गरीबी प्रयोग—

ये तीनों प्रयोग देखने में तो छोटे-छोटे ढीले-ढाले मालूम पड़ते हैं, किन्तु काम पड़ने पर बड़े-बड़े नामी-गिरामी प्रयोग के कान काटते

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हैं। धर्मार्थ-विभाग में हजारों पुरुषों व महिलाओं पर सुपरीक्षित हैं। अवश्य काम में लाइये।

पहिला प्रयोग इसप्रकार है—

यदि आपको बुढ़ापे के कारण रात को ही अधिक खांसी आती है, और खूब खांसने पर भी कफ बाहर नहीं निकलता; और कफ न निकलने से आपको बड़ी परेशानी और घबराहट होती है, तो आप शाम को ही अच्छी तरह नाक साफ करके दो-माशे की एक काले-नमक की डली मुंह में डाल लीजिये। चूसने की अधिक कोशिश न करिये। अपने आप जो घुले सो घुलने दीजिये। उसी रात में आपको फायदा प्रतीत होगा। खांसी कम हो जायगी और कफ भी आराम से निकल जायगा। वृद्धाओं पर सुपरीक्षित है।

चालीस वर्ष से अधिक अवस्था वाले और तमाखू का सेवन वाले भी इसप्रयोग से बहुत शीघ्र ठीक होते हैं। हजारों पर परीक्षित है।

दूसरा प्रयोग जो जवानों की खांसी पर काम करता है—

रात को खाना मत खाओ। नाक साफ करलो। तीन-माशे कालीमिर्च और एक-तोला गुड़ की पांच-सात गोलियां बना लो और चूसते रहो। ठंडा पानी बिलकुल न पियो। इससे जुकाम की खांसी, सूखी-खांसी एवं अन्यान्य कास अवश्य ठीक हो जाते हैं। इस प्रयोग के साथ परहेज का पूरा खयाल रखो। चावल मत खाओ, भोजन हलका करो और पानी गरम पियो। युवतियों के लिये यह प्रयोग विशेष लाभप्रद है। प्रातः उठकर अच्छी तरह मुंह साफ करलो। ध्यान रहे, प्रातः प्यास लगे तो यूं ही खाली पेट पानी मत पीना। प्रातः ठंड के दिनों में हवा लगने के कारण खांसी चलने लगती हो तो उठते ही कानोंसे मफलर बांध लो और फिर बाहर निकलो। दिन में ५-७ बार भुनी लौंगें खाया करो।

तीसरा 'खांसी में लाभप्रद-उपाय' इस प्रकार है—

जिन्हें खांसी अधिक चलती है; चैन नहीं मिलता। वे दिन में ३-४ बार बढ़िया बूरा दो-दो तोले फांक लिया करें। ध्यान रहे कि बूरा फांकने से २ घन्टे पहिले और एक घन्टे बाद तक पानी न पियें। चाहें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तो बूरा फांक कर ऊपर से पान अवश्य खा सकते हैं। जुकाम की खांसी हो तो रात को दूध में छुहारे गरम करो। छुहारों को खाकर ऊपर से वही गरमागरम दूध पी डालो और शक्कर-कालीमिर्च फांककर मुंह ढककर सो जाओ। प्रातः जुकाम और खांसी दोनों ठीक मिलेंगे।

ध्यान रहे कि शाम को भोजन न करना और शाम के छह बजे के बाद पानी भी मत पीना। प्यास लगे तो गरमागरम दूध या तुलसी के पत्तों की चाय ली जा सकती है।

यह एकप्रयोग और याद करलो—तुलसी के पत्ते १५, कालीमिर्च ६; इनकी चाय बनाकर पीने से जुकाम, खांसी, बुखार, कफविकार, मंदाग्नि प्रभृति विकार शीघ्र ठीक हो जाते हैं।

(२८) एक तीर में चार शिकार (सोम-रक्त-श्वेतप्रदर-प्रसूत हर)—

यह प्रयोग अनेकों बार का सुपरीक्षित है। सर्वत्र निरापद है। नारी-रोगों पर इतना उत्तम और सुलभ-योग आप दूसरा न पावेंगे। इसके व्यवस्थित प्रयोग से जिस प्रकार रक्त-प्रदर और श्वेत-प्रदर दूर होते हैं, उसी प्रकार सोमरोग (महिलाओं के मूत्र-मार्ग से तरल-पदार्थ जैसा तत्व बहते रहना) और प्रसवान्त की (बच्चा पैदा होजाने के बाद की) कमजोरी सुविधा से दूर हो जाती है। प्रयोग रेचक-सा प्रतीत होने पर भी दस्त पतला नहीं लाता। हां, कब्ज को अवश्य नहीं रहने देता।

'एक तीर में चार शिकार' प्रयोग इस प्रकार है—

बढ़िया बबूल का गोंद लीजिये दस तोले, और उसे दस ही तोले बढ़िया असली घी में थोड़ा-थोड़ा डालकर खूब तल डालिये और फुला लीजिये। दूसरी ओर (यह काम काफी समय पहिले कर लेना चाहिये) कच्चे केले, जो काफी बड़े और पुष्ट हों, लीजिये। चाकू से उनका ऊपरी-हरा-छिलका दूर कर दीजिये और भीतर का गूदा निकाल कर टुकड़े-टुकड़े करके धूप में बिलकुल सुखा डालिये। इसे ही बाद में कूट-पीस डालिये और बारीक कपड़छन करिये।

इसके बाद नीचे लिखी चीजों को कूट-पीसकर बारीक चूर्ण करें—

असगंध (नागौरी) विदारीकंद शतावर प्रवालभस्म

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हर्रा	बहेड़ा	आंवला	निशोथ	प्रत्येक ५-५ तोले।
चिकनी सुपारी		१० तोले।	सोंठ	ढाई तोले।
मिश्री	एक सेर।		वंशलोचन असली	छह तोले।

—अच्छा तो यह है कि सब चीजों का अलग-अलग चूर्ण बनाकर फिर उसे उक्त तादाद में तोलकर लिया जाय, ऐसा प्रायः प्रत्येक औषध के लिये ही करना चाहिये। किन्तु यदि शीघ्रता अत्यधिक हो तो प्रवालभस्म (सूर्यपुटी) और मिश्री को छोड़कर, शेष सारी चीजें मिलालें और कूट-पीस कर कपड़छन करलें। याद रखें हर्रा, बहेड़ा और आंवला गुठली निकाल कर ही लें। सब ठीक हो जाने पर मिश्री कूटकर मिला लें। अन्त में प्रवालभस्म मिलाकर दो-घन्टे भली-भांति घुटाई करें और फिर शीशी में भर लें। यही 'एक तीर में चार शिकार' है।

इसकी मात्रा एक तोले की है। सरल अनुपान यह है कि इसे प्रातः-सायं बढ़िया गोदुग्ध से दे। दुपहर में भोजन के बाद यदि संभव हो तो गाय के तक्र (छाछ) से दे। ध्यान रहे कि खट्टे तक्र का भूलकर भी उपयोग न करें। उससे लाभ की जगह हानि की ही विशेष संभावना रहती है। यह साधारण अनुपान है। विशेषानुपान इस प्रकार है—

रक्तप्रदर में—यह प्रयोग अशोक की छाल के काढ़े के साथ दें। अथवा एक तोले गुलकन्द में मिलाकर चटा दें। अथवा भांगरे के पत्तों का रस निकालकर उसी में १ तोला उक्त दवा घोलकर प्रातः दुपहर सायं तीनों समय दें। अथवा करेले के पत्तों के रस में दें। इन उपायों से प्रथम मात्रा में ही रक्तप्रदर में लाभ प्रतीत होने लगता है। हजारों महिलाओं पर सुपरीक्षित है।

श्वेतप्रदर में—इस औषध को अनार के रस में तीनों समय दें। या मूली के पत्तोंके रसमें दें। अथवा बड़ के दूध की ८-१० बून्द मिलाकर प्रातः सूर्योदय से पहिले एक मात्रा खिलादो और ऊपर से धारोष्ण ताजा गोदुग्ध दे दो। श्वेतप्रदर उसी दिन से किनाराकशी करने लगेगा। वट-दुग्ध वाला योग सहस्रशः परीक्षित है। सूजी के हलवे के साथ उक्त प्रयोग करने से अशक्तियुक्त श्वेतप्रदर ठीक हो जाता है। यह योग महिलाओं को सबल भी बनाता है। सुपरीक्षित है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सोमरोग में—यह रोग महिलाओं में ही होता है। मूत्रमार्ग से निरन्तर तरल-पदार्थ, जो शरीर-धारक धातु 'सोम' कहलाती है, बहता रहता है। इसे महिलाओं का बहुमूत्र भी कहा जा सकता है। यह रोग महिलाओं के अपत्यमार्ग में न होकर मूत्रमार्ग में ही होता है। इससे महिलायें अकाल में ही काल-कवलित हो जाती हैं। इनकी धोती प्रायः हरवक्त भीगी रहती है। यह रोग जब खूब बढ़ जाता है तो इसमें बार-बार पेशाब होता है। रुग्णा पेशाब क्षण भर भी नहीं रोक सकती। प्रदर की भांति यह भी भयानक रोग है। इसमें उक्त प्रयोग निम्नलिखित किसी विधि से काम में लीजिये।

१—इसे आंवलों के रस में घोलकर दिन में ३-४ बार दें।

२—मधु खाने वाली महिलायें मधु-दुग्ध से इसका प्रयोग करें।

३—केले की पकी फली के साथ यह चूर्ण लगाकर खावें।

४—मुलहठी, आंवला, केला, नागकेशर मिलाकर चटावें।

इन उपायों से भयंकर सोमरोग भी उक्त औषध से दूर होजायगा।

इस प्रयोग से महिलाओं की योनि से बहनेवाले विशेष काले-पीले, नीले-हरे रंग के बदबूदार स्राव, गर्भाशय के विकार एवं अशक्ति प्रभृति भी दूर हो जाते हैं।

प्रसवान्त (बच्चे होने के बाद की) कमजोरी पर, साथ ही साथ विभिन्न प्रसूत-रोगों का भी नाश करने के लिये उक्त प्रयोग को निम्नलिखित अनुपानों में से किसी एक या दो द्वारा प्रयुक्त करिये।

१—योनि में वायु घुस जाय और हृदय, सिर, पेडू में दर्द रहे तो तीन-माशे जवाखार के बारीक चूर्ण में उक्त औषध मिलाकर कुनकुने पानी से दिन में ३-४ बार पिलाओ।

२—सोंठ, मिर्च, पीपल या अकेली पीपल मिलाकर दो।

३—गुड़ और घी में मिलाकर उक्त औषध दिन में तीन-बार दो।

४—औषध चटाकर ऊपर से दशमूल का काढ़ा पिलादो। प्रसूत-रोगों में ये चार उपाय करें। शक्ति-वृद्धि के लिये गुड़, घी अथवा बढ़िया दूध या सोंठ के मोदकों के साथ यह औषध दो।

चारों रोगों पर हजारों बार का सुपरीक्षित प्रयोग है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२९) महिलाओं की छाजन पर अनुभूत चिकित्सा-पद्धति—

प्रायः प्रत्येक प्रान्त की महिलायें पैरों में कुछ न कुछ आभूषण पहिनती हैं। कहीं कड़े तो कहीं छड़े-लच्छे-झांझनें और कहीं-कहीं तोड़र आदि भी पहिने जाते हैं। इनसे शरीर की सुन्दरता बढ़ती है, प्रायः इसीलिये इनका उपयोग किया जाता है। किन्तु प्रतिदिन पैरों की व्यवस्थित सफाई न करने वाली महिलाओं में गंदगी के कारण, वहां विभिन्न प्रकार के रक्त-विकारादि हो जाते हैं। इनमें दाद-खाज और चर्म शोथ के अतिरिक्त छाजन भी स्थान ले-लेती है।

इस रोग से प्रत्येक को बड़ी परेशानी होती है। छाजन वहीं होकर ही रह जाय सो बात नहीं है। वह चेप छोड़ता है और धीरे-धीरे बढ़ता जाता है। जिस प्रसंग में मुझे इसका रोगी देखना पड़ा, उसका पैर तो घुटने तक खराब हो रहा था। चर्म के मोटे-मोटे पर्त, तिड़के, दरार-दार, खून-पानी-सा बहता हुआ—सब मिलकर तेज-दुर्गन्ध और घृणास्पदता का कारण बन रहे थे। रुग्णा रो-रो देती थी, दर्द के मारे।

इस रोग को २-३ वर्ष हो गये थे। बरसात में यह रोग और भी बुरी तरह से उसे परेशान करता था। छोटी-मोटी कई चिकित्सायें हो चुकीं थीं। डाक्टरी-पट्टियां भी बांधी जा चुकी थीं। किन्तु रोग नाममात्र कम हो जाता था, पूरा ठीक नहीं होता था।

जब वह मेरे पास लाई गई तो उक्त हालत देखकर मुझे बड़ी घृणा हुई। रुग्णा को दूर बैठाया। घर वाले अलग गिड़गिड़ा रहे थे। मन न होते हुए भी केस हाथ में ले लिया।

उन दिनों मैं गांधी जी के मिट्टी के चिकित्सानुभव पढ़ रहा था। दिमाग ने कहा इस पर यही उपचार करो। फलतः वही चिकित्सा की।

नीम के पत्ते डालकर गरम पानी किया गया। उससे रुग्णा का पूरा-पैर धुलाया और साफ कराया। कोरे मिट्टी के घड़े के ठीकरे मंगवाये गये, उनसे भीगा हुआ पैर सुखाया गया। जहां से मवाद-पानी-सा बहता था, वहां मिट्टी की ठीकरी चिपक जाती थी। अस्तु, सफाई हुई। फिर ठंडे पानी से भीगी पट्टी, तीन घन्टे तक पैर पर बांधने को

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बताई। उसपर हर पन्द्रह मिनट बाद पानी छींटने की भी हिदायत कर दी गई। गरमी के दिन थे, अतः पट्टी सूख जाने का भय था। पट्टी गाढ़े (खद्दर) की पांच-तह (पर्त) करके रखी गई थी।

इस प्रयोग से ऊपर का चर्म-भाग खूब फूल गया, ऊपर तक उभर आया। तब फिर देशी मिट्टी को कुटवाकर चलनी से छनवाया। पोखर की चिकनी काली मिट्टी मँगाई गई थी। उसे पानी डाल-डालकर आटे की तरह गुन्धाया और फिर रोटी-सी बनवाकर पूरी छाजन पर बँधवा दी गई। ऊपर से अरबी (घुइयां) का पत्ता बँधवा दिया गया, ताकि मिट्टी सूख न सके। यह पट्टी रात को सोने से एक घन्टे पहिले बँधवाई गई।

सुबह होने पर मिट्टी की पट्टी हटाई गई। देखा तो छाजन की सारी मलामत मिट्टी की रोटी पर आ गई थी। रुग्णा ने भी मिट्टी पर चिपटा हुआ मवाद-पीप-सा देखा और उसे भी बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने इस बात में भी प्रसन्नता प्रगट की कि अन्य रातों की अपेक्षा उसे इस रात नींद भी बहुत अच्छी आई थी।

दिन में छाजन पर सरसों का तेल लगा दिया जाता था और ऊपर से एरण्ड-पत्र बांध दिया जाता था। शाम को ४-५ बजे वह पत्ता खोलकर हटा दिया जाता था। पहले दो-तीन दिन इस पत्ते में भी मवाद-सा चिपटा मिला। बाद में साधारण स्थिति ही रही। रोज नीम के पत्तों से धोना, धो-सुखाकर बोरिक पाउडर या भुना हुआ सुहागा लगाना या भुनी फिटकरी लगा देना और उस पर मिट्टी चढ़ा देना, यही काम होता था।

इसतरह लंबे अरसे से ठीक न होने वाला यह रोग ८-१० दिन में बिलकुल ही ठीक हो गया। अब छाजन के गड्ढों से कुछ भी नहीं निकलता था। रुग्णा को अब बिलकुल भी कष्ट न था। मिट्टी बांधते वक्त उसे बड़ी साता मिलती थी। एक माह तक सिर्फ गरम पानी से धो-पोंछकर तेल चुपड़ दिया जाता था और ऊपर से अरण्ड-पत्र भी बांध दिया जाता था। थोड़े दिनों बाद नया चर्म आ गया। अब रुग्णा को कोई भी कष्ट न था। वह पूर्ण स्वस्थ थी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऐसा ही अनुभव एक पुरुष पर करने का अवसर प्राप्त हुआ था। वह भी प्रायः इसी विधि से ठीक हुआ। सचमुच कारगर प्रयोग है।

महिलाओं को चाहिये कि गहने पहनने की अपेक्षा सफाई का विशेष ध्यान रखें, अन्यथा ऐसे अनेकों चर्म-विकारों का शिकार बनना पड़ेगा। अवसर पर इस सुपरीक्षित-विधि को काम में लाइये, अवश्य सफलता मिलेगी।

—आर्तव (रज) शोधक सैट—

इस औषध-संग्रह के प्रयोग से अधिक से अधिक बिगड़ा हुआ भी रज शुद्ध हो जाता है। जिनका मासिक काला, नीला-सा और विकृत रंग का आता हो, ऋतु-समय पर बड़ा कष्ट होता हो, रुग्णा पेट पकड़कर बैठ रहती हो, या दर्द के मारे चिल्लाती हो, तब यह औषध-संग्रह काम में लीजिये। इतना ध्यान रखिये कि रुग्णा बलिष्ठ हो, और उसमें रक्त हो। जिनमें रक्त-आर्तव न हो, उनको पहिले आर्तव-पूर्ण बनाना आवश्यक है। इसविषय का एकप्रयोग आगे दे रहे हैं। इससे लाभ लें।

यह सैट उन महिलाओं पर सुपरीक्षित है, जिनमें 'रज' व्यवस्थित-मात्रा में है, किन्तु वह अशुद्ध है। इन योगों से उसकी शुद्धि सुविधा से होकर, स्त्री का योग्यविकास होता और गर्भधारण शक्ति प्राप्त होती है।

(३०) रजः शोधक उत्तम गोलियां—

काश्मीरी केशर (ताजी लें, पुरानी बेकार है। नकली भी न ले बैठें, असली ही लें। तत्काल फलप्रद प्रयोग के किसी-भाग में नकली-असली चीजों की पहिचानों पर प्रकाश डालेंगे।)

अशोक की भीतरी छाल (ऊपर की मोटी-मोटी छाल थोड़ी-सी अलग करके भीतरी श्वेत-रक्तवर्ण छाल ही लेनी चाहिये। इसे सुखा लें।

जायफल (ताजा और वजनदार लें)

गूलर की अन्तर छाल लेकर, सुखा लें।

— अशोक की छाल का चूर्ण, गूलर की छाल का चूर्ण और जायफल प्रत्येक पांच-पांच तोला लेकर कूट-पीस कपड़छन करके एकदिल कर लें। दूसरी ओर एक तोला केशर लेकर एक पत्थर के चिकने खरल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में डालें और ऊपर से एक छटांक पानी डाल दें और भिगो दें। बीस मिनट बाद केशर उसी पानी में अच्छी तरह बारीक घोंट डालें। जब केशर के सारे रवे घुट जांय तो ऊपर का कपड़छन चूर्ण धीरे-धीरे मिलाते जाओ और घोंटते जाओ। जब सब मिल जांय तो रख लो;सारा पानी अच्छी तरह सूख जाना चाहिये।

इसके बाद चार तोले काले तिलों को बत्तीस तोले पानी में डालकर पकालो। जब पानी आधा पाव रह जाय तो मलकर बारीक कपड़े में छान डालो। इसे उक्त औषध में मिलाकर खूब घोंटो और फिर २-२ माशे की गोलियां (गोला-वटक) बना लो। कठिनाई हो तो दो-तोला गुड़ और मिला लो और कुछ अधिक बड़ी गोलियां बना लो। सूख जाने पर इनका प्रयोग करो।

इस प्रयोग की प्रातः, दुपहर एवं सायं १-१ गोली देनी चाहिये। ऊपर से गरम पानी दें। संभव हो तो काले तिलों के काढ़े में दें। अवश्य ही दो-सप्ताह में रजः शोधन हो जायगा।

यदि क्राथ या गरम-जल के स्थान में नीचे लिखा प्रयोग करें तो और भी ठीक रहे। इसका नाम 'रजः शोधक क्राथ' है—

(३१) रजः शोधक कषाय (क्राथ)—

काले तिल तीन-तोले, तीन-पाव पानी में पकावें। जब चौथाई पानी जल जाय तो उतार कर छान लें। उसमें सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल और भारंगी का ३-३ माशे का चूर्ण मिलादें। उसी में फिर एक या दो साल पुराना गुड़ लेकर चार-पांच तोले मिला लें और घोलकर आग पर रखें। मंदाग्नि से पकावें। जब जलते-जलते आधा पानी शेष रह जाय तो उतार कर छान लें और एक शीशी में भर लें। इसी काढ़े को उक्त गोली खाने के बाद आधा पाव की मात्रा में दें।

काढ़ा पिलाने के बाद मुंह जरा खराब-सा हो जाता है, अतः बाद में गरम पानी से कुल्ला करादें और लौंग या सुपारी दे दें।

अकेला यह प्रयोग नं० ३१ ही उत्तम 'रजः शोधक' है, फिर नं० ३० के साथ इसका प्रयोग 'सोने में सुगन्ध' ही है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(३२) रजः शोधक प्रलेप—

यदि नलों के आसपास सूजन हो, पेट कड़ा-सा दीखे, भारीपन हो और पेडू पर भी ऐसी ही शिकायत हो, साथ ही साथ योनि में भी दर्द हो तो निम्नलिखित प्रलेप-योग अवश्य करिये।

प्रलेप-प्रयोग इस प्रकार है—

मेथी दाना, कालेतिल, उर्द की दाल प्रत्येक १-१ तोले। तिल का तैल २-२॥ तोले, अंदाज से ले लें। सिल पर पहिले की तीनों चीजें पीसें। बाद में थोड़ा-थोड़ा तेल डालकर घोंटते जांय और बारीक प्रलेप बनालें। इस प्रलेप को जहां भी दर्द-सूजन-कड़ापन हो लेप कर दें। पेडू पर भी यदि यह शिकायत हो तो वहां भी यह लेप करना चाहिये।

इसके बाद माल कांगनी, गेहूं की भुसी (चोकर) और नमक (सादा) २-२ तोले लें। दो कपड़े के छोटे-छोटे टुकड़े लेकर, उनमें इन्हें आधा-आधा भरकर पोटली बना लें। फिर जलती अंगीठी पर एक तवा रखें और एक पोटली रखदें। जब वह गरम हो जाय तो उससे लेपवाल स्थान पर सिकाई करें। तब तक दूसरी पोटली आग पर रहे। इस तरह पोटली बदल-बदल कर आधा घन्टे सिकाई करो। ध्यान रहे कि पोटली को तवे से उतारने के बाद अपनी हथेली पर रखकर देखलो कि कहीं वेहद गर्म तो नहीं है? कहीं भूल से रुग्णा को जला मत देना। सिकाई के बाद ऊपर से एरण्ड-पत्र (अंडी का पत्ता) वांध दो और ऊपर से गरम रुई (पहाला) रखकर कपड़ा बांध दो। सब शिकायतें ३ दिन में ही दूर हो जांयगीं।

(३३) आर्तव-शोधक एवं ऋतु-प्रवर्तक वर्ति—

यह प्रयोग तब करें, जब रुग्णा सशक्त हो और ऊपर के प्रयोग काम में ले चुकी हो। इससे रुकाहुआ मासिक चालू होजाता है। रुग्णा में यदि मासिक का रक्त ही न हो तो इससे कुछ लाभ न होगा। ऐसी स्थिति में आगे लिखा 'रजोवर्धक' प्रयोग करें। जबः रजोवृद्धि हो जाय, तब यदि मासिक साफ न हो तो यह प्रयोग करें। वर्ति प्रयोग इसप्रकार है—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन्द्रायण के बीज, जमाल गोटे की जड़ (दन्ती), बड़ी पीपल (गजपीपल), मैनफल और पुराना गुड़ सब अलग-अलग दो-दो तोला लें। इसको कूट पीस कर, थोड़ा पानी मिला-मिलाकर, बांस की सींक के आधार पर एक ५ अंगुल लम्बी और छोटी अंगुली-सी मोटी बत्ती बना लें और छाया में सुखा लें। पर्याप्त कड़ी हो जायगी। नीचे के भाग में मजबूत धागा भी बांध रखें, ताकि बत्ती बाहर निकालने में सुविधा रहे। फिर मधु (शहद) चुपड़कर बत्ती योनि में रखें। जलन होने पर निकाल लें और थोड़ी देर बाद फिर रखदें। ऋतु-प्रवृत्ति होगी और स्थानीय-विकार भी दूर होंगे। प्रयोग के बाद यदि वहां दर्द-जलन आदि रहे तो बाद में घी लगाकर उसे ठीक किया जा सकता है।

ऐसे समय में रुग्णा को मूंग की दाल, आंवला, राई, उड़द, तिल जैसे पदार्थ खाने को देने चाहिये। इस आहार-व्यस्था पर पूरा ध्यान रखना आवश्यक है।

इन 'चारों प्रयोगों का यह सैट' अपने विषय में अद्वितीय है। जहां भी इसका प्रयोग सावधानी से किया जायगा, सफलता मिलेगी।

(३४) बालिकाओं के अस्थिक्षय पर विशेषानुभव—

यह अनुभव बड़ा ही जोरदार है। अनेकों को हुआ होगा, किन्तु उपेक्षा के कारण उन्हें इसका विशेष-परिज्ञान न होगा। आप अत्यन्त ध्यान से इसे देखिये। समय पर सतर्क रहिये। प्रत्येक गृहस्थ के लिये यह अतीवोपयोगी है।

कन्यायें प्रायः सर्वत्र एक उपेक्षा का विषय रही हैं। पुत्र-जन्म की भांति, भारत में, कन्या-जन्म को महत्व नहीं दिया जाता। बाद में भी यही हाल रहता है। किन्तु कन्यायें फलती-फूलती और बड़ी होती हैं, तब उनकी उपेक्षा का असर यहां पर काम करता है। जिन कन्याओं के सिर के केश तेजी से बढ़ते हों, उनमें जूं बहुत अधिक पड़ते हों, प्रतिदिन साफ करने पर भी उनकी संख्या उतनी ही रहती हो, दुबला-पतला शरीर हो तो स्पष्टतः समझ लीजिये कि वह कन्या या नवयुवती 'अस्थिक्षय' की ओर जा रही है। उपेक्षा होने पर वह 'स्पाइनल टी.बी.'

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(Spinal T. B.) या 'Bone's T. B.' की शिकार हो जायगी। ऐसी कन्या या नवयुवतियें उस रफ्तार से नहीं बढ़ती, जिस रफ्तार से बढ़नी चाहिये। प्रायः उनका मासिक ठीक नहीं आता और स्तन भी नहीं बढ़ते, वे मात्र उभरकर रह जाते हैं। आवाज और मस्तिष्क दोनों उनका अच्छा साथ देते हैं, किन्तु उनसे कोई काम नहीं होता। सोते में ऐसा लगता है, जैसे यह मरी पड़ी हो। आंखों में गड्ढे रहते हैं।

इस स्थिति में बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। रुग्णा को दूध पर विशेष रूप से रखिये। शरीर पर मालिश का जोरदार प्रबन्ध रखना चाहिये। प्रतिदिन मालिश होनी चाहिये। जाड़ों में दुपहर में धूपमें मालिश करायें और गरमियों में प्रातः सूर्योदय के समय। रीढ़ की मालिश पर विशेष-ध्यान रखें सीने पर भी विशेष-मालिश करावें। प्रायः ये रोग इसीप्रकार सरलता से जीते जाते हैं। ८-१० वर्ष में इस योग का लगभग ५०-६० रुग्णाओं पर, सावधानी से विशेषानुभव प्राप्त किया जाचुका है। अवसर पर उपेक्षा न करें। इस उपायको अवश्य काममें लें।

पति-प्रसग से बचना अत्यावश्यक है। बालिका, किशोरी और नवयुवती इनमें अवस्थानुसार इस विषय का यथायोग्य ध्यान रखना चाहिये। साथ ही नीचे लिखा हुआ 'रसायन-प्रयोग' करना चाहिथे।

(३५) सुलभ महिला-रसायन—

'मालिश एवं भोजन में दुग्ध-प्रयोग' के साथ इस योग का प्रयोग करने से महिलाओं में प्रायः छोटे-मोटे रोग जड़ ही नहीं जमा पाते। इसलिये यह प्रयोग प्रारम्भ से और प्रत्येक स्थिति में सुविधा से किया जा सकता है। यह बिलकुल ही निरापद है। प्रयोग इस प्रकार है—

उत्तम लोहभस्म स्वर्णमाक्षिक भस्म हर्रा बहेड़ा आंवला सोंठ कालीमिर्च और पीपल। — प्रत्येक एक-एक तोले लें।

—भस्मों को छोड़कर, शेष चीजों का कपड़छन चूर्ण बना लें। बाद में भस्में मिलाकर घोंट लें और शीशी में भरकर रख लें। इसकी मात्रा १ माशे की है। प्रातः या सायं योग्यानुपान में चटाकर ऊपर से दूध दे-देना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बालिकाओं के लिये इसी में 'बालसुधा' (मीठी लकड़ी या मुलहठी का कुटा-पिसा कपड़छन चूर्ण) आठ तोले और मिला लें और फिर घोंट लें। इसकी मात्रा अवस्थानुसार ४ रत्ती से १ माशा तक दे सकते हैं

बालिकाओं और किशोरियों के शरीर-बढ़ाव के लिये यह प्रयोग बहुत ही अच्छा प्रमाणित हुआ है। बेफिक्री के साथ यह प्रयोग करें।

'यह दुबली ही रहती है, बढ़ती नहीं'—ऐसी शिकायतों पर यह प्रयोग अवश्य काम में लें। छोटे न बढ़ने वाले बच्चों पर भी इसका उपयोग किया जा सकता है। उत्तम प्रभावक है।

(३६) महिला-मित्र—

यह प्रयोग महिलाओं के अनेकों रोगों में बहुत अच्छा काम करता है। जैसे—प्रदर, प्रसूतविकार, विभिन्न प्रकार के योनि रोग, कमरदर्द, हड़फूटन, सिरदर्द, सीने का दर्द, हाथ पैर की निर्बलता, मासिकावरोध, नलों की शिकायतें, पेट में खून जमना आदि विकार सुविधा से ठीक हो जाते हैं। प्रयोग में मिलने वाली चीजों से ही यह अनुमान सरलता से किया जा सकता है। 'महिला-मित्र' का प्रयोग—

शतावर, बड़े-बड़े कौंच के बीज, वायविडंग	५-५ तोले।
सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, अजमोदा	४-४ तोले।
गोखरू, नागौरी असगंध और विधारा	८-८ तोले।
अर्क पुष्प (आक-अकौए के फूल)	दस तोला।
शुद्ध कुचला (कपड़छन किया हुआ)	तीस तोला।
विशुद्ध महिषाक्ष-गूगल	डेढ़-सेर।
उत्तम-स्वर्णमाक्षिक भस्म	पांच तोले।

—गूगल को यथाविधि शुद्ध करके, चूर्ण करने योग्य सब द्रव्यों का बारीक कपड़छन चूर्ण करले और बादमें गूगल और घीके साथ मिलालें। आधा सेर तक घी लग सकता है। कभी-कभी इससे भी अधिक की आवश्यकता होती है।

इसे लोहे के हमामदस्ते में खूब कूटना चाहिये। यदि गिनकर एक लाख जोरदार चोटें लगाईं जांय तो यह प्रयोग अत्युत्तम तैयार हो जाता है। काली-काली चमकदार औषध खूब कुट जाने के बाद आधे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

माशे की गोलियां बना लें। १-१ गोली प्रातः-सायं गरम दूध या गरम पानी से दें। उक्त सभी विकार दूर होंगे'। महिलाओं के लिये परमामृत है। बड़ा जोरदार प्रयोग है। क्योंकि महिलाओं में वातविकार से ही अधिकतर रोग पैदा हुआ करते हैं। वातविकारों का जोरदार दुश्मन यह योग उन रोगों को बहुत शीघ्र ठीक कर देता है।

महिलाओं की भांति यह वृद्ध-पुरुषों एवं वातव्याधि-ग्रस्तों के लिये भी परमोपयोगी है। सुपरीक्षित है।

(३७) मृतवत्सार्थ शास्त्रीय-पद्धति—

यह प्रयोग वैद्यों के लिये इशारा है। आम-जनता इससे लाभ नहीं उठा सकती, फिर भी इससे उसे भी बड़ी सहायता मिलेगी। जिनके बच्चे हो-होकर मर जाते हैं, जीवित नहीं रहते, हर वार यही हाल होता है; उनके लिये यह प्रयोग-परिपाटी उत्तम है। अवसर पर स्वयं या योग्य-चिकित्सक द्वारा काम में लें।

ऐसी महिलाओं को शास्त्रीय 'कामदेवघृत' प्रातः सायं ६-६ माशे की मात्रा में दें। शाम को भोजन के बाद 'अश्वगंधारिष्ट' पिलावें। २-२ दिन के अन्तर से योनि में पिचकारी दें। पिचकारी के लिये 'शतावरी-तैल' चार तोला और सुखोष्ण (गुनगुना) गाय का दूध पावभर; दोनों मिलाकर देना अत्युत्तम है।

इसके साथ ही साथ योनि-मार्ग में भी उत्तम औषध (प्रायः जन्तुघ्न) रखने की आवश्यकता है। कोई भी एक प्रयोग सुविधानुसार करें।

१—चौकिया सुहागा (आग पर फुलाया हुआ) और यशदभस्म।

२—भुना सुहागा और जिंक आक्साइड।

३—जिंक आक्साइड और बोरिक एसिड।

—इनमें से कोई भी चीज ३-४ रत्ती की मात्रा में लेकर एक तोले ग्लिसरिन में खूब मिला लें और रुई तर करके योनि में रखें। ध्यान रखें कि जिंक आक्साइड या यशदभस्म थोड़ी मात्रा में और बोरिक या भुना सुहागा अधिक मात्रा में लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन उपायों से कई महिलाओं का इलाज किया गया है। बच्चों के लिये भी एक अन्य खाने की औषध दी जाती है, उसका वर्णन चौथे भाग में दिया जायगा। मूल्य दो-रुपया होगा।

इसके साथ ही कम से कम एक वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहें।

(३८) भयंकर वायुशूल, पेटदर्द, अफारा आदि में सरल-योग—

यह प्रयोग अपने ढंग का बड़ा ही सरल और शीघ्र लाभप्रद है। जब भयंकर पेटदर्द हो रहा हो और वायु का शूल तेजी पर हो, पेट फूला हो, ऐसी स्थिति में निम्नलिखित प्रयोग फौरन बेधड़क काम में लें। यह सर्वत्र सुलभ योग अच्छा लाभप्रद है। प्रयोग इसप्रकार है—

गाय का दूध २० तोला। पानी बीस तोला।

लालमिरच मय बीजों के पूरी पांच नग।

—इनको धीमी आग पर रखें। जब पानी जल जाय और दूध-मात्र शेष रहे तो छान लें। हलके हाथ से निचोड़ भी लें। इसमें थोड़ा-सा मीठा या चीनी मिलाकर गरमागरम पिलावें। भयंकर वायुशूल, पेटदर्द, पेट फूलना आदि विकारों में अच्छा काम करने वाला प्रयोग है।

(३९) मनमाना उत्तम-विरेचक—

इस प्रयोग से आप इच्छानुसार गिनकर विरेचन करा सकते हैं। इससे कब्ज तो मिटता ही है, साथ ही साथ पेट की सफाई भी ठीक तरह हो जाती है फिर भी प्रयोग जरा सावधानी से काम में लें। तत्काल-फलप्रद और प्रभावक प्रयोग है। प्रयोग इस प्रकार है—

मुनक्का दाख ३ माशे। गुलाब के फूल दो माशे।

सनाय तीन माशे।

—इन तीनों को मिलाकर गरम दूध से लें। जब दस्त हो जाय तो उस पर आधा सेर के लगभग गरम पानी पी डालें। फिर एक दस्त होगा। उसके बाद भी यदि गरम पानी पियेंगे तो एक दस्त और होगा। इस तरह से मन चाहे दस्त किये जा सकते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जब दस्त बन्द करने हों तो गरम पानी पीना बन्द कर दीजिये और मूंग की दाल की खिचड़ी (समभाग दाल-चावल लें) खूब घी मिला कर खाओ। दस्त बन्द हो जांयगे।

इसे एक प्रकार का 'इच्छाभेदी' ही समझिये।

(४०) हमेशा के लिये बाल साफ—

ध्यान रहे कि इस प्रयोग को जननेन्द्रिय के बाल, बगल के बाल आदि स्थानों के बाल साफ करने के काम में भूलकर भी न लें। क्योंकि ऐसा करने से पुरुषों में नपुन्सकता और महिलाओं में वन्ध्यत्व बढ़ता है, इसके साथ ही साथ अन्यान्य रोग भी घर कर लेते हैं।

यह प्रयोग उन महिलाओं के लिये है, जिनके दाढ़ी-मूंछ की जगह के रोम बालों की तरह बढ़ जाते हैं, और भद्दे मालूम देते हैं। प्रायः कई स्त्रियां दाढ़ी-मूंछ वाली पाई जाती हैं। उन्हें बड़ी शर्म लगती है। अतः उन्हीं के लिये यह प्रयोग है। प्रयोग इस प्रकार है—

वेरियम सल्फाइड (अंग्रेजी बददूदार चीज है, सब जगह अंग्रेजी दवाखानों या औषध-विक्रेताओं के यहां मिल जाती है।) ५ तोले।
कपूर १॥ माशे। आरारोट दस तोले।
कबाब चीनी (शीतल चीनी) १॥ माशे। खड़िया मिट्टी ३ माशे।

—इनका चूर्ण बनाकर एक शीशी में रखलें। आवश्यकता के समय इसमें पानी मिलाकर मोटा-लेप जैसा बना लें और लेप कर दें। ५-६ मिनट में तौलिया से रगड़कर साफ करदें। बाल साफ हो जांयगे।

इतना न करना चाहें तो किसी भी कम्पनी का 'बालसफा साबुन' लेप की तरह लगाकर तौलिये से रगड़कर सफाई करलें। बाद में—

खुरासानी अजवायन (इसी नाम से बाजार में मिल जाती है) और अफीम ४-४ रत्ती लेकर असली 'सिरके' में खूब घोंट-पीस लें और बाल उगने के स्थानों में लेप कर दें।

यह उपाय ५-७ बार करने से फिर हमेशा के लिये उस स्थान पर बाल उगना बन्द हो जायगा। मामूली लगता है किन्तु आवश्यकता पर अवश्य काम में लाइये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(४१) गर्भ न रहे 'वन्ध्याकरण' सन्तति-निरोध प्रयोग—

प्रयोग तो अवश्य बताया जा रहा है किन्तु प्रयोग करिये सावधानी से। जो लोग बार-बार बच्चा हो जाने से बड़े परेशान रहते हैं; १५-१६ बच्चे हो जाने पर भी लगातार सन्तान होना जिनका प्रतिवर्ष का नियम बन गया है, उनके लिये प्रायः यह सन्तति-निरोध का प्रयोग है। फिर भी इस प्रयोग को सावधानी से करें। कभी-कभी प्लेग-महामारी-हैजा जैसे अप्रिय-प्रसंग आ पड़ते हैं, उसमें कुटुम्ब का कुटुम्ब साफ हो जाता है। तब यह किया हुआ प्रयोग बड़ा ही दुःखदाई प्रतीत होता है। इसलिये संयम से ही सन्तति-निरोध करिये। अत्यन्त आवश्यकता समझें तभी इस प्रयोग को काम में लाइये। प्रयोग यह है—

हिंगुलोत्थ पारद (इसकी पूर्ण-विधि वैद्य जानते हैं, हम भी तृतीय भाग में इस पर पूरा प्रकाश डालेंगे), शुद्ध गेरू, सफेद फिटकरी, ढाक के बीज, तालीस पत्र प्रत्येक १-१ तोला लें। पारे को छोड़कर, शेष चीजों को कूट-पीस लें और बारीक कपडछन चूर्ण करलें। बाद में पारा मिलाकर खूब घोंटें। कम से कम २४ घन्टे घुटाई अवश्य हो।

इसकी मात्रा तीन माशे की है। ऋतु से निवृत्त हो जाने के बाद चौथे दिन से यह प्रयोग शुरू करे। इसको बेर की लाख के काढ़े से देना चाहिये। इसका प्रयोग दस-बारह दिन तक (चौथे दिन से सोलहवें दिन तक) करना चाहिये। फिर बन्द कर दें। दूसरे माह में भी फिर इसी प्रकार प्रयोग करें। बाद में फिर तीसरे माह में भी १०-१२ दिन तक यह औषध दें।

तीन माह तक पुरुष पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहे। महिला शीतल-पदार्थों का विशेष-प्रयोग न करे। महिला 'जन्मभर को वन्ध्या' हो जाती है।

एक बार फिर भी सावधान कर देने की आवश्यकता है कि इस प्रयोग को आपद्-काल में ही करिये। बार-बार गर्भ धारण से यदि महिला का मौत के मुँह में जाने का खतरा हो, तभी इसे काम में लें। क्योंकि इसके बाद फिर कोई अन्योपचार काम नहीं करता। इससे अधिकतर मासिक भी रुक जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

— प्रेतबाधा-नाशक सैट —

इस प्रयोग से प्रेत की बाधा, भूत-चुड़ैल की बाधा, खोर प्रभृति की अला-बलायें सबकी सब आराम से ठीक हो जाती हैं। तिल की ओट पहाड़ है। ढेर रुपया मिलने पर भी ये प्रयोग किसी को नहीं बताये गये थे। आज अब प्रतिज्ञा के कारण निष्कपट रूप से आपके सामने दिल खोलकर रख दिये हैं। अवसर पर काम लीजिये। यन्त्र एवं मन्त्र-प्रयोग दो-रुपया मनी-आर्डर से भेजकर मँगाइये। प्रेत-बाधानाशक प्रयोग इस प्रकार हैं—

(४२) प्रेतबाधा-निवारक वटी—

कालीमिर्च और शुद्ध कालासुरमा बराबर-बराबर लेकर ग्वारपाठे के रसमें खूब बारीक घोंट डालो। कालासुरमा शुद्ध करके ही डालो। शुद्ध करने की विधि 'आयुर्वेद-चिकित्सक' वर्ष ५२' की फाइल में सविस्तार देखो। फिर १-१ रत्ती की गोलियां बना डालो। बस, दवा तैयार है। प्रातः-सायं १-१ वटी गरम पानी से दो। साथ ही साथ भूत-प्रेत-चुड़ैल-डांकिन के उपद्रव पर १ गोली पानी में घिसकर आंखों में आंजो भी। बस, काम बन जायगा। बाधा फौरन कमजोर पड़ जायगी। साथ ही नीचे लिखा हुआ 'धूनी' का प्रयोग भी अवश्य करो।

(४३) डाकिनी-बाधाहर धूनी—

इस धूनी से भूत-प्रेत, शाकिनी-डाकिनी, चुड़ैल-खोर आदि-आदि की ऊपरी बाधायें आनन-फानन में मिट जाती हैं। जलते हुए कोयलों पर यह धूनी देनी चाहिये। धूनी का प्रयोग इस प्रकार है—

सिताब की पत्ती, गूगल, कौड़िया लोबान, चन्दन का बुरादा।

—ये सब बराबर-बराबर लेकर खूब मिला लो। और चीजें न मिलें तो सिर्फ गूगल और कौड़िया लोबान ही ले लो। इसकी धूनी देने से जहां-जहां तक धुँआ जायगा, वहां-वहां तक भूत-प्रेत बिलकुल न रहेंगे। साथ ही उनका कोई उपद्रव भी न चलेगा। सुपरीक्षित है।

आवश्यकता पर इन प्रयोगों को अवश्य काम में लाइये। कभी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निराश न होना होगा। मन्त्र-यन्त्र प्रयोग इस तरह स्पष्ट नहीं किये जाते। उन्हें आप दो-रुपये भेजकर ही मंगाइये।

टी. बी. से बचाने वाले सुपरीक्षित-प्रयोग—

ये प्रयोग टी. बी. से संरक्षण करने में अपना सानी नहीं रखते। प्रकृति के साथ रहना; मालिश, स्नान, सूर्य की रोशनी, खुली हवा, फलाहार, शाकाहार, उत्तम दूध-दही आदि की व्यवस्थित-परिपाटी टी. बी. होने ही नहीं देती। मन में भी किसी प्रकार की चिन्ता को स्थान न दे। साथ ही अति मैथुन और बेहद-परिश्रम से बचे। ऊपर लिखी १-१ बात हजार-हजार की है। इशारे में 'गागर में सागर' भर दिया है। विस्तार से लिखने पर तो एक पुस्तक ही बन जायगी।

ऊपर लिखी हुई बातों पर पहिले ध्यान रखने के साथ, नीचे लिखे प्रयोगों पर भी पूरा-पूरा ध्यान रखिये। ये प्रयोग रामवाण हैं, कभी व्यर्थ नहीं जाते। अधिक प्रशंसा करना पुस्तक के कीमती पृष्ठ रंगना है।

(४४) टी. बी. का काल—

यह प्रयोग तपेदिक, टी. बी., राजयक्ष्मा, कंजम्पशन का काल है। इससे टी. बी. के कीटाणु शरीर में नहीं टिकते। प्रयोग यह है—

कालीमिर्च असली गिलोय (गुरबेल) का सत्व, छोटी इलायची के दाने, असली वंशलोचन और शुद्ध भिलावा —प्रत्येक सम भाग।

—इन सबको मिलाकर बारीक कपड़छन चूर्ण करले। एक अत्यन्त नामी जबर्दस्त कम्पनी का यह प्रयोग है। बड़ी कठिनाई से हाथ लगा। बस, आप इसे तैयार कर लीजिये और शीशी में भर लीजिये।

इसकी मात्रा एक रत्ती की है। प्रातः, दुपहर और सायं मक्खन में, या मलाई में या असली घी में मिलाकर चटावें। बेहद लाभप्रद है।

(१५) तपेदिक-नाशक वटी—

इस प्रयोग से हाड़ों में भीतर घुसा हुआ ज्वर, पीलापन, कब्ज एवं अन्यान्य विकार सरलता से दूर हो जाते हैं। दवा बहुत ही सस्ती है। बड़े ही परिश्रम से मिली। काम फौरन करती है, किन्तु

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कहीरा के फल का गूदा पावभर, कालीमिर्च एक छटांक। दोनों को तुलसी के पत्तों के रस में ४८ घन्टे घोंटकर ४-४ रत्ती की गोलियां बनालो। प्रातः-सायं १-१ वटी गरम पानी से देते रहो। बहुत ही बढ़िया 'तपेदिक-नाशक' प्रयोग है। कभी बेकार नहीं जाता।

(४६) क्षयनाशक धूनी का प्रयोग—

इसके प्रयोग से क्षय के कीटाणु पनप नहीं पाते। यह देशी प्रयोग बहुत ही ज़ोरदार काम करता है। प्रत्येक गांव में प्रतिदिन इसका प्रयोग होना ही चाहिये। शहर वाले वायु-शुद्धि एवं कीटाणु-प्रतिबंध के लिये यह प्रयोग अवश्य करें। प्रयोग यूं है—

गूगल दस-तोले गंधक आधा-तोला नीम की पत्ती-दो-तोले।
अगर दो-तोले राल दो-तोले कसीस आधा-तोला।
हीरा हींग आधा-तोला और मैनसिल आधा-तोला।

—इनको जौकुट करके खूब मिलालो और जलते कोयलों पर धूनी दो। क्षय, प्लेग, हैजा आदि सभी प्रकार के कीटाणुओं को मार भगाने में रामबाण है। यह धूनी कभी फेल नहीं होता। सुपरीक्षित है।

(४७) जीर्ण-ज्वरान्तक पेय—

यह प्रयोग शास्त्रीय है। प्रत्येक व्यक्ति और चिकित्सक इनसे परिचित है,इसलिये सिर्फ नाममात्र लिखकर ही हम इशारा कर रहे हैं।

अश्वगंधारिष्ट और द्राक्षासव।

—भोजन के बाद दोनों चीजें १-१ तोला लेकर पिलाओ। ध्यान रहे कि ये चीजें अत्यन्त उत्तम ही लें। न मिलें तो फिर हमसे मंगावें।

टी. बी. के खतरे से बचने के लिये यह प्रयोग-क्रम बड़ा ही व्यवस्थित है। प्रारंभ में कतिपय आवश्यक प्रयोग 'सुलभ महिला-रसायन' आदि दिये हैं। उनपर ध्यान रखते हुए यह प्रयोग करें। कभी हताश न होना होगा। आग बढ जाने पर कुआ खोदने से कोई भी लाभ नहीं। यह समझ रखें।

नोट—भिलावा-शोधन,अश्वगंधारिष्ट एवं द्राक्षासव के योग आदि तीसरे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भाग में देंगे। तीसरे-भाग का मूल्य दो-रुपया (राज-संस्करण का ढाई रुपया) होगा। पृष्ठसंख्या १७५ होगी।

(४८) महिला-रोगों पर रामबाण 'चांदी की गोली' —

एक कम्पनी का पेटेण्ट प्रयोग है, किन्तु हमने नाम बदल दिया है। गुणों का वर्णन विस्तार से न करके संक्षेप में ही करेंगे। प्रयोग यह है मुसव्वर (एलवा), जटामांसी, हीराकसीस, त्रिबंगभस्म, प्रवालभस्म उत्तम लौहभस्म और कुचला — प्रत्येक ५-५ तोले।

— इनमें से चूर्ण करने योग्य द्रव्यों का चूर्ण करके बारीक कपड़छन कर डालो। बाद में भस्में मिलाकर घोंट लो। दो-घन्टे बाद आधा-सेर ग्वारपाठे का रस डालकर खूब घुटाई करो। जब गोली बनाने योग्य हो जात तो २-२ रत्ती की गोलियां बनालो। प्रातः-सायं १-१ वटी उत्तम गोदुग्ध के साथ दो। गोली निगलें, चबावें नहीं।

इससे खून की कमी, हाथ-पैर-कमर का दर्द, रक्त या श्वेतप्रदर, हड़फूटन, सीने (हृदय) में दर्द बना रहना, हमेशा आराम करने को दिल चाहना, किसी काम में मन न लगना, स्तनों का न बढ़ना आदि विकार सरलता से ठीक हो जाते हैं। बीमारी के बाद की कमजोरी पर इसका प्रयोग करने से उत्तम लाभ प्राप्त होता है। बादी और गरम चीजों से परहेज रखें। यह प्रयोग शास्त्रीय-योगों का उत्तम मिश्रण है।

चालाकी के लिये इसे 'सिल्वर-कोटेड' बना लिया जाता है। मशीनों से चांदी के वर्क चढ़वा लिये जाते हैं। इससे देखने वालों को यह 'चांदी की गोली' मालूम पड़ती है। आप 'सोने के वर्क' चढ़वाकर इसे 'सोने की गोली' बना सकते हैं।

इससे प्रारम्भिक हिस्टेरिया, मासिक-धर्म की विकृतियां एवं अन्यान्य महिलाओं के विकार सुविधा से ठीक हो जाते हैं। बीमारी की स्थिति के अनुसार कम से कम या अधिक से अधिक दिनों तक इसका सेवन किया जा सकता है। यह योग आर्तव-शोधक, मस्तिष्क-विकृति नाशक एवं मासिक पर उत्तम प्रभावक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(४६) गर्भस्राव और गर्भपात की प्रसिद्ध औषध—

इन रोगों की किसी भांति की भी आशंका होने पर आप 'पत्थर का दिल' जिसका उर्दू नाम 'कल्बुल हिज्र' है, याद रखिये। वर्तमान वैद्य-समाज इस चीज को गर्भस्राव या गर्भपात में तेजी से काम में ले रहा है। जिन्हें एक माह या डेढ माह में गर्भस्राव होजाता हो, या किसी के तीन-माह खराब हो जाते हों अथवा वाद में गर्भपात हो जाता हो तो गर्भ के प्रारंभ से ही निम्नलिखित प्रयोग करें।

कल्बुल हिज्र (पत्थर का दिल) असली वंशलोचन १-१ तोले।
कमलगट्टा की मिंगी ५ तोले मिश्री ८ तोले।

—इन सबको खूब बारीक करके घोंट पीसलें और शीशी में डाट लगाकर रखलें। आवश्यकता पर १ माशे की मात्रा में, प्रातः सायं ताजे गोदुग्ध से दें। अच्छा हो कि इसे गर्भ के प्रथम मास से ही काम में लिया जाय। लगातार नौ माह तक काम में लेने से बच्चा स्वस्थ और हृष्टपुष्ट ही पैदा होगा।

नीचे लिखी बातों पर और भी ध्यान रखें—

१—प्रतिदिन प्रातः फिटकरी के पानी से डूस दें।

२—यदि रुग्णा कमजोर हो तो पूरा विश्राम दें।

३—रुग्णा का सिरहाना नीचा और पांयत ऊंचा रखें।

ध्यान रहे कि औषध न भी की जाय किन्तु इन तीनों बातों पर ध्यान रखा जाय तब भी गर्भस्राव या गर्भपात न होगा। औषध-सेवन के साथ-साथ तीनों बातों पर ध्यान रखना 'सोने में सुहागा' है।

(५०) सरल मासिक-खोल —

मासिक खोलने के लिये यदि सरल औषध का प्रयोग करना हो तो यह प्रयोग करिये। सर्वत्र सुलभ यह योग इस प्रकार है—

एलवा, हीरा हींग, मंडूर, कसीस और भुना हुआ सुहागा।

—इन सबको बराबर-बराबर लेकर १-१ रत्ती की गोलियां बनालो। ध्यान रहे कि घीग्वार के रस में घोंट कर ही ये गोलियां बनाई जांयगी। गोलियां शीशी में भरलें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मासिक शुरू होने पर २-२ गोली, कपास की जड़ के काढ़े में पुराना गुड़ मिलाकर लें। दिन में २ से ३ बार तक यह प्रयोग किया जा सकता है। यदि आर्तव की कमी हो तो आर्तव-वर्धक प्रयोग काम में लीजिये; बाद में फिर यह प्रयोग करिये। यह प्रयोग वहीं काम में आता है, जहां मासिक रुक-रुककर थोड़ा-थोड़ा होता है। जिन्हें मासिक होता ही नहीं, उनपर यह प्रयोग कारगर नहीं होगा।

—हिस्टेरिया-नाशक सैट—

यह प्रयोग-क्रम हिस्टेरिया पर अच्छा प्रभावक है। एक ख्यात-नामा चिकित्सक से बड़ी कठिनाई से प्राप्त हुआ है। आप इसे बनाकर अवश्य काम में लें।

(५१) योषापस्मारान्तक वटी—(हिस्टेरिया की गोलियां)

अकीक भस्म, वैक्रान्त भस्म, बच, जटामांसी, भीमसेनी कपूर, खुरासानी अजवायन और मुक्तापिष्टि — प्रत्येक १-१ तोला।

—इन्हें यथायोग्य घोंट-पीसकर फिर 'गाजवां के अर्क' में घोंटकर १-१ रत्ती की गोलियां बनालो। प्रातः-दुपहर-सायं १-१ गोली 'अर्क गाजवां' से ही दो। इससे हृदय एवं मस्तिष्क का उत्तम-शक्ति प्राप्त होगी और बीमारी हमेशा को मिट जायगी।

(५२) हिस्टेरिया पर लाभप्रद 'रसायन'—

पीपलामूल, बच, जटामांसी, मुक्तापिष्टि — सब समभाग।

—घोंट-पीसकर बारीक करलो। मात्रा २ से ४ रत्ती तक, गुलकंद या अनार के रस में दें। प्रातः-सायं दिन में दो-बार ही दें। उत्तम लाभ दर्शक हैं। परहेज से अवश्य रहें।

(५३) हिस्टेरिया-नाशक तैल—

इस मिश्रित तैल-योग की, सिर पर मालिश करने से नींद न आना, पागलपन, चक्कर आना, फिट, दौरे आदि सुविधा से ठीक हो जाते हैं। प्रयोग इसप्रकार है—

गुलाब का तैल, बादाम का तेल, काहू का तेल और कद्दू का तैल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

— चारों बराबर-बराबर लेकर खूब मिलालो। सिर पर या माथे पर इसे हलके हाथ से मलो। बढ़िया नींद आयगी। दिमाग को शक्ति प्राप्त होगी। सिर-दर्द मिटेगा, स्मरण-शक्ति बढ़ेगी और भी अनेक शिरो-रोग दूर होंगे।

यह स्त्री और पुरुष सभी के फिटों पर तत्काल-फलप्रद है।

(५४) हिस्टेरिया-नाशक 'अमृत-पेय'—

ऐसी रुग्णाओं को भोजन के बाद अर्जुनारिष्ट और अश्वगंधारिष्ट मिलाकर प्रातः-सायं दें। बस, इतना ध्यान रहे कि ये दोनों ही अरिष्ट उत्तम हों। स्वाद-गंध दोनों मनोहर हों। अन्यथा लाभ न होगा।

(५५) हिस्टेरिया नाशक 'अमीरी-प्रयोग'—

अर्जुन का सत्व, मुक्तापिष्टि (गुलाब-जल से बनी) और सामने बैठकर कुटवाये हुए असली सोने के उत्तम वर्क।

—ये सब सम-भाग लेकर अर्क गावजवां में बारीक घोंट डालो। इसकी मात्रा चार चावल से डेढ़-रत्ती तक है। अमीरी प्रयोग है। योग्य अनुपान से लें। 'गिलोय-सत्व' की भांति ही अर्जुन-वृक्ष की छाल का सत्व बनता है; बनालें। या फिर तृतीय-भाग मंगवाकर उसमें देखें।

—ये पांचों ही प्रयोग अत्युत्तम और सुपरीक्षित हैं। सुविधानुसार १ या २-३ को मिलाकर काम में लें।

(५६) उत्तम प्रदरान्तक-प्रयोग—

इस प्रयोग को प्रदर का काल ही समझिये। प्रारंभ में मैं यह योग बहुत ही काम में लेता था। इसके बाद मुझे और भी सस्ता अनुपम योग मिला, उसे आगे दे रहा हूं। किन्तु यह प्रयोग भी बहुत अच्छा है। प्रयोग यह है—

बिना छिलके के इमली के बीज	जामुन की गुठलियां
आम की गुठली की भीतरी गिरी	सफेद बढिया कत्था
माजूफल और मोचरस	—प्रत्येक ४-४ तोले।
सेलखड़ी सबके बराबर अर्थात्	२४ तोले।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

—इन्हें कूट-पीस कपड़छन करके बारीक चूर्ण बनालो। जितना ही बारीक होगा, उतना ही विशेष फलप्रद होगा। इस प्रयोग का योग्यानुपान से प्रयोग करने पर सभी प्रकार के लाल-श्वेत-काले-पीले प्रदर अवश्य ठीक हो जाते हैं। अनुपानों के विषय में प्रयोग नं० २८ अवश्य देखिये। हजारों पर सुपरीक्षित है। शीघ्र लाभ दिखाता है।

(५७) उत्तम गर्भरोधक योग—

यह प्रयोग बड़ा ही सरल है। मेरे एक मित्र-वैद्य का प्रयोग है। गर्भ-रोध करने में वे इसका प्रयोग करते हैं। उन्हें सफलता मिलती है। एक बढिया योग हमसे प्राप्त करने के बाद उन्होंने अपना यह योग हमें बताया। इसकी उत्तमता अवश्य विश्वसनीय है। प्रयोग इसप्रकार है—

ढाक के बीज वड़ी हरड़ की गुठली की मिंगी
हाथी की सूखी हुई लीद —प्रत्येक सम-भाग।

—ढाक के बीजों को तवे पर जलावें और पीस डालें। बाद में मिंगी और लीद दोनों को कूट-पीस लें और दूने करेले के रस में खूब घुटाई करें। घुटते-घुटते जब बिलकुल सूख जाय तो शीशी में भरलें।

इसकी मात्रा एक से डेढ माशा तक है। दिन में तीनबार दें। प्राय: मासिक के प्रारंभ से सात दिन तक देते हैं। दूसरे और तीसरे माह में भी यह प्रयोग करना आवश्यक है। मित्र-वैद्य के कथनानुसार यह शत-प्रतिशत काम करता है। आवश्यकता पर आपभी परीक्षा कर देखें।

(५८) वन्ध्यात्व-नाशक 'सन्तानदाता प्रयोग'—

महिला-रोग चिकित्साङ्क (द्वितीय-भाग या उत्तरार्द्ध) में 'वन्ध्या-चिकित्सा' शीर्षक से एक विस्तृत लेख प्रकाशित हो रहा है। उसमें उपयोगी सारी बातें आ गई हैं। इस भाग में तो प्रयोग-संग्रह है, अतः एक लाभदायक प्रयोग नीचे दिया जा रहा है।

'संतानदाता' नाम से अनेकानेक योग प्रचलित हैं। हजारों व्यक्ति विभिन्न नामों से, कोई मर्दाने नाम से और कोई जनाने नाम से, खूब पैसा कमा रहे हैं। नुसखा वे प्रकाशित करते हैं तो ऐसा कि 'न नौ-मन तेल हो, न राधा नाचे।' दवा आप खुद बना नहीं सकते,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अतः उन्हीं के यहां से मंगाइये। किन्तु यहां यह बात नहीं है। सच्चा प्रयोग बिना लुकाये-छिपाये आपकी भेंट है। आवश्यकता पर काममें लें।

प्रयोग करने से पहिले रजोवर्धक और रजः शोधक योग अवश्य काम में लेलें। पुरुष भी वीर्य-वर्धक और वीर्य-शोधक प्रयोग करले। तब महिला इस प्रयोग को करके, गर्भाधान में प्रवृत्त हो।

सन्तानदाता-प्रयोग इसप्रकार है—

शिवलिङ्गी के बीज, नागौरी असगंध, असली नागकेशर, मुलहठी, कमलकेशर और असली वंशलोचन —प्रत्येक एक-एक तोले।

मिश्री (कालपी की बढ़िया या कूजे की) दस तोले।

— इन्हें कूट-पीसकर व्यवस्थित रीति से कपड़छन करके चूर्ण बना लें और शीशी में रख लें। मासिक के बाद चौथे दिन से इसका प्रयोग करें। इसकी मात्रा ६ माशे से एक तोले है। प्रातः, दुपहर एवं सायं ६-६ माशे की मात्रा उत्तम गोदुग्ध से दें। दिन में तीन बार दें। ऐसे बारहवीं-रात्रि तक यह प्रयोग करें। स्त्री-पुरुष एक माह पूर्व से पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहें।

बारहवीं रात्रि को दिन में पुरुष उर्द की दाल-रोटी या दूध-भात ले। शाम को पौष्टिक और सुपाच्य 'बादाम का हलवा' आदि अल्प मात्रा में ले। महिला प्रातः आधा-पेट सिर्फ दूध-रोटी खाय और शाम को बिलकुल आहार न करे।

पुनः एक-डेढ़ प्रहर रात्रि बीत जाने के बाद सप्रेमालिङ्गन-चुम्बनादि के बाद, जब पुरुष का दाहिना श्वास चले तब प्रसंग करे। वीर्यक्षरण के बाद पति-पत्नी निश्चल पन्द्रह मिनिट तक वैसे ही लेटे रहें। बाद में पुरुष हट जाय और पत्नी सावधानी से लेटी रहे। नितंब के नीचे छोटा-सा तकिया लगाले। एक घन्टे बाद उठकर ठंडे पानी से योनि धो डाले और फिर सो जाय।

गर्भ रह जाय तो फिर लगातार तीन माह तक पलाश (ढाक या छेवला) का एक कोमल पत्ता लेकर, ताजे गोदुग्ध में पीसकर प्रातःकाल निराहार मुंह पिया करे। उत्तम सन्तान होगी, और बच्चा ही होगा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यदि गर्भ न रहे तो फिर दूसरे माह भी यही उपाय करें। माह में सिर्फ एक बार ही प्रसंग करना चाहिये। लगातार चार माह तक प्रयोग करने पर अवश्य गर्भ रहेगा। परीक्षित है।

(५९) रजः प्रवर्तिनी वटी—

इसीका दूसरा नाम 'रजः प्रवर्तक वटी' है। यह प्रयोग रजः प्रवृत्ति के लिये अत्युत्तम है। रजोवर्धक प्रयोगों के बाद इस का प्रयोग करने से शीघ्र लाभ होता है। प्रयोग यह है—

मुसव्वर (एलवा या करियाबोर)   आठ माशे।
उत्तम असली केशर   चार माशा।   हीरा कसीस   एक तोला।

—इन तीनों को पानी के साथ दो-तीन घंटे खूब घोंटो। फिर ३-३ रत्ती की गोलियां बनालो। प्रातः, दुपहर एवं सायं १-१ गोली गरम पानी से दो। तीन दिन में लाभ हो जायगा। पथ्य पर पूरा ध्यान रखें। कालेतिल, गुड़ आदि का पथ्य दें। अथवा पहिले लिखे हुए नं० ३१ वाले प्रयोग के अनुपान से इसे काम में लें। अच्छा काम करने वाला प्रयोग है। सुपरीक्षित है।

(६०) महिलाओं के रक्तविकार में अत्युत्तम-प्रयोग—

सफाई की अव्यवस्था, लापरवाही, घर के काम में लगे रहना, बासा भोजन, अव्यवस्थित-व्रत आदि कारणों से महिलाओं में रक्त-विकार घर जमा लेते हैं। इन कारणों से बचाकर निम्नलिखित प्रयोग को काम में लाइये। रोग होते ही चिकित्सा प्रारंभ करदें। 'बढ़ो आग और बढ़े रोग' बड़े परेशान करते हैं। प्रयोग यह है—

हरड़ का छिलका, बहेड़े का छिलका और आंवलों की कली (टुकड़े)
—प्रत्येक २०-२० तोला।
उत्तम मधु   चालीस तोला।   रसमाणिक्य (प्रामाणिक) डेढ तोला।

—प्रारंभिक तीनों चीजें कूट पीसकर कपड़छन करलो। फिर एक लौह-खरल में नीचे थोड़ा-सा घी चुपड़कर उसपर आधा पाव चूर्ण डालो और उसपर आधा पाव उत्तम शहद डालदो, फिर ऊपर से आधा पाव चूर्ण और डालो, फिर आधा पाव मधु डालदो। इस तरह रखते

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

...ओ और फिर कुटाई करो। एक घंटे बाद, बारीक घुटा हुआ 'रसमाणिक्य' छह माशे डालो और कूटो, फिर छह माशे और डालो; तीसरी बार में भी शेष छह माशे रस डालकर, खूब कुटाई करो। एक लाख चो. लग जानी चाहिये। बाद में झड़बेरी के बेर के बराबर गोलियां बालो, और शीशो में रखलो। प्रायः सायं १-१ या २-२ वटी गरम पा या गिलोय के काढे से दो। अत्युत्तम रक्तशोधक प्रयोग है।

इसके प्रयोग से बारबार उठने वाली सूखी या गीली खुजली, सूखा या गीला दाद, चर्मविकार, चकत्ते पड़ना, छाजन, छोटी-छोटी फुन्सियां, कोढ़, सफेद दाग, आदि विकार मिटते हैं। साथ ही मंदाग्नि, उदररोग, श्वास-कास भी ठीक हो जाते हैं।

जैन-बन्धु मधु का प्रयोग नहीं करते, अतः वे मात्र त्रिफला चूर्ण और रसमाणिक्य को घोंटलें और पुड़ियां बनालें। पुड़ियों को चाशनी या शर्बत अनार या गुलकंद या आंवले के मुरब्बे से लें।

(६१) श्वास पर तत्काल-फलप्रद योग—

श्वास का रोग जिसे हो जाय, बड़ा परेशान करता है। महिलायें तो उससे बेहद परेशान होती हैं। अतः उनके काम का एक फौरन काम करने वाला चुटकुला लिखे देता हूं। अवश्य काम में लें। 'श्वास-नाशक' चुटकुला इस प्रकार है—

गैस का जलाया हुआ मैण्टल एक रत्ती लें। उसे पान में रखकर रोगी को खिलादें। फौरन आराम होता है। यह प्रयोग तत्काल फलदर्शक है। स्थायी आराम नहीं कर पाता। मैंने अनेकों स्थान पर इस प्रयोग को किया, तात्कालिक सफलता फौरन मिली। बाद में शास्त्रीय-योग 'कनकासव' बब्बूलारिष्ट, श्वासकुठार रस, श्वासचिन्तामणि-रस प्रभृति का प्रयोग करके इससे पिण्ड छुड़ाया।

(६२) श्वास-नाशक एक और चुटकुला—

इस प्रयोग से सरदी के समय, बादल हो जाने पर या ठंड की ऋतु में बढने वाले श्वास आराम से ठीक हो जाते हैं। प्रयोग इतना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सरल है कि सर्वत्र सुविधा से सम्पन्न हो सकता है। आवश्यकता ... अवश्य काम में लाइये। यह प्रयोग इस प्रकार है – ...

गुड़ दो या तीन माशा लो। उसमें प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व, अर्क (अकौए या आकड़े) का दूध ५ बूंद लेकर मिलालो। सुबह दूध बहुत ही शीघ्र और अधिक तादाद में निकलता है। आक का दूध मिलाकर, रोगी को गोली खिलादो और ऊपर से गरम पानी दो। तीन-चार दिन इस प्रयोग को करने से, 'श्वास रोग' प्रायः ... या वातकफज-श्वास शीघ्र ही ठीक हो जाता है।

पथ्य में—रोगी को गरम पानी, दूध, रोटी एवं हलका सुपाच्य अन्न देना चाहिये। पानी थोड़ा-थोड़ा और कई बार में दें। दिन में भूलकर भी सोने न दें। अत्युत्तम गरीबी प्रयोग है।

(६३) घृष्ट व्रण-रोपक योग 'कुचले-कटे घाव ठीक करनेवाला।'—

यह अंग्रेजी Septics के कान काटता है। बनाने में भी सरल है। अवश्य बना रखिये। प्रत्येक गृहस्थ के लिये अत्यन्त आवश्यक है। प्रयोग इस प्रकार है—

चौकिया-सुहागा आधा-पाव लेकर तवे पर पूरा फुला लीजिये। बाद में अपामार्ग (चिरचिरा, ओंगा या आधाझारा या अद्धाझारा) के पत्तों का रस तोलकर आधा-पाव निकाल लो। एक खरल में डालकर दोनों को इतना घोंटो कि घोंटते-घोंटते सूख जांय। फिर इसे एक घन्टे तक किसी साफ बरतन में फैलाकर, धूप में सुखा लो। इतनी निगरानी अवश्य रखो कि इस पर मक्खी आदि न बैठें और न धूल-तिनके ही मिलें। सुखाने के लिये बच्चों की छोटी मच्छरदानी बहुत ठीक रहती है। नीचे दवा फैलाकर ऊपर से उसे ढक दें।

दवा को पूरी तरह सुखाकर मजबूत डाटदार शीशी में भरकर रखें और हवा-पानी से बचावें।

यदि कहीं चोट लग जाय, कुचल जाय या चाकू-छुरी से शरीर का कोई भी अवयव चिर जाय, वहां से खून बह रहा हो, ऐसी स्थिति में इस दवा को लगाकर जरा दबा दो। फौरन ही खून बन्द हो जायगा। दवा तब तक न छूटेगी, जब तक घाव न भरेगा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आपरेशन के झंझट, डाक्टरों के इंजैक्शन, कम्पाउण्डर की मरहम-पट्टी आदि की सभी तकलीफों से सुरक्षित रखने वाला प्रयोग है।

शीघ्रता के कारण यदि यह प्रयोग फौरन न बन सके तो 'अपामार्ग' को पत्तियां पीसकर उनका रस निकाल लो और कटे-चिरे पर लगा दो; फौरन ही खून बन्द हो जायगा। पांच मिनिट बाद दुबारा फिर लगा देने से घाव बिना झंझट के शीघ्र ही भर भी जायगा।

(६४ से ६८) खांसी-नाशक सरल चुटकुले—

१—पत्थर का कोयला (सुरमे की तरह बारीक घुटा हुआ) एक रत्ती से तीन रत्ती की मात्रा में पान में रखकर खाने से खांसी में तत्काल लाभ होता है। दिन में २-३ बार तक दें।

२—'बायलर' में जमा हुआ 'श्वेतक्षार' ऊपर की तरह प्रयोग करने से कास-श्वास में बहुत शीघ्र लाभ होता है। ये दोनों प्रयोग तत्काल-फलप्रद हैं। यह क्षार आपको ऐंजिनों या मिलों के 'बायलरों' से पर्याप्त-मात्रा में सुविधा से मिल सकता है।

३—स्वर्णबंग बनाने पर जो उसका क्षार-भाग बच जाता है; वह भी उक्त मात्रा और उक्त विधि से लेने पर फौरन लाभ करता है।

४—कटेरी के पंचांग को जला लो (राख मत करो, सिर्फ काला भर पड़ने दो) और फिर बारीक पीस कर रख लो। इसे पान में खिलाने से खांसी-सांस शीघ्र ही ठीक हो जाते हैं।

५—रात में हल्दी की गांठें (पावभर) लेकर पावभर गोमूत्र में भिगो दो। प्रातः धूप में सुखा लो। शाम को फिर भेड़ का मूत्र पावभर भर दो और दिन में धूप में सुखा लो। तीसरे दिन भैंस का मूत्र भरदो और धूप में सुखा लो। चौथे दिन फिर गोमूत्र में भिगोकर धूप में सुखा लो। इस प्रकार छह-सात दिन लगेंगे। खूब सूख जाने पर दवा को कूट-पीसकर कपड़छन करलो। बाद में इस चूर्ण से दूना गुड़ लेकर उसमें खूब कूट डालो और झड़बेरी जैसी गोलियां बनालो। ये गोलियां प्रत्येक प्रकार की कास के लिये बेहद कारगर हैं। नजले की खांसी जुकाम की खांसी, बच्चों की खांसी, सूखी खांसी आदि प्रत्येक खांसी में

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बेधड़क काम में लें। सरल देहाती प्रयोग है। महाराजपुर के वैद्य से प्राप्त हुआ था। अच्छा काम करता है।

(६९) गृध्रसी 'साइटिका' (CYTICA PAIN) पर—

कमर से कूल्हे तक का 'गृध्रसी' का यह दर्द बड़ा कष्ट-प्रद है। इस पर यह पर-परीक्षित सरल प्रयोग भेंट कर रहा हूं। पाठक इससे अवश्य लाभलें। इस दर्द से महिलायें बुढ़ापे में अधिक परेशान होती हैं।

गृध्रसी-नाशक योग इस प्रकार है—

आमाहल्दी मैदा लकड़ी दोनों ६-६ माशे।
उत्तम गोघृत (या कोई भी असली घी) और मिश्री —१-१ तोले।

—इन चीजों को पावभर दूध और पावभर पानी में मिलाकर आग पर गरम करे। पानी जल जाय, तब रोगी को गुनगुना रहने पर पिलादे और कपड़ा ओढ़ाकर सुलादे। पसीना आयगा, किन्तु उसे भीतर ही भीतर पोंछे। हवा न लगने दे। प्रातः, दुपहर, सायं दिन में तीन बार यह प्रयोग करे। खाने को कुछ न दे; यही औषध काफी है। ३ दिन में पूरा आराम हो जायगा। पर-परीक्षित है।

(७०-७१) सूजन और जलंधर पर दो लाभप्रद प्रयोग—

यह प्रयोग पुरुष या महिला, चाहे जिसे रोग होने पर लाभ करते हैं। वृद्धावस्था में प्रायः ये रोग हुआ करते हैं। कदाचित् जवानी में भी हो जांय तो कोई चिन्ता नहीं। आप इन प्रयोगों से शीघ्र ही चंगे हो जांयगे। पहिला-प्रयोग इस प्रकार है—

अदरख बारीक पीसकर और कपड़े में रखकर निचोड़ लें। बाद में उसे रख दें। जब वह निथर जाय तो ऊपर का भाग धीरे-से निथार लें और शेष भाग पड़ा रहने दें। यह निथरा हुआ अदरख का रस १ तोले और पुराना गुड़ दो-तोले मिलाकर रोगी को चटा दें। दिन में ३ से ५ बार तक ऐसा ही करना चाहिये। इससे जलंधर और उससे पैदा हुई सूजन; अथवा किसी अन्य प्रकार की भीतरी विकृति से पैदा हुई सूजन शीघ्र ठीक हो जायगी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ध्यान रहे कि औषध-सेवनकाल में सिर्फ बकरी का दूध ही दें। अन्न और जल कोई भी चीज नहीं देनी चाहिये। औषध ही देना चाहें तो मन्डूर या लोहभस्म की पुड़ियां लगादें और उक्त प्रयोग अनुपान रूप में बता दें।

सूजन और जलंधर पर दूसरा योग—

वर्धमान पिप्पली की भांति अदरख-रस का प्रयोग करो। अर्थात् प्रथम दिन रोगी को दो-तोला अदरख का रस दो। दूसरे दिन तीन तोला, चौथे दिन चार तोला ऐसे बढ़ाते-बढ़ाते २० तोले तक बढ़ाते जाओ। फिर धीरे-धीरे एक-एक तोले के क्रम से घटाते जाओ। अदरख का रस वैसे ही स्वतन्त्र पिलाना चाहिये। न रहा जाय तो मिश्री मिलाई जा सकती है। अदरख का रस ऊपर बताई विधि के अनुसार निकालें।

दिन भर में इतना रस दें। मान लें कि आज १५ तोला अदरख-रस देने का नम्बर है, और दिन में पांच बार औषध दी जाती है तो प्रतिवार ३-३ तोले रस दें। एकदम ही इतना न पिलादें। इस प्रयोग से उक्त दोनों रोग शीघ्र ही ठीक हो जाते हैं। पथ्य में एकमात्र बकरी का दूध ही देना चाहिये।

(७२) उदरशूलनाशक तत्काल-फलप्रद प्रयोग—

कभी-कभी ऐसा भयंकर पेटदर्द होता है कि मौत तक हो जाती है। साधारण औषधों की तो बात ही क्या है, नामवर मानी जाने वाली औषधें भी कोई काम नहीं करतीं। उस स्थिति में इस योग को काम में लीजिये, फौरन काम करेगा। रोता हुआ रोगी हँसता हुआ जायगा।

सल्फ्यूरिक-एसिड (गंधक का उत्तम तेजाब) एक तोला, पिसा हुआ काला नमक एक तोला, नीबू का रस पांच तोला, गुलाब जल २० तोला। इन्हें बोतल में मिलाकर रखें।

ध्यान रहे 'गंधक का तेजाब' सिवाय कांच या चीनी के बरतन के किसी में भी नहीं रखा जाता। कटोरी या अन्य किसी पात्र में इसे न रखें, अन्यथा बड़ी हानि होगी। हाथ से भी न छुयें, अन्यथा हाथ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जल जायगा। सावधानी से प्रयोग बनावें। गंधक का तेजाब प्रत्येक सुनार के पास मिल जाता है। एक तोला एक आने का समझिये।

—पेटदर्द की तेज हालत में बताशे में ५ बून्द से १० बून्द तक दे दें। अथवा एक छटांक गरम पानी में १५-२० बून्द मिलाकर पिला दें। पेटदर्द में फौरन आराम होगा।

(७३) हैजा-नाशक अव्यर्थ रामवाण प्रयोग—

गंधक का तेजाब निम्नलिखित विधि से हैजे में भी उत्तम लाभदर्शक है।

गंधक का तेजाब २॥ तोले। नीबू का उत्तम निथरा रस २० तोले।
मिश्री २० तोले। लौंग का बारीक चूर्ण एक तोले।

—इन्हें मिला लो और बोतल में रखकर खूब हिलाओ। बाद में शीशी में ही रखा रहने दो। हैजे के प्रारम्भ में ही बताशे में रखकर ५ से १० बून्द तक रोगी की उम्र के अनुसार औषध दो। २-३ बार में हैजे के कीड़े नष्ट होकर कै-दस्त बन्द हो जायंगे। ध्यान रहे रोगी के पानी-पानी चिल्लाने पर भी पानी भूलकर मत देना। हां, उसकी जगह मुसम्बी या अनार अथवा सन्तरे का रस गुनगुना करके दे सकते हो। फिर जैसे-जैसे तबियत ठीक होती जाय, उचित पथ्य देते रहो। काफी कै-दस्त हो जाने पर यह प्रयोग काम नहीं करता। हैजे के प्रारम्भ में ही अत्युपयोगी है।

(७४) तत्काल वात-पीड़ा शामक—

वायु के कारण शरीर में दर्द होने पर बड़ी परेशानी होती है। दर्द विविध-रूपों में इधर-उधर उठता है। कभी-कभी तो इतनी जोर से दर्द उठता है कि रोगी को मौत प्रत्यक्ष दिखाई देती है। ऐसी स्थिति में इस तत्काल-फलप्रद प्रयोग को काम में लाइये। प्रयोग इस प्रकार है—

शुद्ध कुचला तीन माशे। कालीमिर्च तीन माशे। अफीम छह माशे।

तीनों को एक तोले पान के रस में डालकर खूब घोंटो और १-१ रत्ती की गोलियां बनालो। आवश्यकता होनेपर १-१ गोली खाली पान में (बिना लगे हुए पान में) रखकर खिलादो। यदि पान को आग पर गरम करलो और फिर उसमें गोली रखकर खिलाओ तो और भी शीघ्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लाभ होगा। इस प्रयोग से ठंडे शरीर में भी गरमी आजाती है। कभी-कभी पसीना भी छूटने लगता है। किन्तु वात का किसी भी प्रकार का दर्द फौरन, दवा देते ही, ठीक हो जाता है। सुपरीक्षित है।

(७५) पेडू के दर्द पर सरल लाभप्रद योग—

पेडू का दर्द पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में ही अधिक हुआ करता है। इसके अनेकों कारण हैं। प्रायः कड़ी धोती बांधना, कठिन चुस्त कपड़े पहिनना, बासा भोजन, अनियमित आहार-विहार और मासिकधर्म की खराबी आदि इनमें मुख्य कारण हैं। ऐसी स्थिति में रोग पैदा करने वाले कारण से बचाकर निम्नलिखित प्रयोग काम में लें। प्रयोग इस पकार है —

असली रूमीमस्तगी और मिश्री दोनों बराबर मिलालें। फिर हलके हाथ से घोंट लें। जोर से घोंटा तो औषध चिपक जायगी। इसकी ६ माशे की मात्रा गरम पानी से देने पर पेडू का दर्द फौरन ही ठीक हो जाता है। सायंकाल भी इसी प्रकार औषध दें। यदि दर्द अधिक हो तो बोतल में गरम पानी भरकर सेक करें या गरम पानी में कपड़ा बार-बार भिगोकर और निचोड़कर पेडू पर रखें और तेल मलदें। पेडू-दर्द फौरन ठीक हो जायगा। सुपरीक्षित-योग है।

(७६) स्तनवर्धक प्रयोग—

नारी-सौन्दर्य में स्तनों का भी प्रमुख-स्थान है। जिस महिला के स्तन उभरे और गोल-मटोल नहीं हैं, उसका आकर्षण फीका रहता है। साहित्य में तो 'घटकुचा' घड़े जैसे स्तनों का वर्णन है। अस्तु; जिनके स्तन अत्यन्त छोटे हों, वे खाने के लिये पहिले लिखे 'महिलामित्र' आदि प्रयोगों को काम में लें। पुनः यह सरल प्रयोग करें—

'गजपीपल' (बड़ी पीपल) पानी डाल-डालकर पत्थर पर चंदन की तरह बारीक घिसो। चन्दन से भी अधिक गाढ़ा घिसना चाहिये। उसमें बराबर का उत्तम मधु भी मिला लें और रखलें। फिर स्तनों को गरम पानी से खूब अच्छी तरह धोवें। अच्छा हो कि रुयेंदार तौलिया को गरम पानी में भिगोकर और निचोड़कर स्तनों पर पहिले धीरे-धीरे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और बाद में जोर-जोर से रगड़ें, ताकि स्तन लाल पड़ जांय और फिर उक्त 'गजपीपल-मधु' का लेप करदें और सो जांय।

यह उपाय प्रतिदिन रात को ही सोते समय करना चाहिये। पुरुषों के लिये यह प्रयोग 'लिंग-वृद्धि' में भी उत्तम सहायक है।

(७७) उदरामृत चूर्ण—

उदर-रोगों पर यह चूर्ण बड़ा ही जोरदार है। धर्मार्थ औषधालयों में खूब चलता है। काम भी बहुत अच्छा करता है। जिन्हें ३-३ दिन तक टट्टी होती ही नहीं; भोजन करते ही एकदम दर्द का दौरा उठ खड़ा होता है, अथवा अँतड़ियों में मल की गांठें जम जाती हैं, कभी-कभी मुंह से भी मल निकलने लगता है, ऐसी स्थिति में यह प्रयोग बहुत ही अच्छा काम करता है। अवश्य बनाइये। प्रयोग इस प्रकार है—

काला नमक १ तोले, अजवायन २ तोले, अजमोदा ४ तोले, छोटी पीपल ८ तोले, सोंठ १६ तोले और छोटी हर्रें ३२ तोले। इन्हें हमाम दस्ते में डालकर खूब बारीक चूर्ण करलो। बाद में कपड़े में छान डालो और शीशी में भर लो। इसकी मात्रा एक माशे से तीन माशे तक की है। भोजन के आधा घन्टे बाद गरम पानी से दें। पेट का कब्ज, दर्द, अफारा, खट्टी डकारें, अरुचि आदि पचासों उदररोगों की एकमात्र रामबाण औषध है। महिलायें अवश्य काम में लें। परीक्षित है।

(७८) खूनी-प्रदर पर सरल और सुपरीक्षित प्रयोग—

महिलायें जरा-से भी खून को देखकर घबड़ा जाती हैं। फिर जहां गिलास भर खून बहे तो उसे देखकर उनके होश ही गायब हो जाते हैं। इन ऊपरी घटनाओं से उनके हृदय पर बहुत ही बुरा असर पड़ता है। इसलिये भयानक रक्तप्रदर, रक्तपित्त और रक्तार्श को शीघ्र ही ठीक कर देने वाला यह प्रयोग भेंट किया जा रहा है। प्रयोग इस प्रकार है—

सफेद राल का चूर्ण १ माशा, मिश्री या शक्कर २ माशे। —यह एक मात्रा है। इसे फांककर ऊपर से 'अनार का छिलका १ तोले, छोटी हर्रें २ नग'—इनका १६ तोले पानी में काढ़ा बनाकर पियो। अन्यथा—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सफेद राल १ तोला, अनार का छिलका २ तोला, छोटी हर्रें १ तोला इनका चूर्ण बना लो। बराबर मिश्री के साथ ३ माशे फांको और ऊपर से चौलाई का रस अथवा करेले के पत्तों का रस या अनार का रस अथवा धनिये की पत्तियों का रस २-२॥ तोले पी डालो। रक्तार्श, रक्तप्रदर एवं रक्तपित्त सभी ठीक होंगे। सुपरीक्षित है।

(७९) गर्भिणी की अरुचि पर 'स्वादिष्ट अवलेह'—

गर्भिणी का जी प्रायः मचलाता रहता है, उसे भोजन से अरुचि हो जाती है। ऐसी स्थिति में हमारा यह प्रयोग बहुत ही अच्छा काम करता है। अवश्य ही प्रयोग करिये। नुसखा इसतरह है—

दालचीनी आधा-तोला।	अजवायन, तेजपात, शुद्ध हींग १-१ तोला।
छोटी इलायची और जवाखार २-२ तोला।	धनियां चार-तोले।
भुना हुआ जीरा ८ तोला।	सोंठ, कालीमिर्च, पीपल २-२ तोले।
सैंधा नमक १० तोला।	जंभीरी नीबुओं का रस एक सेर।

—चूर्ण करने योग्य सभी चीजों का बारीक कपड़छन चूर्ण करलें। एक कलईदार कढ़ाई में नीबू का रस डालकर गरम करें। जब रस जलते-जलते पावभर के लगभग रह जाय, उक्त औषधों का कपड़छन चूर्ण डाल दें और अवलेह (चाटने योग्य) बन जाने पर उतार कर ठंडा करके अमृतवान में भर लें।

इसकी मात्रा एक माशे से छह माशे तक है। आवश्यकतानुसार चटावें। गर्भिणी को थोड़ा-थोड़ा कई बार में चटाना चाहिये। छोटे-छोटे ५-६ माह के बच्चे यदि दूध पलट देते हों तो उन्हें भी आधा-आधा रत्ती की मात्रा में दिन में ३-४ बार चटाओ।

यह प्रयोग पेटदर्द, प्लीहा, अपच, मंदाग्नि, मुंह का स्वाद खराब होना, विभिन्न-शूल आदि में भी विशेष प्रभावक है। हैजे के दिनों में इसका प्रयोग अत्युत्तम है। प्रातः सायं थोड़ा-थोड़ा चाटें।

(८०) गर्भपोषक चुटकुला—

इस प्रयोग से गर्भ पुष्ट होता है। प्रयोग बिलकुल सस्ता है, किन्तु

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रभावक है। अवश्य ही काम में लाइये। 'गर्भपोषक' का प्रयोग ये है—
नागौरी असगंध ६ माशे। दूध और पानी पाव-पाव भर।

—असगंध के टुकड़े करके दूध-पानी में मिला दो और आग पर रखो। जब आधा पानी जल जाय तो उसमें दो-तोले मिश्री मिला दो, फिर शेष आधा पानी जलाओ। दूध-मात्र शेष रहने पर उसे छान लो और गर्भिणी को धीरे-धीरे चम्मच से पिलादो।

प्रारम्भमें लगातार सातदिन तक यह दो। फिर १-१ दिन के अन्तर से दो। तीनमाह बाद २-२ दिनके अन्तरसे दो। छहमाह बाद ३-३ दिनके अन्तर से देते रहो। अत्युत्तम गर्भपोषक प्रयोग है। रात्रि को ८-८॥ बजे प्रतिदिन धीरे-धीरे चम्मच से पिलावें।

(८१) योनि-रोगों पर वस्ति-प्रयोग—

योनि के विभिन्न दोष, गर्भाशय की खराबी, प्रदर, शोथ आदि में इसका डूस दें। अत्युत्तम सुलभ योग है। योग इसप्रकार है—
बबूल की छाल २० तोला। गेरू, छोटी इलायची १-१ तोला।
रसौंत, सफेद कत्था, फिटकरी और सुहागा —प्रत्येक २-२ तोला।

—इन्हें पांच सेर पानी में औटा लें और आधा पानी जल जाने पर उतार कर छान डालें। फिर निथरने को रखदें। १२ घन्टे बाद सावधानी से निथार कर बोतलों में भर लें। तीन दिन तक डूस देने के लिये पर्याप्त है। फिर ताजा बना लें।

सर्वत्र योनि-विकारों में इसका प्रयोग किया जा सकता है।

(८२) प्रसूता-दुग्धवर्धक—

प्रसवोपरान्त अनेकों महिलाओं में दूध की बड़ी कमी होती है। बच्चे को पर्याप्त दूध न मिलने के कारण उसका व्यवस्थित-पोषण नहीं हो पाता। बाहरी दूध या बन्द डब्बों का दूध सिर्फ पेट ही भरता है; माता के दूध की भांति उसमें पोषकतत्व नहीं होते। अतः ऐसी स्थिति में फौरन ही 'दुग्धवर्धक' प्रयोग करना चाहिये। इसके लिये नीचे का यह योग बहुत अच्छा है—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

'शतावर' का चूर्ण करले। इसे तीन-माशे लेकर प्रातः-सायं दूनी मिश्री के साथ पाव-पाव भर उत्तम गोदुग्ध के साथ पीना चाहिये। मैं बहुधा 'शतावर और वंशलोचन' सम-भाग का चूर्ण दूनी मिश्री मिलाकर रखता हूं। आवश्यकता के समय प्रतिदिन दिन में चार से पांच बार तक पावभर या आधा-पाव गोदुग्ध में पिलाता हूं। इसमें पाचन-शक्ति का ध्यान रखते हुए दूध की मात्रा और भी बढ़ाई जा सकती है। 'सौभाग्य शुन्ठी-पाक' के साथ यह प्रयोग अत्यन्त शीघ्र काम करता है।

(८३) प्रसूता के सर्वविकारों पर सुपरीक्षित 'सौभाग्यशुण्ठी पाक'—

यह प्रयोग महिलाओं के प्रसूत-रोग, वातविकार, शरीरदर्द, प्यास, दाह, वमन, श्वास, कास, कृमिविकार, शरीर टूटना, दूध की कमी, योनि-विकार, निर्बलता, स्तनदौर्बल्य, योनिशैथिल्य आदि पर रामवाण है। सभी वैद्य इसका प्रयोग करते हैं। मेरी सुपरीक्षित-विधि इस प्रकार है—

सोंठ का बारीक चूर्ण ४८ तोले। उत्तम गाय का घी ४८ तोले। मिश्री १२० तोले। सोत्रा, चिरौंजी, निशोथ, नारियल-गिरी ४-४ तोले। जायफल, त्रिफला, जीरा, स्याह जीरा, सौंफ, इलायची, धनियां, पीपल, नागरमोथा, छुहारा, वंशलोचन, त्रिबंगभस्म और लौहभस्म —प्रत्येक १-१ तोले। विदारीकन्द पांच तोले।

—पहिले सोंठ के चूर्ण को धीरे-धीरे घी डालकर भूनते जाओ। भुन जाने पर उतार लो। फिर शेष चीजों में से जो कूटने-पीसने योग्य हों, उनका कूट-पीसकर बारीक कपड़छन चूर्ण करलो और अवशेष द्रव्यों में मिलाकर रखलो, साथ ही भूनी सोंठ भी मिला लो।

इसके बाद मिश्री की चाशनी बनाओ। पाक योग्य हो जाने पर ऊपर के सारे द्रव्य चाशनी में डाल दो और खूब घोंटो

तीसरी ओर आधा-तोला केशर, तीन-माशे पिपरमेंट और छह-माशे कपूर को दूध के साथ बारीक घोंट लो और आधापाव घी में मिला दो। जिस थाल में पाक जमाना हो, उसमें उक्त सुगंधित घृत खूब पोत-लपेट दो। उस पर उक्त पाक जमा-फैला दो। २-३ घन्टे बाद बरफियां

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जैसी काटकर रखलो। बड़ा बढ़िया स्वादिष्ट, जायकेदार पाक बनेगा। प्रसूताओं को अवश्य खिलाइये।

इसकी मात्रा १॥ तोले से २॥ तोले तक है। प्रातः-सायं दो बार गोदुग्ध से दें। उपर्युक्त गुणों के साथ यह स्मृति, वाणी, मुखसौन्दर्य, वात-पित्त-कफविकार आदि भी मिटाता है। १८-२० वर्ष से प्रतिवर्ष काम में लिया जाता है। सुपरीक्षित है।

(८४) प्रसूता को पुनर्जन्म देनेवाली शर्तिया औषध-पद्धति —

प्रसूता में ज्वर, कास, सिरदर्द आदि कोई भी रोग क्यों न हो, प्रसवोपरान्त शास्त्रीय प्रयोग 'समीरगजकेसरी' और इसी के साथ 'प्रताप लंकेश्वर-रस' उक्त सौभाग्य-शुण्ठी पाक के साथ दो। प्रातः-सायं बना-बनाकर 'दशमूल का काढ़ा' पिलाओ। प्रथम दिन से ही इन प्रयोगों का उपयोग करने से प्रसूता को कोई भी कष्ट नहीं हो पाता। उसके सारे विकार आनन-फानन में काफूर हो जाते हैं। वैद्यों के लिये यह उत्तम इशारा है। उक्त दोनों औषधों के प्रयोग तीसरे भाग में स्पष्टतया बता देंगे। आवश्यकता पर किसी भी फार्मेसी से ले सकते हैं। ईमानदारी के साथ सच्चा अनुभव प्रगट कर दिया है। हजारों प्रसूताओं को यममुख से इन ही औषधों ने निकाला है। बेधड़क इनका प्रयोग करिये।

(८५ से ८७) काम-लिप्सा शामक प्रयोग-त्रय—

कई महिलाओं में कामेच्छा अत्यधिक जागृत रहती है। उसके कारण अनेकों व्यावहारिक हानियां होती हैं। इच्छा पूर्ति न होने के कारण हिस्टेरिया आदि रोग भी घर जमा लेते हैं। ऐसी स्थिति में निम्न-लिखित सरल योगों में से कोई भी एक प्रयोग करिये। पहिला प्रयोग—

फिटकरी फुलाई हुई, चौकिया सुहागा फुलाया हुआ, लाजवन्ती (छुईमुई) की जड़। —तीनों बराबर-बराबर लेकर बारीक कपड़छन चूर्ण करलें। मात्रा २ से ३ माशे तक। प्रातः-सायं आधा पाव से पावभर बकरी के दूध के साथ दें। इसी के साथ प्रतिदिन प्रातः-सायं फिटकरी के पानी से योनि भी साफ करावें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

'कामशामक' दूसरा-योग इसप्रकार है—

महिला को स्टूल पर बिठाकर गूगल या अजवायन की धूनी दे। इससे योनि की खाज, दुर्गन्ध एवं अन्यान्य गर्भाशय-विकार भी ठीक होंगे।

तीसरा प्रयोग 'कामेच्छा-शामक' इसप्रकार है—

असली कूट और धवल बरुआ दोनों समभाग लेकर चूर्ण करलें।

—इन्हें बादाम और कालीमिर्च के साथ ठंडाई की तरह दें। अथवा यूं ही उत्तम-मधु के साथ चटावें। अवश्य कामशान्ति होगी।

ये सभी प्रयोग १०-१५ दिन करने चाहिये। प्रारम्भ में २-३ दिन प्रतिदिन दें, पुनः एकदिन के अन्तर से करें। अवश्य लाभ होगा। पहिला और दूसरा प्रयोग अथवा तीसरा और दूसरा-प्रयोग एक साथ करने से शीघ्र और स्थायी लाभ होगा।

(८८) अव्यर्थ 'सन्तानदाता' वटी—

हालां कि नं० ५८ का एक सुन्दर प्रयोग पहिले दिया जा चुका है। किन्तु यह प्रयोग भी बहुत अच्छा है। इसलिये इसे भी आपकी भट कर रहे हैं। इस प्रयोग को देहात वाले बड़ी सुविधा से काम में ले सकते हैं। आवश्यकता पर अवश्य काम में लें। प्रयोग यह है—

सफेद मिर्च (कालीमिर्चों के बड़े-बड़े दाने लेकर पानी में भिगो दो, फूल जाने पर उनका ऊपरी छिलका रगड़कर हटा दो, वे ही सफेद मिर्च बन जांयगीं।) २० दाने लें।

शीतल चीनी (कबाब चीनी) ६ माशे। बड़ी इलायची ८ नग।

पुराने पीपल की दाढ़ी (प्रातः काल में सूर्योदय से एक घन्टे पूर्व लाई गई और छाया में सुखाई गई) १० तोले।

—इन चारों को खूब बारीक कूट-पीस ले और चार-पांच तोले पुराने गुड़ को कूट-कूटकर उक्त चूर्ण में मिलाकर १६ गोलियां बनालें।

जब महिला ऋतु-धर्म से निबटकर शुद्ध हो जाय तो प्रातः सूर्योदय से पहिले स्नान-ध्यान करके अच्छी तरह तैयार हो जाय और सूर्योदय के प्रारम्भ में ही १ गोली, बछड़े वाली गाय के धारोष्ण दुग्ध से ले। और उसके ३ घन्टे बाद दूध और साठी चावल का भोजन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करे। सायंकाल में पांच बजे सुपाच्य-पौष्टिक भोजन करे और उसके तीन घन्टे बाद उत्तम बछड़े वाली गाय के दूध से एक गोली ले। इस प्रकार आठ दिन करे।

शेष बातें प्रयोग नं० ५८ की भांति ध्यान में रखे। अवश्य पुत्र लाभ होगा। जिन सज्जन से यह प्रयोग प्राप्त हुआ है, उन्होंने चैलैञ्ज दिया है कि नं० ३१ या ३२ के प्रयोग के बाद, इस प्रयोग को करने से अवश्य लाभ होगा। प्रयोग-गुम्फन देखकर प्रत्येक वैद्य को इस पर शक-शंका की कोई भी गुञ्जाइश नहीं रहती।

ईश्वरभक्ति, सदाचार, पवित्र विचार और सत्यनिष्ठा में मन लगाते हुए, इस से धार्मिक, बलिष्ठ एवं कुलदीपक सन्तान पैदा करें।

(८९) गर्भपरीक्षा-कारक चुटकुला—

महिला गर्भिणी है या नहीं ? इस प्रश्न का समाधान इस सुलभ चुटकुले से कीजिये। योग इस प्रकार है कि सोनामाखी (सनाय) के पत्तों का चूर्ण करके परीक्ष्य-महिला के मूत्र में मिला दें और रख दें। दूसरे दिन उसे देखें, यदि मूत्र पर कोई वस्तु तैरती-सी दिखाई दे तो उसे गर्भिणी समझें, अन्यथा नहीं।

एक जगह यह भी लिखा है कि शेर की हड्डी का चूरा, परीक्ष्य-महिला के मूत्र में मिलादें। यदि उसमें झाग या बुलबुले उठें तो स्त्री को गर्भवती समझें।

(९०) गर्भस्राव-निवारक चुटकुला—

नई सींकों की बुहारी का जीरा और ढाक का ताजा पत्ता ६-६ माशे।

—एक छटांक पानी में ठंडाई बनाकर एक तोला मिश्री मिला कर पियें। प्रातः सायं दिन में दो-बार ऐसे करें। तीन दिन में पूरा लाभ होगा। प्रति माह दो-तीन दिन इसका प्रयोग कर लेने से गर्भस्राव या गर्भपात का डर नहीं रहता।

(९१) भयंकर रक्तप्रदर पर सरल-योग—

बकायन की पत्तियों का रस २ तोला। शुक्तिभस्म २ रत्ती।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मिलाकर दें। ६ घन्टे बाद दूसरी मात्रा दें। दो-मात्रा में ही लाभ होगा। यदि फिर भी कसर रहे तो २-३ दिन तक यह प्रयोग करें। रक्तप्रदर का नाम भी न रहेगा।

(६२) सर्व प्रदरान्तक-योग—

इस प्रयोग से सभी तरह के प्रदर ठीक हो जाते हैं। अवश्य प्रयोग करें।

प्रातः—गूलर के सूखे फल और मिश्री ६-६ माशा लेकर चूर्ण करलें और चाशनी या मधु में चटावें।

सायं—भुने चने, ढाक के पत्तों की राख, गोबर की राख और मुलतानी मिट्टी प्रत्येक १॥-१॥ माशा लेकर ठंडे पानी से फांकलें। तीन-चार दिन में सभी प्रकार के प्रदर ठीक होंगे।

यह एक मात्रा है। आप चाहें तो इकट्ठी बनाकर रखलें और प्रतिवार योग्य मात्रा में देते रहें।

गर्भिणी के श्वेत-रंग के योनि-स्राव पर औषध-क्रम—

गर्भावस्था में अनेकों महिलाओं की योनि से एक विशेष-प्रकार का दाहकारक, दुर्गन्ध-युक्त स्राव बहता है। कभी- कभी इससे छाले-फफोले और खुजली आदि भी हो जाते हैं, तब बहुत ही दर्द होता है। ऐसी स्थिति में नीचे लिखे प्रयोग अवश्य काम में लें —

(६३) सरल विरेचक-चूर्ण—

सोंन्या सौंफ, सनाय, बड़ी हरड़ का छिलका और कालानमक भी इसका प्रयोग ले। सैंधानमक —ढाई तोला। प्र... रोग ठीक होंगे बारीक कपड़छन चूर्ण कर लेना चाहिये। इसकी घी में अच्छी तरह से फु। एक मात्रा में ही उत्तम रेचन हो जाता है। अच्छीतरह से ... के लिये सर्वत्र काम में लें। नरम कोठे वालों के लिये सुपरीक्षित है। तीव्र कोठेवालों को ६ माशे से एकतोले तक की मात्रायें।

उक्त लक्षणवाली रुग्णा गर्भिणी को यह चूर्ण रात को सोते समय गरम पानी या दूध से दें। प्रातः साफ दस्त हो जायगा। इसके बाद— इसी पुस्तक का प्रयोग नं० १८ काम में लें। इससे योनि धोवें। यदि योनि में छाले और घाव भी होगये हों तो धोने के बाद फिर—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(९४) योनि व्रण-नाशक पाउडर—

माजूफल पपरिया कत्था देशी कपूर फिटकरी सममभाग।

—इन चारों का बारीक कपड़छन चूर्ण बनाकर रखलें और रुई से छालों या घाव पर भुरकें-लगावें। लगाते ही शान्ति मिलती है। अत्युत्तम प्रयोग है।

(९५) गर्भिणी के योनि-प्रवाह में खाने का प्रयोग—

अत्युत्कृष्ट वारितर कान्तलौह भस्म प्रवाल चन्द्रपुटी।

—दोनों बराबर लेकर घोंट-पीस लो और २-२ रत्ती की पुड़ियां बना लो। प्रातः, दुपहर एवं सायं १-१ पुड़िया शरबत-अनार या मधु में मिलाकर चटाओ। गुलकंद के साथ देने पर सत्वर लाभ होता है। चाशनी में चटाकर ऊपर से अर्क गावजवां पिलादो। फौरन लाभ होगा। सुपरीक्षित प्रयोग है। अवसर पर बेधड़क काम में लीजिये।

(९६) प्रदरनाशक, धातुवर्धक पौष्टिक-हलवा—

महिलाओं में शक्ति-वृद्धयर्थ यह प्रयोग बहुत ही अच्छा है। जाड़ों में यह प्रयोग बहुत ही अच्छा रहता है। गरमियों में इसकी जगह ठंडाई का उपयोग करना चाहिये। इससे प्रदर, कमरदद, हड़फूटन, सिरदर्द, कमजोरी, किसी काम में मन न लगना आदि विकार बहुत शीघ्र ठीक हो जाते हैं। अत्यन्त स्वादिष्ट है, अतः खाया भी आराम से जाता है। चाहें तो पति-पत्नी दोनों ही इसका सेवन करें। ... सामनरूप से लाभप्रद है। प्रयोग यह है—

चारों मगज (खीरा, ककड़ी, खरबूजा और तरबू... ...जा पत्ता ६-६ माशे।
पीपल का गोंद या पीपल के फलों का चूर्ण ... मिश्री मिला
बादाम गिरी चार तोला। पिस्ता ... में ...
गाय का ताजा घी डेढ़ पाव। गोदुग्ध का खोवा पाव भर।
सूजी या गेहूं का रवा पावभर। मिश्री या शक्कर १॥ सेर।
असगंध कालीमिर्च लवङ्ग पोस्त के दाने (खसखस) १-१ तोले।

—चारों मगज के छोटे-छोटे टुकड़े करलें। बादाम और पिस्ते के वर्क बना लें। असगंध, कालीमिर्च, लौंग का बारीक चूर्ण करलें या

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बारीक पीस डालें। पोस्त के दाने मोटे-दरदरे पीस लें।

पोस्त के दाने और सूजी को मिला लें। दूसरी ओर मिश्री और घी छोड़कर शेष-चीजों को भी मिला लें। सूजी-पोस्तदाने घी में खूब सेक लें और शेष चीजों का चूर्ण इसी में मिला लें। वाद में मिश्री या शक्कर की चाशनी बनाकर उसमें ऊपर की सारी चीजें मिला लें और हलवा बना रखें। अथवा महिलायें जिस विधि से हलवा बनाती हैं, उस विधि से बना लें। ठंडा होने पर 'अमृतवान' में भरकर रखलें। प्रातः-सायं प्रतिदिन २-२ तोला खावें।

शीघ्र फलप्रद प्रयोग है। हाड़ों को गूदा देता है। दुबले-पतले इसके सेवन से मोटे-ताजे और तन्दुरुस्त बनते हैं। सुपरीक्षित है।

(६७) सोमरोगान्तक एवं पौष्टिक-प्रयोग—

इस प्रयोग से 'सोमरोग' सरलता से ठीक हो जाता है। जिन महिलाओं के मूत्र-मार्ग में से पेशाब जैसा बदबूदार स्राव हमेशा बना रहता है, उनके लिये यह बहुत ही अच्छा प्रयोग है। रोग के प्रारम्भ होते ही इस प्रयोग को शुरू कर दें। देर करने पर बीमारी 'बहुमूत्र' जैसे भयानक रोग में बदल जाती है। तब रुग्णा को हर १०-१० मिनट में पेशाब करने जाना होता है; एक मिनट भी पेशाब नहीं रोक सकती।

इसके साथ ही साथ इससे गर्भाशय के विकार, श्वेतप्रदर एवं अन्यान्य प्रदर भी ठीक हो जाते हैं। बढ़िया काम की चीज है। पुरुष भी इसका प्रयोग कर सकते हैं। पुरुषों का भी प्रमेह, वीर्य का पतलापन आदि रोग ठीक होंगे। प्रयोग यह है—

घी में अच्छी तरह से फुलाया हुआ बबूल का गोंद मिश्री
अच्छीतरह से सेके और फुलाये गये मखाने —प्रत्येक २०-२० तोला।
छोटी इलायची के दाने शतावर असगंध दालचीनी २-२ तोले।
उत्तम बंशलोचन ५ तोले। आंवला और विदारीकन्द ४-४ तोले।

—इन्हें कूट-पीसकर इनका बारीक चूर्ण बना लें। इसकी मात्रा पौन तोले से डेढ़ तोले तक अवस्थानुसार है। प्रातः-सायं दो बार उत्तम गोदुग्ध में दें। दुपहर में भी दे सकते हैं। हजारों पर सुपरीक्षित है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(९८) मलावरोधान्तक स्वादिष्ट मीठा प्रयोग—

कब्ज दूर करने के प्रयोग प्रायः कड़वे और बदजायके होते हैं। किन्तु यह प्रयोग बहुत अच्छा एवं मीठा है। प्रत्येक वैद्य इसे अवश्य बनावे। अमीरों पर तो इसका ही प्रयोग करे।

शुद्ध आंवलासार गंधक २ तोले। छिली हुई मुलहठी ४ तोले।
सौंफ आठ तोला। सनाय १६ तोला।
देशी बूरा या खांड या मिश्री ३२ तोले।

—इन सबको कूटकर बारीक चूर्ण बना ले। मात्रा ४ से ६ माशे तक, गरम दूध या गरम पानी से रात में सोते समय दें। प्रातः साफ दस्त आयगा। सुपरीक्षित है।

(९९) चोट से पैदा हुई सूजन और दर्द पर उत्तम योग—

हालों, हलदी, पोहकरमूल, लोध, तज —प्रत्येक १-१ तोला।

—इनको कूट-पीसकर इनका बारीक कपड़छन चूर्ण करलें। बाद में २॥ तोला पुराना गुड़ डालकर इतना कूटें कि सारी दवायें एकदिल हो जांय। बाद में जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लें और रखलें।

आवश्यकता पर एक गोली लेकर मीठे तेल में पतली-पतली खूब घिस लें और आग पर गर्म करलें। इसे सुहाता-सुहाता चोट और दर्द के स्थान पर लगादें। प्रातः-सायं दोनों ही समय यह उपाय करना चाहिये। इससे चोट की कसक तक निकल जायगी। आजमूदा है।

(१००) संग्रहणी-संहार —

इस सस्ते से प्रयोग से धारा-प्रवाही पतले-दस्त और अधिकतर दिन में लगने वाले दस्त सरलता से ठीक हो जाते हैं। रसों जैसा काम करने वाला प्रयोग इस प्रकार है—

पठानीलोध पावभर लेकर बारीक-कपड़छन चूर्ण करलो। संभव हो तो इसी चूर्ण में लोध के काढ़े की ३-४ भावनायें भी दे लो और खूब अच्छी तरह सुखा लो। मात्रा ६ माशे से एक तोला है। दिन में तीनबार गाय के ताजे मठे से दो। प्रति-बार उसी समय बनाया गया, बिना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पानी मिलाये ताजा मठा दें। मठे में भुना जीरा और सैंधानमक अंदाज से मिला लें। यदि सूजन भी हो तो फिर चावल के धोवन से दें।

(१०१) मुखव्रण-हर (मुंह के छालों की औषध)—

नीला-थोथा देशी कपूर पत्थर का चूना —३-३ माशे।
संगजराहत भुना सुहागा सफेद-कत्था खड़िया-मिट्टी —१-१ तोले।

—इन्हें कूट-पीसकर कपड़छन करलो और बाद में खरल में डालकर सुरमे की तरह घोंटो। इसे छालों पर लगाकर लार टपकाओ। फौरन आराम होगा। इसका प्रयोग सफेद छालों, मुंह की बदबू, पायरिया, दन्तशूल और अन्यान्य दतरोगों पर भी उत्तम प्रभावक है। दवा पेट में न जाने दें, अन्यथा दनादन के करने की नौबत आजायगी। बच्चों पर यह प्रयोग करना हो तो इसमें से नीलाथोथा और चूना दोनों अवश्य अलग करदें। सुपरीक्षित है।

(१०२) अग्निदग्ध-नाशक मरहम—

महिलायें चूल्हे पर काम करने के कारण बहुधा इसकी शिकार हो ही जाती हैं। ऐसी स्थिति में यह सस्ता प्रयोग बहुत अच्छा काम करता है। आवश्यकता पर फौरन तैयार करलें। प्रयोग इस प्रकार है—

सफेद राल (खूब बारीक पिसी हुई) दो-तोले लें और अलसी का तेल बीस तोले लें। इन दोनों को मिलाकर कढ़ाई में डालें और पकावें। खूब पक जाने पर उतार कर कपड़े में छान लें। फिर एक कांसे की थाली में रखकर चूने के पानी से खूब धोवें। १०१ बार धोना बहुत ही अच्छा है। श्वेत-मरहम बनेगा। बहुत ही अच्छा प्रयोग है। इसे चौड़े मुंह की शीशी में भरलें।

इसे जले हुए स्थान पर लगाने से जलन फौरन ही शान्त होती है। घाव शीघ्र ही भर जाता है। साथ ही साथ यह घाव का निशान भी नहीं रहने देता। शीघ्रता या और किसी कारण से यदि आपको अलसी का तेल न मिले तो नारियल का तेल काम में लें। परीक्षित है।

(१०३) वातविकार-नाशक 'घरेलू तैल'—

यह प्रयोग घर पर ही फौरन तैयार किया जा सकता है। वात-रोगियों के लिए परमामृत है। जब कभी और जहां-कहीं भी वात-दर्द

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उठे, फ़ौरन धीरे-धीरे खूब मल दीजिये और बाद में भाफ से सेक करिये। पसीना आ जायगा और दर्द मिट जायगा। ध्यान रहे कि भाफ के बाद रोगी को हवा न लगने दें।

'वातविकारान्तक तैल' का प्रयोग इस प्रकार है—

पिसा हुआ उत्तम देशी कपूर एक तोला। मिट्टी का तैल ४ तोला।

दोनों को मिलाकर शीशी में भरदे और डाट लगा दे। आधा घन्टा धूप में रखकर जोर से हिला ले, दोनों मिल जांयगे। बस, दवा तैयार है। ऊपर की विधि से प्रयोग करें।

(१०४) वातविकार-नाशक-'सस्ता तैल'—

महिलाओं में वातविकार के कारण तज्जनित-कष्ट अधिक होते हैं। अतः उनके लिए एक सस्ता-सा प्रयोग और दे रहे हैं। वह यह है—

धतूरे का पका गीला फल १ नग। धतूरे के पत्ते २१ नग।
सरसों का तैल आधा सेर।

—पत्तों और फल को खूब कुचल डालो और फिर तैल में डाल दो। बाद में कढ़ाई में रखकर मंदाग्नि से पकाओ। पत्ते और फल जल जांय तो उतार कर उन्हें तैल में ही घोंट दो, फिर छानकर शीशी में भर लो। यह ऊपर के प्रयोग से अच्छा है और बदबूदार भी नहीं है। गुणोंमें भी श्रेष्ठ है। ऊपरकी नं० १०३ की विधिके अनुसार आवश्यकता पर काम में लीजिये। अत्यन्त सुपरीक्षित है।

(१०५) योषापस्मार और कम्पवात पर उत्तम-प्रयोग—

यह प्रयोग श्री डॉ० रामजीवन जी त्रिपाठी, फतहपुर द्वारा प्रकाशित किया गया था। इसका प्रयोग मैंने अनेकों स्थानों पर किया और सफलता पाई। इस अनुभूत योग से पाठकों को भी परिचित कर देना आवश्यक समझ कर यह प्रयोग यहां देरहा हूँ। प्रयोग यह है—

पीपलामूल रास्ना खुरासानी-अजवायन, जटामांसी २-२ तोले।

—इनको जौकुट करके आधा सेर पानी में औटाइये। जब २० तोला पानी शेष रह जाय तो मल-छानकर शीशी में भर लें। यह हिस्टेरिया और कंपवायु (कंपनी-वायु, जिसमें शरीर के अंजर-पंजर, अंग-प्रत्यङ्ग कांपते ही रहते हैं) की अत्युत्तम औषध है, क्योंकि इसके

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

घटक बड़े ही महत्वपूर्ण हैं। जैसे खुरासानी अजवायन 'अवसादक' है, एलवा 'उत्तम आर्तव-शोधक है, जटामांसी उत्तम 'मस्तिष्क-प्रभावक' अवसादक और आक्षेपहारक है और पीपलामूल वातवाहिनियों पर अच्छा प्रभाव डालने वाला एवं निद्रल है।

२-२ तोले की मात्रा में दिन में इसे ४ बार तक दें।

(१०६) दांत और मसूढ़ों के दर्द पर—'लाल दवा'—

जबलपुर के एक प्रख्यात रईस इस औषध को मुफ्त बांटते हैं। आराम भी दवा लगाते ही होता है। बहुत अच्छा प्रयोग है। बड़ी कठिनाई से प्राप्त हुआ है। आप अवश्य इसे बनाकर रखिये। प्रयोग अत्युत्तम है और इस प्रकार है—

एक तोला 'नीलाथोथा' (तुत्थ) लेकर उसे तवे पर भूनलें, भुनकर वह हलके नीले रंग का सफेदसा हो जायगा। बादमें एक तोला पपरिया कत्था चूल्हे में जलाकर कोयला करलें। फिर दोनों को मिलाकर सुरमे की तरह खूब बारीक घोंट लें। अन्त में २॥ तोला गेरू भी मिलाकर घोंट लें। बस, 'लाल दवा' तैयार हो गई। जिस दांत-दाढ़ में दर्द हो या मसूढ़े में चीस हो, इस दवा को लगाकर नीचे लार टपकाओ।

इससे हिलते हुए दांत भी मजबूत हो जाते हैं। इतना खयाल अवश्य रखिये कि दवा पेट में बिलकुल भी न जाय, प्रयोग के बाद इसे बाहर कुल्ला करके निकाल दें। सुपरीक्षित है।

(१०७) प्रसूता-रोगों पर सरल सुपरीक्षित-प्रयोग—

हम अपनी 'धर्मार्थ-चिकित्सालयों के प्रयोग' नामक पुस्तक में धर्मार्थ औषधालयों में विशेषतौर से चलने वाली औषधों पर अपना सम्पूर्ण अनुभव स्पष्ट करेंगे। किन्तु उसकी एक बानगी यहां दे-देना भी आवश्यक है। हालां कि प्रसूता की औषधों के विषय में नं० ८४ में आवश्यक इशारा कर दिया है, किन्तु यदि समय पर वे औषधें न मिल सकें तो निम्नलिखित सरल-औषध से काम चलाइये।

'सोंठ और कायफल' इनका कपड़छन चूर्ण प्रसूता की परमौषध है। धर्मार्थ औषधालयों में कायफल का कपड़छन चूर्ण रहता है, बस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यही औषध है और इसे सोंठ के साथ मिलाकर दे दिया जाता है। इन दोनों को सम भाग लें। मात्रा प्रतिवार में चार रत्ती से एक माशे तक दें। इसे प्रारम्भ में आधा-आधा घन्टे में और २-३ मात्रायें देने के बाद १-१ घन्टे में और फिर दो-मात्राओं के बाद ३-३ घन्टे में दें। सिर्फ २-३ दिन ही यह औषध देनी होती है।

इससे प्रसूता का ज्वर, शरीर-दर्द, श्वास, कास आदि विकार सत्वर ठीक हो जाते हैं। वातविकारों, कण्ठरोगों में भी यह अच्छी है। इससे प्रसूता के पेट में संचित रतूबत बाहर निकल जाती है और गर्भाशय शुद्ध हो जाता है। कटफल का प्रयोग मासिक खोलने में भी किया जाता है। कहीं-कहीं कायफल के बारीक चूर्ण को गुड़ में मिलाकर, बत्ती बना योनि में रखवा, मासिक खोला जाता है। उत्तम प्रयोग है।

(१०८) आर्तव-शोधक अर्क—

आर्तव की अशुद्धि से महिलाओं में अनेकानेक रोग पैदा हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में यह प्रयोग अवश्य काम में ले। प्रयोग यह है—

मालकांगनी, देशी मोथा, नीम की कोंपल प्रत्येक १०-१० तोला।

—शाम को एक मिट्टी के बड़े पात्र में डालकर चार सेर पानी में भिगो दें और खूब मथ दें। प्रातः उसे आग पर चढ़ाकर भभके से अर्क निकाल लें और बोतलों में भरकर रखलें। इसकी मात्रा २ तोला है। अर्क कुछ बदजायका रहता है अतः पीते वक्त इसे मधु या मिश्री से मीठा किया जा सकता है। प्रतिदिन दिन में तीन-चार दें।

इससे किसी कारणवश यदि आर्तव रुक गया होगा तो १५ दिन में खुल जायगा। साथ ही साथ उसकी शुद्धि भी हो जायगी।

(१०९) आर्तव-शोधक रामबाण-वटी—

कभी-कभी ऊपर के योग के अलावा इसे भी काम में लेते हैं। यह ऊपर के प्रयोग से भी अधिक अच्छा है। प्रयोग इस तरह है—

मुर्र गोंद, एलवा ५-५ तोले। अकरकरा, केशर २॥-२॥ तोला।
घी में भुनी उत्तम हीरा हींग १। तोला। लोहभस्म ५०० पुटी ६ माशे।
स्वर्णमाक्षिक भस्म तीन माशे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

—पहिले मुरगोंद, एलवा और अकरकरा; इनको अलग-अलग घोंट-पीसकर खरल में डालकर मिलाले, फिर स्वर्णमाक्षिक और लोह-भस्म मिलावें। फिर भुनी हुई हींग मिलाकर खूब घोंटे। अन्त में २० तोले गुलाबजल में केशर भिगोकर और फिर घोंटकर इसी में मिलालें और घोंटकर सुखा लें। बाद में मधु या पुराना गुड़ डालकर घुटाई करें और २-२ रत्ती की गोलियां बना लें।

प्रातः-सायं १-१ गोली दूध से दें। संभव हो तो ऊपर से नं० १०८ वाला अर्क भी पिलादें। यह प्रयोग, आर्तवशोधक, बलवर्धक एवं प्रसूत-रोगनाशक भी है। आवश्यकता पर गौरव के साथ इस प्रयोग को काम में लीजिये। बहुत ही अच्छा है। सुपरीक्षित है।

शक्ति-वृद्धि के लिये प्रारम्भ की दोनों-चीजें (मुरगोंद एवं एलवा) हटाकर यह औषध उक्तविधि से तैयार करलें और २-२ रत्ती की गोलियां बनालें। प्रातः-सायं दूध से १-१ गोली दें।

(११०) सम्पूर्ण-प्रदरों पर अपूर्व-योग—

इस प्रयोग को जाड़ों में बेखटके किया जा सकता है। गरमियों में सावधानी से करें और रुग्णा को गरम चीजों से बचाये रखें। इस प्रयोग के करने से मल का रंग काला-काला-सा हो जाता है। किन्तु इससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह उत्तम योग इसप्रकार है। देशी नील १ तोला। कीकर (बबूल) की ताजी नरम कली ३ तोला।

—दोनों को कूट-पीसकर इतना घोंटें कि गोलियां बन सकें। बाद में दो-माशे की गोली बना लें। प्रातः-सायं १-१ वटी दूध के साथ दें। सभी प्रदरों में अद्भुत लाभ-दर्शक प्रयोग है। अवश्य काम में लें।

(१११) मृतवत्सार्थ अत्युत्तम अमीरी-योग—

यह प्रयोग अमीरों के लिये है। काम बहुत अच्छा करता है। इसलिये यहां दिया जा रहा है। जिनके बच्चे हो-होकर मर जाते हों, जीते न हों; और जिन्हें बार-बार गर्भस्राव हो जाता हो, वे इसका प्रयोग अवश्य करें। प्रयोग यह है—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनबिंधे उत्तम कोटि के मोती २॥ माशे। अम्बर ४ रत्ती।
सोने के वर्क सात नग। चांदी के वर्क १४ नग।
माजू, कहरवा, अगर, खरबूजे के बीजों की मिंगी, खुरपे के बीजों की मिंगी, सफेद चन्दन का बुरादा, लाल चंदन का बुरादा प्रत्येक ५-५ माशे।
आबरेशम, गिले अरमनी, दरूनज अकरबी —२॥-२॥ माशे।

—इनमें से जो काष्ठादि औषधें हों उन्हें पीस लें और कपड़छन करलें। फिर मिंगियों को मिलाकर खरल करावें। बाद में मधु मिलाकर खूब घोंटें। जो मधु का प्रयोग न करते हों वे मधु न डालें। फिर सोने-चांदी के वर्क और अम्बर डालदें और सबसे अन्त में गुलाबजल में घुटे हुए मोती डालकर सावधानी से खूब घोंटकर तैयार करलें।

इसकी मात्रा २ माशे से ३ माशे तक की है। प्रातः-सायं दोनों समय दूध से दें। इसे गर्भधारण के एक माह बाद से प्रारम्भ करना चाहिये। मृतवत्सार्थ एवं हमेशा गर्भस्राव से पीड़ित होने वाली महिलाओं के लिये अत्युत्तम प्रयोग है। सुपरीक्षित है।

(११२) प्रदरनाशक अव्यर्थ-वटी—

यह प्रयोग अपने ढंग का बिलकुल ही निराला और अनूठा है। इसका प्रयोग हजारों रुग्णाओं पर सफलता पूर्वक किया जा चुका है। आप जब अन्य-प्रयोगों से हताश हो जांय तो इसे अवश्य काम में लेकर देखें। आप आश्चर्य करेंगे। प्रयोग इस तरह है—

चूहे की मेंगनी साफ-साफ लेकर चुनलें। चूहे सर्वत्र होते हैं और उनकी विष्ठा (मेंगनी) सर्वत्र मिल जाती है। इसे समभाग पुराने गुड़ में मिलाकर खूब घोंट लें और ३-३ रत्ती की गोलियां बना लें।

रोज प्रातः-सायं १-१ वटी दूध से दें। दूध कुनकुना हो और मिश्री मिला हो। इससे बड़े वेगवाला प्रदर भी शीघ्र ठीक हो जाता है। बाद में पौष्टिक—सुपाच्य चीजों का प्रयोग करें। सुपरीक्षित है।

(११३) पेटदर्द-नाशक श्रेष्ठ-प्रयोग—

इससे कैसा भी पुराना पेटदर्द क्यों न हो, अवश्य ठीक होगा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सोडा बाई-कार्ब (खाने का सोड़ा) पावभर। जवाखार (उत्तम) ५ तोला। सज्जीखार ५ तोला। स्नुही (सेंहुड) का क्षार २॥ तोला।

—सबको मिलाकर कुमारी-स्वरस (घीग्वार के रस) में घोंटें। चौगुना कुमारी रस डालें, चाहे धूप में रखकर सुखा लें। मात्रा १ से २ माशे तक; गरम पानी के साथ दें। भयानक पेटदर्द, गुल्म, अजीर्ण, आध्मान आदि रोगों में रामबाण है। सुपरीक्षित है।

(११४-१५) योनि-रोगों से बचाने वाले दो अत्यावश्यक-मंत्र—

महिलाओं में सबसे बड़ी बीमारी अजानकारी और लज्जा है। लज्जा के कारण वे रोग को छिपाती हैं और अजानकारी के कारण रोग तेजी से पनपता रहता है। योनि-रोगों में तो यह बात विशेष उल्लेखनीय है। इन दोनों स्थितियों से महिलाओं एवं उनके अभिभावकों को विशेष रूप से सतर्क रहना चाहिये।

१—योनि-रोगों का प्राथमिक कारण अजानकारी या उपेक्षा है। याद रखो कि जिस प्रकार नाक-आंख-मुंह की सफाई की प्रतिदिन आवश्यकता है, उसी प्रकार योनि की सफाई की आवश्यकता भी दैनिक है। आवश्यक-प्रसंगों को छोड़कर, प्रतिदिन ठंडे पानी से प्रातः स्नान करते समय योनि को ठंडे पानी से अच्छी तरह धोकर साफ कर लेना चाहिये। मैथुनोपरान्त भी, यदि गर्भ-धारणार्थ यह क्रिया हुई हो तो थोड़ी देर ठहर कर बाद में, ठंडे पानी से योनि भली-भांति धो-डालनी चाहिये। इससे गर्भस्राव का खतरा भी नहीं रहता। शरीर के अन्य भागों की अपेक्षा योनि की सफाई प्रातः-काल विशेष रूप से अवश्य कर लेनी चाहिये। इससे सभी प्रकारके योनिरोगों से निश्चित बचाव रहेगा।

२—दूसरी बात यह है कि मूत्र-विसर्जन के बाद कुछ न कुछ क्षारीय मूत्र-भाग योनि में लगा रह जाता है। उसे यदि साफ न कर दिया जाय तो क्षार-भाग के कारण खुजली, दाह एवं अन्यान्य रक्त-विकृतियों का होना सम्भव है। जो महिला मूत्र-विसर्जन के बाद, ठंडे पानी से योनि-प्रक्षालन कर लेती है, वह योनिरोगों का शिकार नहीं होती।

योनि की बदबू, शुष्कता, चिपचिपापन, कृशता प्रभृति विकारों

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

को मिटाने के लिये उक्त दो-मंत्र तत्काल फलप्रद हैं। इसके साथ यह भी याद रखें कि जैसे मशीन के छेददार कल-पुर्जों में तेल देने की आवश्यकता हुआ करती है, उसी प्रकार इस गुप्त-स्थान को भी विशुद्ध घृतादि के प्रलेप द्वारा, विशुद्धि के पश्चात्, स्निग्ध कर ही लेना चाहिये। नारियों में प्रायः वातज-विकार अधिक होते हैं, उनसे संरक्षण के लिये यह उपाय उक्त दोनों उपायों के साथ अवश्य कर लेना चाहिये। रात्रि को सोने से पूर्व योनि-प्रक्षालन करके यह उपाय करना विशेष सुविधा-युक्त है। ये दोनों उपाय लाखों महिलाओं पर सुपरीक्षित हैं।

(११६) बिना आपरेशन के टी. बी. के व्रण भरनेवाला शर्तिया-योग

विकट करामात है, आयुर्वेदीय औषधों की। आयुर्वेद को पढ़ने और पढ़ाने की अब विशेष आवश्यकता हो गई है। लाखों रुपये, आयुर्वेदीय औषधों को बिना जाने, इधर-उधर की बातों में खर्च होजाते हैं। तिस पर वह रुपया भारत में भी नहीं रहता, विदेश पहुँचता है।

टी. बी. का हौआ आजकल सर्वत्र तेजी से हावी हो गया है। इसका नाम सुनकर ही अच्छे-अच्छे घबड़ा जाते हैं। बड़ी परेशानी होती है। धन-जन दोनों का ही नाश हो जाता है। ऐसी स्थिति में जब कि डाक्टर ने टी. बी. बता दिया और 'एक्सरे' द्वारा भी जांच हो गई कि इसे फेंफड़ों के दोनों साइड का तपेदिक है। रोगी तो रोगी, घरवाले तक घबड़ा जाते हैं। मेरे प्यारे भाइयो, आप बिलकुल भी मत घबड़ाइये। आयुर्वेद के इस चमत्कारी-प्रयोग को बेधड़क काम में लीजिये। अनेकों ओपरेशनों की परेशानी सहने के बाद भी, जिनके टी. बी. के घाव ठीक नहीं हुए; उनके घाव इस सरल, अनुपम और सर्वत्र सुलभ आयुर्वेदीय-योग से सत्वर भर गये। इस प्रयोग को आप करोड़ रुपये में भी सस्ता समझिये।

अच्छा तो प्रयोग इस प्रकार है, इसे भली-भांति समझ लें।

किसी को भी टी. बी. हो जाय, चाहे वह गले का हो, या फेंफड़े का हो; अथवा चाहे जहां का हो और परीक्षण के बाद डाक्टर आपरेशन की राय दें, और 'एक्सरे' द्वारा जिसका भली-भांति पता लग गया हो,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उस स्थान पर आप निम्नलिखित-प्रलेप करिये, आप विना आपरेशन के ही टी बी. को सरलता से ठीक कर लेंगे।

अपामार्ग, चिरचिरा, चिंचटा, अद्धाझारा या आधाझारा इत्यादि अनेकों नामवाली सर्वत्र सुलभ रूखड़ी को सब जानते हैं। स्नानादि से शुद्ध होकर इसकी जड़ खोद लाइये और सिलपर पानी के साथ इसे बारीक से बारीक घोंट डालिये। फिर इसका टी. बी. के घावों पर प्रलेप कर दीजिये। हड्डियों की टी. बी.. के लिये यह प्रयोग सर्वोत्तम है। प्रतिदिन ताजा प्रलेप करते रहिये। प्रलेप करने के वाद वह सूख न जाय इसलिये ऊपर से उसपर अंडी का पत्ता रखदें और ऊपर से रुई रखकर बांध दें। यदि टी. बी. कंठमाल या नरम स्थानों पर हुआ हो तो वहां अपामार्ग की जड़ न लाकर, मात्र उसकी पत्तियां ही लावें और बारीक घोंट-पीसकर उस मुलायम-स्थान पर प्रलेप करदें। जिन टी. बी. केसों में डाक्टर आपरेशन की राय देते हैं, उसमें आवश्यकतानुसार उक्त विधि से यह प्रयोग करें। अवश्य लाभ होगा और आपकी थैली भी डाक्टरों, विदेशी एजेण्टों के हाथ में जाने से बच जायगी। प्रयोग आवश्यकतानुसार तीन से सात दिन तक करना पड़ता है। साथ में पहिल बताई गई नं० ४१ से ४७ तक की औषधों का प्रयोग भी सुविधानुसार अवश्य करिये। अवश्य लाभ में रहेंगे।

यह प्रयोग जबलपुर के अत्यन्त ख्याति-प्राप्त, लगभग ७० वर्ष की आयु वाले, वयोवृद्ध सज्जन से पूरे इतिहास के साथ, जिसमें डाक्टरों द्वारा ८-८, १०-१० आपरेशन करके असाध्य घोषित किये गये, रोगियों को ठीक किया गया, प्राप्त हुआ है। उन्हें धन्यवाद है। ध्यान रहे कि प्रलेप १-१ दिन के अन्तर से करें और एक घन्टे से अधिक लगा हुआ न रहने दं। बाद में पोंछकर घी चुपड़ दें। अन्यथा खून आ सकता है।

(११७) शीघ्र प्रसव-कारक चुटकुला—

और तो आपने अनेकों प्रयोग पढ़े हैं, किन्तु इस तत्काल-फलप्रद प्रयोग को भी अवसर पर अवश्य काम में लाइये। प्रयोग इसप्रकार है—

गाय का ताजा गोबर लेकर, कपड़े में रखें और उसका रस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निचोड़ लें। इस रस को २ से ४ तोले तक की मात्रा में गर्भिणी को पिलाने पर, शीघ्र प्रसव हो जाता है। अत्युत्तम प्रभावक योग है। याद रहे कि रुग्णा को इस औषध का पता न लगने दे। चामत्कारिक है।

(११८) यह गर्भिणी है या नहीं ? पेट में पुत्र या पुत्री, इसका समाधान

जिस स्त्री के गर्भ रह जाता है, तो किसी-किसी को तो उसी रात्रि के दूसरे दिन प्रातः उठते ही जी मचलाता है। कइयों का मुंह का रंग और ही हो जाता है और देह भी भारी-भारी- सी मालूम देती है। भोजन में अरूचि, पुरुष-संसर्ग से मन हटना, शृंगार में मन न लगना, जी मचलाना—उबकाई, आलस्य बना रहना, लेटने को ही सदा जी-चाहना, नीचे के शरीर में सुस्ती और मस्तक में दर्द बना रहना प्रभृति लक्षण हो जाते हैं। कइयों को खट्टी और सोंधी चीजें खाने का मन होता है, दस्त भी साफ नहीं लगता, नींद भी ठीक नहीं आती। स्तनों के मुख छोटे हो जाते और उनपर श्यामता छा जाती है। ये गर्भिणी के साधारण-लक्षण हैं। कभी-कभी धोका भी होता है, तब परीक्षार्थ यह उपाय करें—

करीब १॥-२ तोला मधु (शहद) को पानी में मिलाकर महिला को पिलावे। यदि थोड़ी देर बाद नाभि (टुण्डी) में कुछ दर्द-सा प्रतीत होतो अवश्य ही गर्भ है, यह निश्चय करले। दो-माह बाद पुत्र-पुत्री का निश्चय भी किया जा सकता है। कभी-कभी प्रथम माह में ही यह निर्णय संभव है। गर्भ में पुत्र होने की पहिचान यह है कि गर्भिणी की दाहिनी आंख कुछ बड़ी-सी रहती है; दाहिनी जांघ मोटी और भारी प्रतीत होती है, उस में कुछ दर्द भी रहता है। पहिले दाहिने-स्तन में दूध आता है, मुख प्रफुल्ल रहता है। स्वप्न में उत्तम पुरुष-लिंग के फूल दीखते हैं। सबसे अच्छी पहिचान यह है कि गर्भवती के दूध में जुआं सा चींटी डालकर परीक्षा हो सकती है। धर्मभीरु व्यक्ति ऊपर के उपायों से ही सन्तोष करें, यह उपाय न करें। किन्तु यह तो आयुर्वेद है; हमें इस दृष्टि से बताना ही होगा। यदि जुआं या चींटी दूध में जीती हैं और चलती-फिरती हैं तो अवश्य ही पुत्र है। आगे चलकर स्त्री के दौहृद (दोहला) की इच्छानुसार होने वाली सन्तान की अच्छाई और बुराई का निर्णय भी भली-भांति किया जा सकता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(११६) वन्ध्या-चिकित्सार्थ कतिपय सरल एवं-उत्तम प्रयोग—

(१) मासिकधर्म के प्रारंभ से ७ दिन, २-२ रत्ती हाथी-दांत चूर्ण-मिश्री फांकें।
(२) काले धतूरे के २-३ फूल मक्खन-मिश्री में मिलाकर चाटे।
(३) समुद्रफल दही में रखकर निगल जाय (४) अंडी का बीज चाबले।
(५) 'छोटी दुद्धी' छाया में सुखा कर, तीनदिन १-१ तोले दूध में लें।
(६) असगन्ध के काढ़े में गोदुग्ध और घी मिलाकर प्रातः ५ दिन पिये।
(७) सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल और नागकेशर सम भाग लेकर कपड़छन चूर्ण करे और ऋतुस्नान के चौथे दिन गोघृत में चाटले।

नोट—ये सभी प्रयोग शास्त्रीय हैं। किन्तु इसमें नं० ६ और ७ विशेष लाभप्रद हैं। विशेष वर्णन 'उत्तरार्द्ध' में वन्ध्या-चिकित्सा में देखें।

(१२०) प्रसूत-विकारों पर देहाती-प्रयोग—

यह प्रयोग प्रसूता के ज्वर, कास, शीत, सन्निपात, अपच, विशूचिका आदि पर उत्तम एवं सत्वर फलदर्शक है। देहात वाले इसे बेधड़क काम में लें। प्रयोग यह है —

आक (अर्क, अकौआ या आकड़ा) इसकी जड़ खोदलें और पानी से अच्छी तरह धो डालें, बाद में साफ कपड़े से पोंछलें। इस जड़ की छाल को चाकू से छील लें और छाया में सुखालें। इतना समय न होतो वैसी ही गीली ही खूब कुचल-कूटकर बारीक करलें। गीली हो तो तौलकर १० तोला लें। सूखी हो तो पांच तोला लें। इसी में—

लेंडी पीपल (छोटी पीपल) कालीमिर्च २॥-२॥ तोला लेकर, इनका बारीक कपड़छन चूर्ण करके उसी में मिलालें। गीली जड़-छाल होगी तो पानी नहीं मिलाना पड़ेगा। सूखी छाल में पानी की जगह 'अदरख का रस' अथवा 'पान का रस' मिलालें। फिर लगातार १२ घंटे मजबूत हाथों से घुटवाकर, कालीमिर्च जैसी गोलियां बांध दें और सुखालें।

आवश्यकतानुसार १ से २ गोली तक प्रतिबार गरमपानी या चाशनी या अदरख का रस-चाशनी अथवा पान का रस और चाशनी में चटावें। ऊपर से दशमूल काथ या गरमपानी अवश्य पिलादें। औषध

National Ayurvedic Library
Acc No 001239
LX3

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

देने के बाद रोगी को १५-२० मिनट लिटाये रखें और आराम करने दें। सफल सुपरीक्षित प्रयोग है। प्रथम दिन ही लाभ दिखाता है।

(१२१) प्रसूत-रोगों पर सरल-प्रयोग—

स्वर्णमाक्षिक भस्म २ तोला।　　कायफल का कपड़छन चूर्ण ४ तोला।

—दोनों को घोंटकर रखलें। मात्रा २ से ४ रत्ती तक। ऊपर बताये गये अनुपानों द्वारा यथावश्यक रीति से दें। यह मासिक-धर्म की रुकावट, गर्भाशय में संचित विकार, प्रसूता के विभिन्न-रोग और उनके उपद्रवों पर सत्वर फलदर्शक है।

प्रारंभ में ३ मात्रा १॥-१॥ या २-२ घंटे में दें। पुनः ४-४ घंटों में देते रहें। अव्यर्थ है।

—गर्भरक्षार्थ शास्त्रीय-बिधि—

हालां कि नं. ४६ के प्रयोग द्वारा गर्भस्राव-निवारक शर्तिया-प्रयोग दे-दिया गया है। फिर भी यहां पर तद्विषयक शास्त्रीय-पद्धति का उल्लेख कर देना भी आवश्यक समझते हैं।

गर्भरक्षार्थ गर्भिणी दौड़े नहीं, ऊंट-घोड़े की सवारी न करे, दुःख-मृत्यु-भयानक-कष्ट की बातें न सुनें—न ऐसे दृश्य देखे, पेट में चोट न लगने दे, तीव्र-वमन या विरेचन न ले। ओखली न कूटे, अजीर्ण में भोजन न करे। जिमीकन्द, गुड़, बासा अन्न, सड़ा-बिगड़ा पदार्थ आदि न खाय मैथुन, मूत्र-मलरोध, चिल्लाना, सिर में अधिक तेल डालना, कुएं में झांकना, व्रतोपवास, नशीली-चीजें, रतजगा, चन्द्र-सूर्यग्रहण का देखना, बिजली-गरजन सुनना, कसे वस्त्र पहिनना आदि का त्याग करदे।

उत्तम काम, शरीर की स्वच्छता, स्वच्छ वस्त्र, ऋतु के अनुसार आहार-बिहार, मधुर-सलोना-चिकना भोजन, सेव या आंवले का मुरब्बा, गुलकन्द, हरी गिलोय, पान मय-इलायची खाना, परमेश्वर का ध्यान, सुन्दर फल-फूल-चित्र या महापुरुषों के चित्र देखना, आदि अत्यावश्यक है।

गर्भस्राव के निम्नलिखित प्रारंभिक लक्षण होते हैं = (१) यकायक शारीरिक-शक्ति का ह्रास, मन में अकबकाई-व्याकुलता (२) जी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डूबता-सा लगे (३) खड़े होने से मस्तक घूमे और चक्कर आवे (४) पेट के ऊपर दोनों जांघों में रह-रहकर वेदना हो।

इनमें आगे बताये हुए उपचार सरलता से काम में लें।

गर्भस्राव या गर्भपात के निश्चित-लक्षण यह हैं—

(१) तरबूज का-सा पानी बहने लगे (२) कमर-जाघों-गुदा में पीड़ा मालूम दे, शूल-सा चले, रुधिर या चकत्ते-से बाहर निकलें। ऐसी स्थिति में गर्भरोधक उपाय व्यर्थ ही होंगे। तब गर्भस्राव हो जाने के बाद स्त्री की प्रसूता जैसी चिकित्सा करे, इसमें बिलकुल भी प्रमाद न हो, अन्यथा वह स्त्री आजीवन-रुग्णा बनी रहेगी।

गर्भस्राव की आशंका पर विभिन्न-उपचार—

१—मुलहठी, देवदारु, दुद्धी इनके साथ दूध पिये।

२—शतावर और दुद्धी का काढ़ा पिये।

३—कमर में कहरवा या मोती अथवा याकूत बांधे।

गर्भिणी को ठन्डे-स्थान में लिटादे, ठंडा पानी ठंडा-भोजन दे, ठंडे जल से योनि धोवे, बार-बार रुई भिगो-भिगोकर योनि में रखे, या रुई की बत्तियां बनाकर भिगो-भिगोकर रखे २-३ मिनट में बदले।

(१२२-१३०) गर्भिणी की मासिक चिकित्सा—

गर्भ स्राव और गर्भपात के अनेकों केसों में निम्नलिखित शास्त्रीय-विधि ठीक रहती है। ये ९-१० तरह की पोटलियां हैं। इनकी पोटली बांधकर दूध में डालदे। दूध में दूध से आधा पानी भी मिलादे। जब सारा पानी जलजाय, दूध मात्र रहजाय; तब पोटली निकालकर फेंकदें और दूध में मीठा मिलाकर गर्भिणी को पिलादे।

१—प्रारंभिक महीने में 'मुलहठी, दुद्धी और देवदारु' ८-८ माशे लेकर जौकुट-कर पोटली बनावे। दूध में उक्तविधि से औटाकर पिये।

२—दूसरे माह में—'कालेतिल-मजीठ और शतावर' ले।

—प्रारंभिक दोनों महीनों में मीठा, शीतल और पतला भोजन करे।

३—तीसरे माहमें 'दुद्धी-कमलगट्टा' ले। सांठी चावलों की खीर खाय।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

४—चौथे माह में–कटेली, कंभारी, क्षीरीवृक्ष या पलाश की कोंप लें दूध में औंटाकर पिये और घी अथवा ताजे दही से चावल खाय।

५—पांचवे माह में–दूध-चावल का आहार करे।

६—छठे माह में–'सहजना, गोखरू, गिलोय' दूध में औटा पिये। घी-चावल ले। या दूध-लपसी ले अथवा गोखरू घी में पकाकर खाय।

७—सातवें महीने में–'सिंघाड़ा, मुनक्का, केशर, मुलहठी, चीनी' औटावे। पिठवन घी में पकाकर खाय। अत्युत्तम गर्भपोषक है।

८—आठवें माह में– 'कैथ, कटेली, बेल, परवल, ऊख' इन सब की जड़ दूध में पकाकर पिये। कब्ज रहे तो दूध में अंडी का तेल और मीठा डालकर पिये।

९—नवें महीने–'सोंठ, मुलहठी, देवदारु' दूध में पककर पिये, या सोंठ-दुद्धी दूध में दे। नवें महीने के अन्त में कमल की जड़, कमल की नाल और फूल ३-३ माशे लेकर दूध में औटाकर पिये।

इन उपायों से गर्भस्राव या गर्भपात का कोई खतरा नहीं रहता। अथवा निम्नलिखित गर्भस्राव-निरोधक चूर्ण का प्रयोग करे।

(१३१) गर्भस्राव-निरोधक चूर्ण—

मुलहठी, देवदारु, कालेतिल, राल, शतावर, पीपल, कमल की जड़, जवासा, गौरीसर, वायसुरई, दोनों कटेलो प्रत्येक ५-५ तोले। सिंघाड़ा, कसेरू, मुनक्का १०-१० तोले। मिश्री ६० तोले।

—इनको कूटपीस कर बारीक चूर्ण करके डाटदार बोतल में रखें। ६-६ माशे औषध प्रातः-सायं १-१ मात्रा, १० दिन तक ले। यह क्रम सात माह रखे गर्भस्राव न होगा। सुपरीक्षित है।

गर्भवती की विशेषचर्या—

यदि गर्भवती कब्ज न रहने दे। कब्ज दूर करने के लिये थोड़ा-सा साफ अंडी का तेल दूध में मिलाकर, मिश्री डालकर पिये। प्रातः उठते ही यदि भूख लगे तो थोड़ा, सुपाच्य भोजन ले। जी मचलाय तो दूध पिये। नीबू के रस का शरबत, या नीबू का रस ठंडे पानी में मिलाकर ले। छाती में दर्द या जलन हो तो चिरायते का अर्क पिये, या राई का

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पलस्तर १०-१५ मिनट कौड़ी के नीचे के स्थान पर लगादे। किन्तु उलटा ही लगावे, अर्थात् राई ऊपर रखे और कपड़ा शरीर पर लगा रहे।

सौंधी वस्तु खाने का मन हो तो मिट्टी या ठीकरों की जगह, वंशलोचन या जहरमोहरा-खताई दे। गरी-मिश्री खिलावे।

(१३२) गर्भस्राव पर सुपरीक्षित अन्यर्थ शास्त्रीय-प्रयोग—

गर्भपात और गर्भशूल में आयुर्वेद में यह श्लोक आया है —

कुलाल-हस्तोद्भव-मृत्तिकाया - श्छागीपयः क्षौद्ररसस्य पानात् ।
गर्भच्युतिं शूलमयीं निवार्य, करोति गभ प्रकृति हठेन ॥

—अर्थात् बरतन बनाते समय कुम्हार बरतन को चाक पर ही ठीक करता हुआ बांस या लकड़ी की खप्पच से मिट्टी का बरतन एक-सा करता है। उस खप्पच की मिट्टी को वह हथेली पर पोंछ लेता है। इस हाथ की मिट्टी को 'कुलाल-हस्तोद्भव-मृत्तिका' कहते हैं। प्रत्येक देहाती इस बात को भलीभांति जानता है। अन्यथा जहां कुम्हार बरतन बनाता हो, वहां आप पहुँच जाइये और प्रत्यक्ष देख लीजिये।

इस मिट्टी को लेकर (अंदाज से ३-४ माशे) २० तोले बकरी के दूध में मिलालो और इसी में २ तोला उत्तम मधु भी मिलालो। इसे गर्भिणी को पिलादो। गर्भस्राव और गर्भपात की कोई भी आशंका न रहेगी। गर्भशूल भी दूर होगा। अत्युत्तम प्रयोग है।

जो बहिनें मधु-प्रयोग न करती हों, वे उसके स्थान पर पिसी हुई उत्तम मिश्री मिलालें। अनेक स्थानों पर इससे सफलता प्राप्त हुई है।

(१३३) वायु के कारण सूखे गर्भ की चिकित्सा—

यदि गर्भिणी की प्रारंभ से ही सावधानी रखी जाय, उसे मसूर-उर्द आदि वातल-पदार्थ दिये ही न जांय और प्रतिदिन दूध-वंशलोचन दिया जाय तो प्रायः यह रोग होता ही नहीं।

भाग्यवशात् यदि यह रोग हो जाय तो गर्भिणी की मालिश करावे। उसे सरल वात-नाशक औषध दे। असगंध का कपड़छन चूर्ण ४-४ रत्ती की मात्रा में दिन में ८-१० बार आधापाव दूध के साथ देते रहने पर यह रोग ठीक हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वात के कारण गर्भ सूखता जाता है और ८ तो क्या, १२ माह हो जाने पर भी प्रसव नहीं होता। ऐसी स्थिति में शास्त्रकारों ने जीवनीय-गण की औषधों का कल्क बनाकर उससे सिद्ध किये गये दूध को पिलाने की सलाह दी है। किन्तु हमारे ऊपर-लिखे दोनों प्रयोग अत्युत्तम हैं। ऐसे समय में, तीन-चार माह में भी बढे हुए गर्भ के विशेष-लक्षण न दीखें तो बेधड़क होकर 'दूध-वंशलोचन' का प्रयोग करिये। वंशलोचन असली ही लें। एक माह बाद 'असगंध और दूध' का प्रयोग भी चालू किया जा सकता है।

एक सुपरीक्षित प्रयोग यहां और भी दे रहे हैं —

मिश्री, मुलहठी और पाढल—तीनों समभाग लेकर बारीक कपड़-छन चूर्ण करलो और ३-३ माशे की मात्रा में प्रातः-दुपहर-सायं, दिन में तीन बार, सामने दुहाये हुए उत्तम गौदुग्ध के साथ दो। प्रतिवार आधा-पाव दूध अवश्य हो। पावभर लेना और भी अच्छा रहेगा। देखा गया है कि वायु से सूखने वाले गर्भ को ताजा करने के बाद भी बच्चा १२ या १४ माह बाद पैदा होता है।

(१३४) योनिस्राव के कारण गर्भपुष्ट न होने पर—

कई अवस्थाओं में गर्भिणी की योनि से प्रतिमास एक विशेष-प्रकार का रक्तिम-स्राव हुआ करता है। इसके कारण भी गर्भ के बढ़ने में कठिनाई होती है। ऐसे गर्भ दो-दो वर्ष बाद तक पैदा होते हुए देखे जाते हैं। एक विधवा के मामले में ऐसे ही एक प्रसंग ने बड़ा तूल पकड़ लिया था, किन्तु वह सच्चारित्रा थी। परीक्षण के बाद इसीप्रकार का गर्भ प्रतीत हुआ। किन्तु यदि अब ऐसा कोई प्रसंग आजाय तो अत्यन्त सावधान रहिये। ऐसी महिलाओं के गर्भ रहजाने पर भी प्रायः मासिक के समय रक्तिम-धब्बे आते रहते हैं। वह समझती है कि मैं महीने से हो गई हूं; किन्तु अन्दर गर्भ रहता है। मासिक नाममात्र-सा होता है। ऐसी स्थिति में ठीक परीक्षा कराने के पश्चात् निम्नलिखित उपचार करे।

मासिक प्रारंभ होने के पूर्व नं० १३२ वाला प्रयोग करे। अथवा पिसी हुई सफेद फिटकरी १।।-२ माशे लेकर कच्चे गोदुग्ध से फांकले

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और योनि में भीगे पानी की पट्टी रखे। पेडू पर भी ठंडे पानी की पट्टी रखे। पट्टी गरम होते ही बदल दे।

खाने के लिये जो औषधें नं० १३३ में बताई हैं, उनका प्रयोग करे। इन उपायों से मासिक के समय का अथवा बीच-बीच में यदा-कदा होने वाला योनि-स्राव रुक जायगा और गर्भ का उचित-रीति पोषण भी होगा।

(१३५) झूठे गर्भ पर एक अनुभव—

कई बार वायु गर्भाशय में घुसकर मासिक बंद कर देता है। हिकमत में इसे 'रिजा' लिखा है। इस में स्त्री की दशा गर्भवती-सी हो जाती है। ऐसे प्रसंग में भूख ग़ायब हो जाती, रंग में अन्तर आजाता, मैथुनेच्छा का अभाव होता और गर्भवती की भांति पेट में कड़ापन और गति-सी होती है। दबाने पर वायु दायें से बायें और बायें से दायें होती है।

ऐसे प्रसंग में उचित-परीक्षण की अत्यावश्यकता रहती है। जब रोगनिर्णय हो जाय तो महानारायण-तैल में रुई की बत्ती तर करके योनि में रखनी चाहिये। सौभाग्य-शुन्ठीपाक आदि योग्य वातनाशक प्रयोग करना चाहिये। 'घी-गुड़-दानामेथी' तीनों को समभाग लेकर हमामदस्ते में कूट लें और १-१ तोले के छोटे मोदक (वटक) बनालें। इसे ऐसी महिला को देने से वायु निकल जायगा और रोग समाप्त हो जायगा। गर्भाशय के मुख पर लेप भी रखना पड़ता है। इसका विशेष वर्णन 'वन्ध्याचिकित्सा' लेख द्वारा 'उत्तरार्द्ध' में होगा।

(१३६) गर्भिणी की मस्तिष्क-झानजन्य मूर्च्छा पर—

जो गर्भिणियां अपना आहार-विहार व्यवस्थित नहीं रखतीं, अथवा गरीबी के कारण जिन्हें पोषक-खाद्य नहीं मिल पाता, वे इस रोग का शिकार हो जाती हैं। मस्तिष्क की कमजोरी के कारण, दिमाग में एक प्रकार की झनझनाहट होती है और तब गर्भिणी को झट बेहोशी आ जाती है। ऐसी स्थिति में गर्भिणी को जमीन या खाट-पलंग पर लिटादे। उसके वस्त्र ढीले करदे और मुंह पर ठंडे पानी के छींटे दे। बन्द किवाड़ों को खुलवादे, मुंह पर भीगे छन्ने से हवा करे। सिर पर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुलाब जल या अन्य सुगंधित ठंडा तेल लगावे। 'यू-डी कोलन' की पट्टी रखने का रिवाज आजकल अधिक प्रचलित है, किन्तु देशी-विधि ही सर्वश्रेष्ठ है। आसपास की भीड़ हटादे। घी-शक्कर-कालीमिर्च अन्दाज से मिलाकर चटादे और ऊपर से गरम करके अच्छी तरह ठंडा किया हुआ दूध पिला दे। पांच-सात दिन तक ३-४ बादाम पानी में भिगोकर फिर २-३ घन्टे बाद छिलका उतार कर, पत्थर पर चन्दन की तरह घिसें और गर्भिणी के सिर पर लेप कर दिया करें। संभव हो तो घिसे-बादाम दूध में मिलाकर मिश्री-कालीमिर्च के साथ पिला भी दिया करें। अमीर लोग गुलकन्द, सेव का मुरब्बा, चांदी के वर्क, गुलाब जल, अर्क वेदमुश्क आदि योग्यमात्रा में देते रहें।

(१३७) गर्भिणी के बांयटों की चिकित्सा—

यह रोग गर्भिणियों में पिछले समय में होता है। प्रायः छठे माह से लेकर, जब तक बच्चा पैदा न हो, यह शिकायत पाई जाती है। यह रोग नसों के तनाव से होता है। तब जैसे ही नसें तनती हुई मालूम दें, फौरन उस स्थान पर कपड़े को थोड़ा कसकर बांध दें। पोस्त के डोडों को गरम पानी में डालकर उबाल लें और उससे सेक करें। अफीम को पानी में घोलकर गरम करके सुहाता-सुहाता लेप करें। ऐसे समय में बालू की पोटली या नमक की पोटली से सेक करना भी ठीक रहता है। पहिले तवे पर बालु (रेता) या नमक रखकर गरम करलो, फिर एक कपड़े को पोटली में बांधकर, सिकाई करो। यदि शीघ्रतावश यह न हो सके तो गरम पानी करके बोतल में भरो और डाट लगा दो, इससे बांइटे वाले स्थान की सिकाई करो।

(१३८) गर्भिणी की कब्ज-चिकित्सा—

ये प्रयोग अपनी-अपनी स्थिति में सरल और सुपरीक्षित हैं। आवश्यकता पर अवश्य काम में लें। कब्ज से अनेक रोग हो जाते हैं और कब्ज मिटने पर वे मिट भी जाते हैं।

१—साफ अण्डी का तेल १ से १॥ तोले तक लें और दूध में पिलावें।

२—मुनक्का २ तोला, गुलाब के फूल १ तोला, अंजीर २ तोला। इन्हें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीसकर चटनी बना ले। ३-४ दिन में १-१ तोले की मात्रा में लेलिया करें। अंजीर के त्यागी उसकी जगह सौंफ मिला लें।

३—गर्भिणी को पके मीठे अंगूर और सेव दें। रोटी के साथ राब दें।

(१३९) जादू जैसा विरेचक-प्रयोग—

अनेकों स्थितियों में गर्भिणी को ऊपर वाले प्रयोग न देकर, इस प्रयोग से इच्छानुसार विरेचन कराए जाते हैं। प्रयोग निरापद है—

सुपारी, बड़ी हरड़ का छिलका, बबूल की कोंपल तीनों १-१ तोला लें।

—इन्हें जौकुट करके तीन पाव में औटा लें। एक छटांक पानी शेष रहने पर उतार लें और साफ छन्ने में छान डालें। जितनी बार छानेंगे, उतना ही अधिक दस्तावर प्रयोग होगा। २० बार छानने पर २० दस्त आवेंगे। ध्यान रहे प्रतिवार छन्ने के विभिन्न-विभिन्न भागों से छानें। जिस ओर से एक बार छाना है, उस ओर से दुबारा न छानें। सुपरीक्षित एवं तत्काल फलप्रद प्रयोग है।

(१४०) गर्भिणी के कतिपय-रोग और उनकी सफल-चिकित्सा—

१—गर्भिणी की हिस्टेरिया में—दूध में पान का रस मिलाकर दो।

२—मसूढ़े दुखने और दांत खोखले होने पर—रुई से दोनों कान बन्द रखो और लौंग के तेल में रुई भिगोकर रखो और लगाओ।

३—वायुवृद्धि में— ५-७ बादामगिंगी, १ माशा गेहूँ की भूसी खाय।

४—अफारे में—बच, रसौंत, हींग, काला नमक १-१ माशा, दूध में पिये।

५—मूत्र रुकनेपर-दाभ-दूब-कांस की जड़ें २-२ माशा, दूधमें औटा, पिये।

६—संग्रहणी में-चावल का सत्तू, आम-जामुनकी छालके काढ़े में ले।

७—वमन में—गेरू का बुझा पानी पिये या पीपल की जटा जलाकर, पानी में बुझाकर पिये या कपूरकचरी पीसकर चाशनी में चाटे।

८—पांव की सूजन में—दूध-वंशलोचन ले। प्रातः धीरे-धीरे घूमे।

९—निद्रानाश में—सोते समय थोड़ा-सा पानी पिये और फिर गीला कपड़ा हाथ में लपेट कर सो जाय।

१०-रुधिरस्राव में—अनार के छिलकों का काढ़ा बनाकर उससे डूस दे और फिटकरी के पानी में कपड़ा भिगोकर योनि के भीतर रखे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१४१) सुख से प्रसव करानेवाले कतिपय सुलभ-प्रयोग—

इन उपायों के करने से प्रसव के कष्ट से बचाव होता है। समय पर इनमें से जो भी उपाय बन पड़े, वह फौरन करें।

(१) अंडी का तेल नाभि (सुएडी या टुड़ी) पर मलें।
(२) दो-तोले अमलतास के छिलके पानी में औटा, शक्कर मिला पिलादे।
(३) गर्भिणी चुम्बक-पत्थर को हाथ में रखे या जांघ में बांधे।
(४) एक तोला बच पावभर पानी में उबाल कर पिये।
(५) तेल लगाकर गर्भिणी को गर्म पानी से नहला दे।
(६) गरमागरम खिचड़ी या गरम दूध या गरम पानी पिलादे।
(७) सांप की केंचुल की धूनी योनि में दे।
(८) हुलास (सूंघनी तमाखू) सुंघाकर छींक दिलावे।
(९) ओखली में धान डालकर, मूसल से कुटवावे।
(१०) घोड़े की लीद और कबूतर की बीट पानी में घोलकर पिलावे।
(११) लाल कपड़े में नमक बांधकर, बायें हाथ में लटका दे।
(१२) बारहसिंगे का सींग स्तनों पर बांध दे।
(१३) अडूसे की जड़ पीसकर योनि में लेप करदे।
(१४) केले की गांठ कमर में बांधो और बच्चा होते ही निकाल डालो।

(१४२) प्रसूता के दुग्ध-वर्धक उत्तम प्रयोग—

इन सरल उपायों के करने से प्रसूता में दूध की कमी दूर हो जाती है, जिससे वह बच्चे को पर्याप्त दूध पिला सकती है। अवसरानुसार उपयोग करें।

१—भाड़ में गेहूं उकरवा (आधे भुनवा) बराबर अखरोट के पते मिला, गोघृत में पूड़ियां बना, गाय के घी से ही ७ दिन तक खावे।
२—एक तोला शतावर-चूर्ण पावभर गाय के दूध में औटाकर पिये।
३—सफेद जीरा और सांठी चावलों की खीर खाय।
४—सौंफ और शतावर बराबर कूटले और भीगे चनों के पानी से ले।
५—गेहूँ के दलिया की दूध में खीर बनाकर खाय।
६—कमलगट्टों का बारीक चूर्ण दूध से ले। या जीरा दूध में मिला पिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

७—विदारी-कन्द (बिलाई कन्द) का स्वरस पिलावे।
८—गरम दूध के साथ लेंड़ी-पीपल का कपड़छन चूर्ण दे।
९—चारों मगज (कद्दू, खीरा, ककड़ी, तरबूज) २ तोले, जीरा ४ तोले और इलायची के बीज २ तोले मिलाकर चूर्ण करलो। दूध से दो।
१०-शर्बत नीलोफर (नील-कमल का शरबत) पिलाओ।

(१४३) स्तनशोथ (थनैला) और उसकी चिकित्सा--

बच्चों के सिर मार-देने आदि कारणों से यह दुखदाई रोग होता है।

१—नागरमोथा और मेथी बकरी के दूध में पीसकर लगावे।
२—अण्डी के पत्तों का रस निकाले, उसमें कपड़ा भिगोकर बार-बार रखे।
३—गुलाब, सेव, मँहदी और अनार; चारों की पत्तियां धो, साफ करके बराबर लो। पानी में बारीक पीस, गुनागुनाकर ३-४ बार लगाओ।
४—स्तनों में दर्द हो या तड़क गए हों तो 'ग्लिसरिन' चुपड़ो, या ५ तोले घी में एकतोला मोम-मिला, गरमकर पिघलाले। ठंडा होने पर लगावे।
५—अरबी गोंद १ तोला, फिटकरी ५ रत्ती महीन पीस लगा दो।
६—इन्द्रायन की जड़ पानी या गो-मूत्र में घिसकर लगाओ।
७—जौंक लगाकर खून निकलवा दो।
८—१०८ बार धोये हुए मक्खन में मुर्दासंग और सिन्दूर पीस-छानकर मिलालो और २१ बार धोओ, फिर उसे स्तनों पर लगादो। इससे फोड़े-फुन्सी-घाव आदि भी ठीक होंगे।
९—घीग्वार (गवार-पठ्ठा) की जड़ और हल्दी पीसकर लगाओ।
१०—नीम का तेल लगाना अत्युत्तम उपाय है।
११—यदि बच्चा स्तन काटता हो तो स्तनों पर चिरायता पीसकर लगादो।

(१४४) स्तनों में अधिक दूध भरने और तर्राने पर --

१—स्तनों पर तेल मलवा दो। २- दूध की-पुलटिस बँधा दो।
३—स्तनों पर रुई बांधकर, उन्हें कपड़े से पीठ की ओर कस दो

(१४५) दूध शुद्ध करनेवाले कतिपय प्रयोग—

कई महिलाओं का दूध विषैला होता है, जिससे उनके बच्चे मर भी जाते हैं। ऐसी स्थिति में निम्नलिखित दुग्धशोधक प्रयोग करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१—प्रातः प्यास लगने पर दूध की लस्सी में कालीमिर्च डालकर पियें।
२—दशमूल का काढ़ा घी मिलाकर पिलाओ। मूंग का यूष दो।
३—त्रिफला, गिलोय, शतावर और देवदारू का काढ़ा पिलाओ।
४—नीम के पत्ते, लालचन्दन, बच और चिरायते का काढ़ा दो।
५—भारंगी, दारुहल्दी, बच, अतीस पानी में घोंटकर पिलाओ।
६ तुलसी के पत्ते, कालीमिर्च और बच की चाय बनाकर दो।

(१४६) गर्भिणी को छठे-सातवें माह में प्रदर होने पर—

गर्भिणी अपने नीचे कंबल या ऊनी वस्त्र बिछाकर न सोवे। बिछौना गुदगुदा न रखे। कब्ज दूर करे और साधारण पोषक भोजन करे। औषध के स्थान पर प्रवाल, सत्व, सितोपलादि चूर्ण मिलाकर चाटे; और 'सज्जी, फिटकरी और सिरका' गरम पानी में मिलाकर प्रातःसाय योनि-प्रक्षालन कर लिया करे।

(१४७) प्रदरों पर प्रचलित शास्त्रीय प्रयोग—'चन्दनादि चूर्ण'—

सफेद चन्दन, जटामासी, लोध, खस, कमल-केशर, नागकेशर, बेलगिरी, नागरमोथा, मिश्री, हाऊबेर, कुड़ा की छाल, पाढ, इन्द्रजौ, बैतरा- सोंठ, मीठा अतीस, धवा पुष्प (धाय के फूल), रसौंत, आम की गिरी, जामुन की गुठली की गिरी, मोचरस, नीलकमल का पंचांग, मजीठ, इलायची और अनार के फूल।

—इन २४ औषधों को बराबर-बराबर तोलकर लो। बाद में कूट-पीसकर भली भाँति कपड़े में छान डालो। जितनी बारीक औषध होगी, उतनी ही गुणवर्धक होगी।

प्रदर को मिटाने में अत्युत्तम है। मैं धर्मार्थ औषधालयों में इसे बीस वर्ष से अधिक समय से प्रयोग में ला रहा हूं। पिता जी व बाबा जी भी इस प्रयोग को काम में लाते थे। प्रदर-नाशक अत्युत्तम प्रयोग है।

इसकी मात्रा २ से ३ माशे की है। इसे चाशनी में चाटकर ऊपर से चावल का धोवन (धोन) पी लेना चाहिये। दो तोले चावलों को दरदरा कूट लो, फिर थोड़े से पानी में धोकर उनका ऊपर का मैल निकाल दो। बाद आधापाव पानी में भिगोकर घंटे भर रखो और मलकर छान

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लो, यही 'तन्दुल-तोय' या 'चावलों का धोवन' है। दवा चाटकर ऊपर से इसे पियो। प्रातः, दुपहर और सायं तीन बार यह प्रयोग करो।

इससे सभी प्रकार के प्रदर, रक्तातिसार और रक्तार्श और खास-तौर से रक्त प्रदर बहुत शीघ्र ठीक होते हैं। आयुर्वेद का अमोघ अस्त्र है।

(१४८) प्रदरों पर रामवाण 'पुष्यानुगचूर्ण'—

यह भी आयुर्वेदोक्त प्रयोग रत्न है। प्रत्येक वैद्य शान के साथ इसका प्रयोग करता है। धोने की दवाइयों के साथ इसका उपयोग करने से कैसा भी हठीला प्रदर क्यों न हो, अवश्य ही दूर हो जाता है। यह प्रयोग भी सुपरीक्षित है:—

पाढ़, जामुन की गुठली की गिरी, आम की गुठली की गिरी, पाषाणभेद, रसौंत, मोइया, मोचरस, मजीठ, कमलकेशर, केशर, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, लोध, गेरू, कायफल, कालीमिर्च सोंठ मुनक्का-दाख, लालचन्दन, श्योनाक, कुड़ा, अनन्तमूल, धाय के फूल, मुलहठ और अर्जुन (कोहा)।

—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट-छान लो। मात्रा और सेवन विधि ऊपर के प्रयोग की भाँति ही है। इससे प्रत्येक प्रकार का प्रदर, अतिसार, रक्तातिसार, बच्चों के आगन्तुकरोग, योनिदोष, श्वेत-प्रदर, नीलाप्रदर, पीला और कालाप्रदर लालप्रदर, प्रभृति रोग अवश्य ठीक हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

(१४९-५३) योनि-दाह और उसकी चिकित्सा—

१—यदि योनि में दाह (जलन) रहती हो तो हमेशा धनियां-शक्कर मिलाकर फांको। डेढ़ माशा धनियां और तीनमाशा शक्कर मिलाकर फांक लो और ऊपर से पाव भर ठंडा पानी पियो। इस प्रकार दिन में ३-४ बार यह प्रयोग करना चाहिये। शीघ्र लाभप्रद है।

२—माघ-फागुन में आंवले आ जाते हैं। आंवलों को कूट कर उनका रस निकाल लो और मिश्री मिलाकर पियो। दो तोले आंवलों के स्वरस में, दो तोला मिश्री मिला सकते हैं। दिन में २-३ बार तक इस प्रयोग को करो। योनि की दाह मिट जायगी। अन्य ऋतुओं के लिये

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आंवलों के शीशी में भर लो और डाट लगाकर रखलो। आवश्यकता पर इसीको एक से डेढ़माशे की मात्रा में लेकर दूनीशक्कर या मिश्री मिला कर फांक लो और ऊपर से पाव भर ताजा पानी पी डालो। योनि-दाह को मिटाने में अकसीर है।

३—कमलिनी की श्वेत जड़ को, यदि वह ताजी हो तो, ठंडाई की भाँति घोंट-पीस लो और मिश्रीं मिलाकर पियो। योनि-दाह अवश्य मिटेगी। यदि कमलिनी की जड़ सूखी मिले तो उसे 'चांवलों के धोवन' में घोंट-पीस डालो और मिश्री मिलाकर पी जाओ। योनिदाह आनन-फानन में दूर होगी।

४—छोटी इलायची के बीज, शीतलचीनी, धनियां, खस और आंवला। इन्हें बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस-छान लो। इसकी मात्रा १ से १॥ माशे है। बराबर शक्कर मिलाकर प्रातः, दुपहर, सायं तीन बार पाव भर ठंडे पानी से दो। योनि-दाह, रक्तप्रदर, मूत्रदाह, पेशाब साफ न आना, हाथ-पैरों की जलन, गरमी बढ़ना, प्रभृति विकार मिटेंगे।

५ योनिदाह-शामक तैल'—पहिले बताई गई 'धोने की औषधों' से योनि धोकर फिर इस तैल को योनि में लगावें। विशुद्ध तिल-तैल में 'कपूर-पिपरमेंट' अंदाज में मिला लो और रख लो। सफाई के बाद इसे लगाओ। फौरन शांति मिलेगी। ध्यान रहे कि दाह दूर करने में तेल की अपेक्षा घी और भी अच्छा रहता है। अकेला 'घी-कपूर' का प्रयोग ही बहुत अच्छा होता है। हजारों बार का सुपरीक्षित है।

(१५४) अनेक योनि-रोगनाशक सुगंधित-घृत—

इस प्रयोग का मैं अत्यधिक प्रयोग करता हूं। आपके सामने निष्कपटरीत्या दिल खोलकर रखे देता हूं। आवश्यकता पर बेधड़क-प्रयोग करिये। प्रयोग यह है—

एक छटांक अत्यन्त विशुद्ध और ताजा घी लेकर एक कांसे की थाली में रखो और उसमें पाव भर पानी डालकर खूब फेंटो और उस पानी को फेंक दो। बाद में इसी प्रकार ५०-६० बार पानी डालकर धो डालो। फिर इसी में एक तोला कपड़छन की हुई हल्दी मिला दो। बाद

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में 'चन्द्रशेखर धारा' (तत्काल-फलप्रद प्रथम-भाग में देखो) ३ माशे मिला लो अथवा 'देशी कपूर, पिपरमेंट और अजवायन का सत' १-१ माशा लेकर मिला लो और चौड़े मुँह की ढक्कनदार शीशी में रख लो। नीम के काढ़े से योनि धोकर और साफ रुई से पोंछ कर इसे लगाओ।

इससे योनि की दाह, योनि से मवाद बहना, तिड़कन, चिनगें, मूत्र का कष्ट और योनि की बदबू प्रभृति अनेकों योनि-रोग दूर होते हैं। सुपरीक्षित है। यदि ऊपर लिखा हुआ नं० १५२ का प्रयोग खाने के लिये किया जाय और यह प्रयोग लगाने के काम में लिया जाय तो 'योनि-दाह' के लिये फिर अन्य प्रयोग ढूंढने की कोई भी आवश्यकता नहीं।

(१५५) विभिन्न योनि-रोगों पर कतिपय सफल-सरल प्रयोग—

१—यदि योनि में खुजली चलती हो तो—गिलोय (गुरबेल), बड़ी हरड़, आंवला १-१ तोला लेकर, पाव भर पानी में चाय की भाँति औटाओ और फिर ढककर रख दो। इसे छानकर इससे योनि धोओ। खुजली मिट जायगी। प्रातः-सायं दोनों समय धोओ और ऊपर से घी चुपड़ लो। यदि इसी के साथ-साथ नं० १५४ वाला प्रयोग भी काम में लिया जाय तो फिर पूछना ही क्या है? सुपरीक्षित है।

२—यदि योनि भीतर घुसजाय तो फिर करेले की जड़ पीसकर योनि में उसका लेप करो, वह योग्य स्थिति में हो जायगी।

३—घी का फाहा या विशुद्ध धुनी हुई तिली के तैल का फाहा या विशुद्ध मधु का फाहा योनि में ८-१० दिन रखने से सभी प्रकार के योनि-रोग दूर हो जाते हैं। परीक्षित है।

४—मैनफल, मधु, कपूर इनको पीस डालो और अंगुली से योनि में लगाओ। इससे योनि अत्यन्त सुन्दर और रोगरहित हो जाती है। योनि का संकोच भी होता है।

५—योनि में दर्द बना रहता हो तो इन्द्रायण की जड़ और सोंठ दोनों बराबर लेकर बकरी के घी में घोंटकर लगाओ। अडूसा, असगन्ध और रास्ना का प्रयोग भी इस काम के लिये उत्तम है। इन्हें ६-६ माशे लेकर पाव-भर दूध में डालो और उसी में आधा-पाव पानी भी मिला

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दो । फिर आग पर रखकर पानी जलालो और दूध छान पियो । इन दोनों खाने-लगाने के प्रयोगों को एक साथ करने से योनिशूल नष्ट होता है ।

६—योनिरोग,मन्दाग्नि, कृमिरोग में 'बड़ी सौंफ का अर्क' पियो।

(१५६) योनिरोग नाशक मोदक—

स्याहजीरा, सफेद जीरा, छोटी पीपल,कलौंजी,दुध बच, अडूसा, सैंधानमक, असली जवाखार और अजवायन —प्रत्येक १-१ तोले ।
घी ६ तोले । चीनी या मिश्री ३६ तोले ।

३—ऊपर की चीजों का कपड़छन चूर्ण करके घी में भली भाँति सेक डालो और फिर आग पर ही पिसी हुई चीनी या मिश्री मिला दो । फिर इसी के २-२ तोले के मोदक या लडडू बना लो। प्रातः इसका नाश्ता करके दूध पी जाओ । पचासों योनिरोग भगाने में अकसीर है। पाचनशक्ति की कमजोरी, प्रसूत, प्रदर एवं अन्यान्य स्त्री-रोगों को भी, वायु द्वारा बादलों की भाँति, भगाता है । सुपरीक्षित है ।

(१५७) महिलाओं के लिये परम अमृत 'फलघृत'—

यह आयुर्वेद का अनुपम रत्न है । इसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है । यह स्त्री-पुरुष दोनोंको ही अत्यन्त लाभप्रद है । इसके प्रयोग की मैं अत्यधिक शिफारिश करता हूं । ताजा प्रयोग बहुत अच्छा काम देता है । प्रयोग इस प्रकार है—

मजीठ, मुलहठी, कूट, बड़ी हरड़, बहेड़ा, आंवला, खांड़, खिरैंटी, असगंध की जड़, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, फूलप्रियंगु, कुटकी, कमल, कुमुदिनी, मुनक्का दाख, काकोली, क्षीरकाकोली, सफेद चन्दन और लालचन्दन प्रत्येक १-१ तोले ।
शतावर २ तोले । असगंध ४ तोले । इनकाचूर्ण करलो ।
उत्तम गोघृत ६४ तोले । शतावर का स्वरस १२८ तोले ।
दूध १२८ तोले । विदारीकन्द का स्वरस ६४ तोले ।

—ऊपर लिखे चूर्ण को पानी मिलाकर पीसो और लुगदी- सी बना लो । बाद में एक बड़ी कलईदार कढ़ाई में सब चीजों को डालकर मिला दो और धीमी आग से भली भाँति पकाओ । जब सब स्वरस आदि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सूख कर घी सिद्ध हो जाय तो उतारकर छान लो और रख दो। बस, 'फल-घृत' तैयार हो गया। ध्यान रहे कि यदि इसे आरने कण्डे की आग से सिद्ध किया जाय तो और भी ठीक रहता है। यह आयुर्वेद का एक जोरदार प्रयोग है। इसकी मात्रा प्रातः-सायं १-१ तोले की है। मिश्री में मिलाकर चाटें और ऊपर से दूध पियें।

—फलघृत की विशेषतायें—

बारबार गर्भस्राव या गर्भपात होना एवं मृतवत्सा (जिनके बच्चे हो-होकर मर-मर जाते हैं) तथा अठराहा (जिनके बच्चे आठ वर्ष की आयु होनेसे पहिले-पहिले महाप्रयाण कर जाते हैं) आदि रोगों से पीड़ित महिलाओं के लिये यह प्रयोग परमोत्तम है। जिनके कन्यायें ही कन्यायें होती हैं, उनके लिये भी यह प्रयोग शानदार है। इससे अनेकों योनि-रोग, मवाद बहना रजो-विकृति, गर्भाशय की निर्बलता एवं अन्यान्य खराबियां सरलता से ठीक हो जाती हैं।

पुरुष भी इसका प्रयोग कर सकते हैं। यह उत्तम शक्तिवर्धक एवं नपुंसकता-नाशक है। शरीर निखारता और सौन्दर्य बढ़ाता है।

(१५८-१६०) योनि-संकोचक प्रयोग—

प्रसव-प्रभृति विभिन्न-कारणों से योनि की विस्तीर्णता विविध-बाधाओं का कारण बन जाती है। कई लोग उस स्थिति के जीवन से ऊब उठते हैं, ऐसी स्थिति में नीचे लिखे प्रयोगों में से कोई भी प्रयोग बेधड़क काम में लीजिये। ध्यान रहे कि बार बार इन प्रयोगों का उप-योग न करें। प्रसव के २-२॥ माह बाद एक बार उनमें से कोई प्रयोग कर सकते हैं।

१-नई भांग को महीन पीसकर (कपड़छन करके) छोटी-सी पोटली में ३ माशे के लगभग बाँध लो और योनि को नीम के काढ़े से भली भाँति धोकर उसमें यह पोटली रख दो। ३-४ घण्टे बाद पोटली निकाल लो। योनि-संकोचन होगा। आयुर्वेद का सुपरीक्षित-रत्न है। 'शतवारं प्रसूतापि, पुनर्भवति कन्यका।' कहकर इसकी प्रशंसा की है।

२—मोचरस छह माशे लेकर उसका कपड़छन चूर्ण करलो। इसे विस्तृता-योनि में ३-४ घण्टे रखो। योनि सूक्ष्मरन्ध्रा हो जायगी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

'शतवारं सूतायारपि योनिः सूक्ष्मरन्ध्रा स्यात् ।' कहकर आयुर्वेद में इसकी बड़ी प्रशंसा की गई है। अनेकों ग्रन्थों में इसका उल्लेख है।

२—इमली के बीजों का ऊपरवाला लाल-लाल छिलका अलग करके, भीतर का सफेद भाग कूट पीसकर कपड़छन कर लो। प्रातः-सायं इसे भग में लगाओ। सरल देहाती योग है।

(१६१) दुबली-पतली महिलाओं को मोटा बनानेवाला योग—

हालांकि इसीप्रकार का एक प्रयोग पहिले दिया जा चुका है, फिर भी यहां पर एक सुपरीक्षित प्रयोग और भी दे रहे हैं। महिलायें इसका प्रयोग करें और साथ में दी गई हिदायतों पर भी पूरा-पूरा ध्यान रखें। प्रयोग इस प्रकार है:—

मीठे बादाम की गिरी ७ नग, असगंध नागौरी, कालीमूसली, और सफेद मूसली प्रत्येक १॥-१॥ माशे। बढ़िया छुहारा १ नग।

इन्हें शाम को या रात को पाव भर पानी में भिगो दो और प्रातःकाल बादाम की गिरी का ऊपरी लाल छिलका और छुहारे की गुठली निकाल कर फेंक दो। फिर इसे उसी पानी में अच्छी तरह घोंट-पीस डालो और कपड़े में ठंडाई की भाँति छान लो। इसमें इतना ही दूध भी मिला दो। गरमी के दिन हों तो शक्कर या मिश्री मिला कर पीजाओ। जाड़ों के दिन हों तो इसे उत्तम गोघृत १ तोले से बघार लो और फिर चम्मच से धीरे-धीरे पियो। बड़ा ही लाजबाब प्रयोग है। गरीब-अमीर सभी इसका उपयोग कर सकते हैं। अमीर लोग इसी में थोड़ी सी (१०१-२ दाने) केशर घोंट पीसकर और मिला लें।

मासिक-धर्म के चार दिनों को छोड़कर इसका प्रयोग करें। इससे हाथ-पैरों का दाह, सिर दर्द, हड़फूटन, दिल की धड़कन, घबरा-हट, प्रदर, अनार्तव प्रभृति रोग भी दूर हो जाते हैं। मस्तिष्क, हृदय एवं बुद्धि को शक्ति प्राप्त होती है। अवश्य प्रयोग करिये।

नीचे लिखे उपाय भी दुबले-पतलों को मोटा बनाते हैं—

साबूदाने और बादाम की खीर, चावलों की खीर, मूंग की दाल का हलवा, दूध-जलेबी (बढ़िया दूध, ताजी मैदा और उत्तम घी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

की बनी हुई) ऐसे ही दूध-इमरती, दूध-शकरकन्द, दूध-पिण्डखजूर आदि का भोजन भी मुटापा लाता है।

मीठा अनार, मीठा सन्तरा, मिश्री मिला अधौटा दूध, रबड़ी, शिखरन, दूध-रोटी दें। इन उपायों से भी दुबला-पतलापन मिटता है।

(१६२) पचासों रोगों पर अकसीर अनुपम प्रयोग—

यह प्रयोग लाखों रोगियों पर काम में लिया जा चुका है। भली भाँति सुपरीक्षित है। गरमियों के दिनोंमें इस प्रयोग के करने की मैं जोरदार शिफारिश करता हूं। इसका प्रयोग प्रत्येक पुरुष या स्त्री समान रूप से कर सकता है। यह गरमियों का अमृत है। इसका प्रयोग प्रायः प्रत्येक ऋतु में किया जा सकता है, फिर भी गरमी के दिन अधिक उपयोगी हैं प्रयोग इस प्रकार है—

एक तोला कतीरा-गोंद लो। इसे थोड़ा-सा दरदरा कर डालो। बाद में एक कांच के बरतन में, जिसमें सेर भर के करीब पानी आसके, आधा-सेर पानी भर दो, और ऊपर से दर-दरा किया हुआ कतीरा-गोंद डाल दो। यह काम शाम को या रात को करना चाहिये। प्रातः सारा बरतन भरा हुआ मिलेगा। इसे धीरे-धीरे चम्मच से खाजाओ। चाहो तो इसमें शक्कर या मिश्री भी मिला सकते हो। अथवा २॥-३ तोला मिश्री, आधा सेर पानी में घोलकर उसमें उक्त कतीरा गोंद डालो।

इससे विविध-प्रमेह, शुक्रतारल्य, मूत्रदाह, प्रदर, आर्तव की कमी, हाथ-पैरों के तलवे जलना, अधिक प्यास लगना, खुश्की-सी बनी रहना, हड़फूटन, सिर की जलन आदि-आदि बीमारियाँ पास में भी नहीं फटकतीं। अवसर पर और खास तौर से गरमियों में इसका प्रयोग अवश्य करिये। सुपरीक्षित है।

(१६३) जनसंख्या न बढ़ने देनेवाला-'प्रयोग-संग्रह'—

यह प्रयोग-संग्रह विभिन्न ग्रंथों से किया गया है। पाठक इन्हें आजमा देखें। सुपरीक्षित-प्रयोग पहिले लिख चुके हैं।

१—पीपल, बायबिडंग, सुहागा तीनों बराबर लेकर कपड़छनचूर्ण करले। ऋतुस्नान के बाद १-१ माशा दवा गरम दूध से ले।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२—हरड़ की मिंगी ४ तोले, मिश्री ४ तोले। इसकी ६ मात्रायें बनाले। १-१ मात्रा प्रातः-सायं तीन दिन खाय।

३—ढाक के बीजों की राख हींग मिलाकर ठंडे पानी से ले।

४—चूहे की मैंगनी, मधुमिश्रित करके योनि में धरे।

५—हाथी की सूखी लीद का चूर्ण समधु ले।

६—हर सबेरे १-१ लौंग निगल जाया करे।

७—स्नुही (सेंहुड या थूहर) का दूध २ रत्ती, शक्कर १ माशे मिला खाय।

८—चमेली के 'फूल की कली' निगल ले।

९—अपने बेटे के पेशाब पर पेशाब कर ले।

१०—माजूफल पानी से महीन पीसकर, उसमें रुई भिगो, गोला-सा बनाकर, मैथुन से पहिले योनि में रखे।

११—स्त्री-पुरुष एक या दोनों 'फ्रेंच लेदर' का प्रयोग करें।

बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने में ये उपाय सहायक होंगे।

(१६४) मरा हुआ बच्चा गर्भ से निकालना—

गर्भिणी के साथ मैथुन, प्रहार आदि करने से, शोक, फिक्र-चिन्ता से एवं मानसिक-दुःखों से बच्चा पेट में ही मर जाता है। तब गर्भ न तो फड़कता है और न हिलता-डुलता है। प्रसव जैसे दर्द भी नहीं चलते। शरीर का रंग पीला-काला-सा होने लगता है, गर्भिणी की श्वास में बदबू आने लगती है और विभिन्न-प्रकार के शूल चलते हैं। ऐसे समय बच्चा पत्थर-सा रहता है और गर्भिणी के हाथ-पैर शीतल हो जाते हैं। ऐसे समय में नीचे लिखे उपाय करो—

१—गर्भिणी को बिना देर किये जनाने-अस्पताल में पहुंचा दो।

२—इसी पुस्तक का नं० ७ वाला प्रयोग फौरन काम में लो।

३—शस्त्र-विशारद की सहायता ऐसे समय अपेक्षित है।

४—योनि में काले सांप की कांचली की धूनी दो।

५—गर्भिणी के सिर पर थूहर का दूध लगाओ। अथवा शीघ्र प्रसव-कारक प्रयोगों में से कोई योग्य-प्रयोग अविलम्ब करो।

६—बाद में प्रसूता को दशमूलक्वाथ दो, दशमूल-तैल को मलो, उबला पानी दो अर्थात् प्रसूता की भाँति चिकित्सा करो।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१६५) मरा बच्चा निकल जाने के बाद की 'अनुपम-औषध'—

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, बड़ी इलायची, हीरा-हींग, भारंगी, अजमोदा, अजवायन, कायफल, कड़वा अतीस, रास्ना और दशमूल;इन सब को बराबर बराबर लेकर, कूट-पीस-छान लो।

–इसे चाय की भाँति उबालकर और गुड़ मिलाकर रुग्णा को पिला दो। पेट की रहीसही सारी रतूबतं बाहर निकल आवेंगी। हजारों रुग्णाओं पर सुपरीक्षित है। प्रसव के बाद एवं प्रसूता के विभिन्न रोगों में मैं इसका प्रयाग अत्यधिक करता हूं। प्रसव के फौरन ही बाद इसे देने से जेर आदि का सारा भाग बाहर निकल आता है और गर्भाशय की सफाई भली-भाँति हो जाती है। गर्भाशय में कुछ भी बेकार-तत्व नहीं रहने पाता। सुपरीक्षित है।

(१६६) प्रसव के बाद की अनुभूत औषध–व्यवस्था—

प्रसव भली भ ति हो जाने पर भी प्रसूता को विभिन्न-रोगों से बचाने के लिए शीघ्र ही अभ्रक-भस्म का प्रयोग करना चाहिये। प्रसूता को अभ्रक-भस्म देने का प्रबन्ध हमारे यहां पुराने समय से चला आ रहा है। एक रत्ती उत्तम अभ्रक-भस्म पान में दे दी जाती है। ऐसी २ मात्रायें दिन भर के लिए पर्याप्त रहती हैं।

यदि यह दीखता है कि प्रसूता के पेट में रतूबत मौजूद है तो हम स्वर्णमाक्षिक भस्म और कायफल का कपड़छनचूर्ण दोनों २-२ रत्ती की मात्रा में देते हैं। यह एक मात्रा है, ऐसी तीन मात्रायें दिन भर में दी जाती हैं। जो लोग मधु का प्रयोग नहीं करते, उन्हें गुड़ की चाशनी के साथ औषध दें। ऊपर से दशमूल का काढ़ा भी पिला दें। यह प्रयोग प्रसूता का पेट साफ कर देता है। साथ ही साथ तेजो से बना रहनेवाला १०४ डिग्री तक का बुखार इसके प्रयोग से ठीक होजाता है। ज्वर की स्थिति में स्वर्णमाक्षिक भस्म एक रत्ती और कायफल कपड़छन २ रत्ती की मात्रा में दें। प्रत्येक १-१ घण्टे के बाद यह प्रयोग करें। तीन मात्रायें दे-देने के बाद २-२ घण्टे में दें। छह मात्राओं के बाद ४-४ घण्टे में देते रहे। ज्वर ठीक हो जायगा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह मेरा जोरदार अनुभव है, जो आप पर निष्कपटरीत्या प्रगट कर दिया है। अवसर पर इस अनुभव से अवश्य ही लाभ उठाइये।

(१६७-८) प्रसूता के विषय में दो आवश्यक वक्तव्य—

प्रसूता का समय १॥ माह का माना गया है, अथवा जबतक वह रजःस्वला न हो तबतक भी प्रसव के बाद उसे प्रसूता-नाम ही दिया जाता है। पहिली व्यवस्था अधिक ठीक है, क्यों कि दूसरी व्यवस्था के अनुसार तो पूरे वर्ष-तक प्रसूता मानना होगा। अर्थात् प्रसूता १॥ माह तक पक्के नियम और पथ्य से रहे। जैनों में १॥ माह बाद मय बच्चे के माता को मन्दिर में दर्शन कराया जाता है। यदि प्रसूता रुग्णा हो तो जबतक वह ठीक न हो जाय उसे प्रसूता मानो। हम नं० १६४-५-६ द्वारा प्रसूता की चिकित्सा के विषय में पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं। यहां पर पहिले प्रसूता के लिये पथ्य बताया जा रहा है:—

प्रसूता प्रारंभिक माह में चिकना, पथ्य और थोड़ा भोजन करे। शरीर में प्रति दिन तेल मलवावे। तैलों में 'बलातैल' या 'दशमूल-तैल' ठीक रहते हैं। ये शास्त्रीय-प्रयोग हैं। उबटन, मालिश, गुड़-तेल का प्रयोग, चटपटे-कडवे पदार्थों का सेवन, गरम मसाला (इसका प्रयोग-वर्ष १, की फाइल में देखें) अदरख-सोंठ, काली मिर्च, पीपल, चित्रक, जवाखार, पुराने सांठी चावल, कुलथी, लहसुन, परबल, बिजौरा, पान, अनार; मसूर-अरहर की दालें, कच्चे केले का साग, गरम दूध, गरम पानी, सोंठ-गुड़, मेथीदाना प्रभृति का सेवन करना चाहिये।

(जाड़ों के दिन छोड़कर) आग तापना और परिश्रम करना; ठंडी चीजें खाना, ठंडा विहार, अधिक भोजन, मूत्र-मलादि के वेग रोकना, दिन में सोना, रात में अधिक जागना आदि नहीं करे।

२—यह भी ध्यान रखें कि प्रसव के बाद जेर-नाल आदि के योनि से बाहर आते ही योनि को तत्काल भीतर दबा देना चाहिये, अन्यथा योनि में वायु घुस जायगी। तब 'मक्कलशूल' नामक भयंकर रोग हो जायगा। इस रोग में सिर-दर्द, हृदय-पेडू और पसलियों में शूल, अफारा हो जाता है। पक्वाशय फूल कर पेशाब रुक जाता है। ऐसी स्थिति में जवाखार का चूर्ण गर्मजल या गर्म-घी से दे। सोंठ-मिर्च-पीपल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

का चूर्ण पुराने गुड़ में दे, अथवा पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, दालचीनी, तेजपात, हींग, स्याहजीरा और कालानमक का चूर्ण बना गरम पानी से दे। अन्तिम प्रयोग सुपरीक्षित है। या 'सौभाग्य शुण्ठी पाक' खिलावे।

(१६६) प्रसूता के छोटे-छोटे रोगों की चिकित्सा—

१— प्रसूता की योनि में यदि घाव आदि हो जांय तो तूंबी के पत्ते और लोध को बारीक पीस-घोंटकर योनि में लेप करो।

२— योनि ढीली पड़ गई हो तो नं० १५८-६-६० काम में लो।

३— पेट बढ़ जाय तो प्रतिदिन प्रातः पीपलामूल का चूर्ण दो। अथवा पीपरों (लेंडी पीपर) का चूर्ण बिना पानी की तक्र से दो अथवा आमले और हल्दी को पीस-छान कर पियो या फांको।

४— स्तनों में दर्द हो तो हल्दी और घी-ग्वार की जड़ पीसकर लगाओ।

५— निबौलियों का तेल लगाने से स्तनपाक मिट जाता है।

६— दूध की कमी हो तो दूध में सफेद जीरा पियो।

७— अधिक रक्त बहता हो तो राल-शक्कर फांको या 'असगंध-मिश्री' फांको अथवा सूखा पुराना धनियां और शक्कर फांको या अनार की छाल औटाकर पियो।

—नारी-सौन्दर्य में बाधक अनेक-रोग और उनकी चिकित्सा—

महिलाओं में विभिन्न-कारणों से ऐसे रोग हो जाते हैं, जिनसे उनका सौन्दर्य फीका और भद्दा हो जाता है। प्रत्येक महिला अपने को सुन्दर रखना और कहलवाना चाहती है। महिला-रोगों में इन रोगों का भी विशेष-स्थान है, अतः उनका वर्णन और चिकित्सा यहां दे रहे हैं। आप इस प्रकार के पचासों योग 'आयुर्वेद-चिकित्सक' के प्रथम वर्ष की फाइल में देख सकते हैं। पूरा-परिज्ञान करने के लिये उसे अवश्य मँगाइये।

(१७०) चेहरे के काले, लाल और सफेद दाग-चकत्तों का इलाज—

१—प्रातः सूर्योदय से पहिले एक पुड़िया में बारीक कपड़छन पिसी हुई हल्दी लेकर निकलो। साथ में एक शीशा भी रख लो। जंगल में जाकर आक का एक पत्ता तोड़कर, आक के पत्ते पर ही उसका दूध

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डालो और उसी में हल्दी मिलाकर चकत्तों-दाग पर लेप कर लो। थोड़ी देर तक रगड़ो भी। २-२ दिन के अंतर से ऐसा करने पर दाग-चकत्ते १०-१५ दिन में बिलकुल मिट जायंगे। याद रखो, घर आकर इसे साफ करके इस पर घी मल देना चाहिये।

२—मँजीठ को शहद में घिसकर दागों-चकत्तों पर लगाओ।

३—जायफल को दूध में घिसकर लगाओ।

४—बादाम की मिंगी पानी में घिसकर लेप करो।

(१७१) छीप-नाशक प्रयोग—

(१) करंज की गिरी दूध में घिसकर लगाओ।

(२) मसूर की दाल नीबू के रस में पीसकर लेप करो।

(३) हल्दी और काले तिल पीसकर लगाओ।

(४) सुहागा और चन्दन पानी में घिस कर लगाओ।

(५) सरसों का बारीक चूर्ण और दूध का उबटन करो।

(६) कच्चे नारियल (दाभ) का पानी और हल्दी लगाओ।

(१७२) मुँहासे-नाशक प्रयोग—

विशेष वर्णन से लिये सन ५३ की फाइल देखें।

(१) तत्काल फलप्रद प्रयोग (प्रथम भाग) के प्रयोग देखें।

(२) चिरौंजी को गाय के दूध में पीसकर मुँह पर रोज प्रातः लगाओ।

(३) नरकचूर पानी में पीसकर मुँहासों पर लेप करो।

(४) नीबू का रस और बेसन मिलाकर चेहरे पर उबटन करो।

(५) झड़बेरी के बेरों की राख करके, पानी में मिलाकर लगाओ।

(५) गोरोचन और कालीमिर्च पीसकर लगाओ।

(७) सरसों, सैंधानमक, नीबू क ा रस मिला कर मलो।

(८) जायफल, कालीमिर्च दूध में घिसकर लगाओ।

(१७३) मस्से-नाशक प्रयोग—

१—मोर की बीट सिरके में मिलाकर मस्सों पर लगाओ।

२—शुक्तिभस्म सिरके में मिलाकर मस्सों पर लेप करो।

३—घोड़े का बाल बाँध दो, मस्सा कट जायगा। फिर घी लगाओ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

४—जंगली कंडे से खुजलाकर, वहां चूना-सज्जी लगाओ, लगेगा।
५—कहते हैं कि धनियां पीसकर लगाने से तिल-मस्से मिटते हैं।

(१७४) बाल काले करनेवाले प्रयोग—

ये प्रयोग विभिन्न-ग्रन्थांतरों से चुनकर लिखे जा रहे हैं। इनका प्रयोग पूर्वाचार्यों ने किया है। जिनके बाल असमय में पकने या सफेद होने लगे हैं, वे इनमें से किसी एक का प्रयोग कर देखें।

१—त्रिफला १-१ तोला, लोहे का चूरा १॥ तोले, आम की सिंगी पांच तोले लेकर महीन पीस लो और लोहे के बरतन में रखकर थोड़ा पानी डालकर घोंटो। प्रातः काला होजायगा। इसे लगाने से सफेद बाल काले हो जाते हैं। एक लेखक इसी तरह काली-स्याही बनाते हैं, वे उसमें 'कसीस' और मिला लेते हैं। इसे देशी खिजाब ही समझिये।

२—आमला-लोहे का बुरादा पानी में घोंटकर लगाओ।

३—लोहभस्म, नील के पत्ते और भांगरा इन तीनों को समान भाग लेकर, बकरी के मूत्र में पीसकर बालों पर लगाओ।

४—लोहचूर्ण, भांगरा, त्रिफला, कालीमिट्टी को बारीक पीसकर, ईख के रस में मिलाकर, १५ दिन जमीन में गाड़ रखो और फिर निकालकर बालों पर लगाओ। जड़ से काले होंगे।

(१७५) बालों के लिये अमृत-तुल्य-'आंवलों का तेल'—

धुली हुई तिली का तेल चार सेर। साफ गुठलीदार हरे आंवले ८ सेर।

लौंग, खस, कपूर, बड़ी इलायची, नागरमोथा, सुगन्धवाला, नरकचूर, गुलाब के फूल, दालचीनी, छरीला, छोटी इलायची, लालचन्दन, बालछड़, धनियां, कंकोल, सुगन्धकोकिला, पानड़ी, सफेद चन्दन प्रत्येक—१-१ तोला। पानी ३२ सेर।

—पहिले एक बड़ी डेग में जिसमें २ मन या कमसेकम १॥ मन पानी आसके, उसमें पानी भर कर ऊपर से कुचले हुए ८ सेर हरे आंवले डाल दे। दो-तीन घण्टे बाद उन्हें खूब मथ दे। फिर उसी में चार सेर तिल का तेल और बाकी की चीजें दरदरी करके डाल दे और १२ घण्टे रखा रहने दे। बाद में सबको भली भाँति मथकर रख दे। फिर इस डेग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पर एक भभके जैसा ऊपर पानी भरने का पात्र रख दे। जिसमें ठंडा पानी भरा जा सके और आराम से निकाला जा सके। फिर उस भभके के ढक्कन को डेग पर रखकर गीली-चिकनी मिट्टी से भली भाँति बन्द कर दे, ताकि तेल उफनने पर बाहर न निकले। अब इसे आग पर चढ़ादे। बार-बार ऊपर का पानी (गरम होते ही) बदलता रहे। ८-१० घण्टे इसे पकाये और पानी बदले। फिर उतार कर रखे। दूसरे दिन २४ घण्टे बाद बिलकुल ठंडा हो जाने पर ऊपर से ढक्कन खोल ले और सावधानी से ऊपर तैरता हुआ हलके हरे-रंग का तेल हाथों से निथार ले। बढ़िया तेल प्राप्त होगा। इसमें रंग और सुगन्ध मिलाने की कोई भी आवश्यकता नहीं है; यह स्वयं उत्तम सुगन्धित एवं हरे-रंग का होगा। इसे शीशियों में डाट लगाकर भर लें और विक्रयार्थ प्रस्तुत करें या अपने काम में लें। बढ़िया प्रामाणिक चीज है।

इसके लगाने से सिर-दर्द, सफेद बाल होना, स्मरण-शक्ति की कमी, शरीरदाह, सिर की फियास, बाल झड़ना, बालों का कम बढ़ना प्रभृति अनेकों शिरोरोग और बालों की शिकायतें अवश्य ही दूर हो जाती हैं। हमारे यहां खूब चलता है। लाखों स्थानों पर सुपरीक्षित है। स्त्रियों के फिट, मूर्च्छा, चक्कर आदि पर भी अत्यन्त प्रभावक है। प्रतिदिन व्यवहार करने योग्य औषध-युक्त विशुद्ध आयुर्वेदीय इस तेल को बनाकर अवश्य काम में लीजिये।

(१७६) बालों को बढ़ाने और काले रखनेवाले प्रयोग—

१—आंवलों का चूरा और मुलतानी-मिट्टी से सिर धोया करो।

२—नीम और बेर के पत्ते पीसकर घण्टे भर सिर में लगाये रहो।

३—आंवले नीबू के रस में पीसकर जड़ों में मलो।

४—काले-तिल की पत्तियों से बाल धोया करो।

५—आंवले उबालकर, उस पानी से सिर धोओ।

६—नं० १७५ वाला 'आंवला-तेल' सर्वश्रेष्ठ है।

७—भैंस का दही बालों में घण्टे भर लगा, फिर सिर धोओ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१७७) सिर की फियास-नाशक प्रयोग—

जो महिलायें सिर की सफाई भली भाँति नहीं करती, उनके सिर या बालों की जड़ों में यह रोग होता है। इसे बोल चाल की भाषा में 'फियास' कहते हैं। इसमें सिर में से भूसी-सी या सफेद-सफेद बारीक चूरा-सा निकलता है। प्रायः रोज सिर धोने और उत्तम तेल लगाने से यह बीमारी मिट जाती है। फिर भी रही आवे तो नीचे लिखे उपायों में से कोई उपाय करें।

१—चिरमिटी को पीसकर लुगदी बना लो और उसे चौगुने तिल-तेल और सोलह गुने भांगरे के रस में मिलाकर आग पर पकाओ। तेल-भर शेष रहे तो उतार लो। इसे सिर पर मलो।

२—इसके लिये शास्त्रीय 'भृङ्गराज तेल' अत्युत्तम है।

३—नं० १७५ वाला प्रयोग भी इसके लिये परमोत्तम है।

४—साबुन से सिर धोकर सुखा लो और तेल लगाओ।

५—गीले बालों में कभी घी-तेल आदि मत लगाया करो।

६—नीबू का रस चीनी में मिला लगाओ, ५-६ घण्टे में धो दो।

७—आम की गुठली और हरड़ दूध में पीसकर लगाओ।

८—पोस्तों को दूध में पीसकर लगाओ।

(१७८) 'गंज-रोग' पर एक स्मरणीय अनुभव—

महिलाओं में 'गंजरोग'–बाल उड़ जाने या न पैदा होने की बीमारी नहीं होती, यह प्रकृति की देन है। जिन देशों के लोगों में दाढ़ी-मूंछ नहीं होती, उनके भी गंजरोग नहीं होता। आयुर्वेद का मत यह है कि महिलाओं में प्रतिमास 'मासिक-स्राव' होने से रोमकूप (बालों-के छेद) बन्द नहीं होते। यूनानियों का मत है कि स्त्रियों के बाल नहीं उड़ते क्यों कि उनमें तरी अधिक रहती है। नपुंसक भी नपुंसकता के कारण गंजे नहीं होते। बुढ़ापे का गंज ठीक नहीं हो सकता। जवानी में हो तो हाथी-दांत की राख में रसौंत और बकरी का दूध मिलाकर मलो। परीक्षित है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१७६) गर्भाधान और गर्भिणी—

१—गर्भाधान का उचित समय, मासिक-धर्म होने से लेकर नौ-दिन बाद ठीक रहता है। अर्थात् १०, १२, १४ और १६ वीं रात्रि गर्भाधान के लिये श्रेष्ठ हैं। १६ वीं रात्रि का गर्भाधान सर्वश्रेष्ठ है।

२—गर्भाधान के लिये पहिले पति-पत्नी में परस्पर प्रेमालाप अवश्य हो। पति का अपने पर कन्ट्रोल एवं इस कर्तव्य का पालन भी आवश्यक है कि वह पहिले पत्नी को स्खलित करके अनन्तर-क्षण में स्वयं भी स्खलित हो जाय। इसमें लौकिक सुख तो काष्ठागत है ही, साथ ही साथ रजो निर्गम के बाद ही पुरुष-बीज के पहुँचने से उसे गर्भाशय में स्थान प्राप्त हो जाता है।

३—गर्भाधान के समय पति-पत्नी को परस्पर में एक-दूसरे का हृदय दुखानेवाला कोई काम भूलकर भी न करना चाहिए। दोनों में परस्पर दृढ़ प्रेम हो और रति-कर्म के समय परस्पर आन्तरिक-प्रेम में निमग्नता हो।

४—गर्भाधानार्थ यह अत्यावश्यक है कि रतिकर्म समाप्त हो जाने के बाद भी स्त्री-पुरुष ५-१० मिनट तक बराबर उसी दशा में रहें। ऐसा करने से गर्भाशय में शुक्रकीट भली भाँति ठहर जाता है।

५—गर्भाधान के समय पति-पत्नी की मानसिक एकाग्रता भी अत्यावश्यक है। उस समय दोनों को इसका दृढ़-निश्चय कर लेना चाहिये कि हम केवल सन्तानोत्पत्ति के लिये ही यह प्रसंग कर रहे हैं। स्खलित होते समय पति इस ओर विशेष-ध्यान रखे। पति के स्खलित हो जाने की अन्तिम फड़कन के बाद (५-७ बार प्रत्येक पुरुष की लैंगिक फड़कन स्खलित होते समय होती है) ८-१० सैकेण्ड का समय व्यतीत होने पर योनि को अन्दर से भींचना चाहिये, ताकि शुक्रकीट गर्भाशय में पहुँच सके। दो-सैकेण्ड तक धीरे-धीरे खींचकर फिर धीरे-धीरे वायु का आकर्षण हलका करे। दो-एक बार पुनरपि ऐसा किया जा सकता है। इसका कारण यह है कि स्खलित होने के बाद कई पुरुषों का वीर्य शीघ्र ही बाहर आ जाता है और कइयों में ५ से १५ सैकेण्ड तक का विलम्ब भी हो जाता है। इस बात को भली भांति समझ लीजिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

६—अधिक प्रसंग करने से वीर्यकीट कमजोर और न्यून-संख्या वाले हो जाते हैं, अतः अधिक प्रसंग-करने वाले सन्तान से वंचित रह सकते हैं। अतः सन्तानार्थियों को प्रसंग-संभोग-संख्या अवश्य घटा देनी चाहिये। सबसे अच्छी बात है कि ऐसे पुरुष 'सन्तानदाता' प्रयोगों में बताई गई तैयारी के अनुसार सिर्फ १६ वीं रात्रि में प्रसंग करें। और दिनों में पूरी तरह संयम से रहें। यह एक आवश्यक सूचना है।

७—गर्भाधान के बाद माता-पिता अपने विचारों में पवित्रता और वाह्य-स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। माता इस विषय में अत्यन्त सावधान रहे। माता के विचारों का पूरा-प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। माता विचारों के प्रभाव से अपनी पैदा होने वाली सन्तान को इच्छानुसार गर्भ में ही बना सकती है। सन्तान को सुरूप-कुरूप, मूर्ख-विद्वान् कमजोर- पहलवान, वैज्ञानिक, पंडित, व्याख्याता आदि बनाना, यह सब माता के विचारों के ही आधीन है। अतः पवित्र विचार एवं स्वच्छता का ध्यान अवश्य रखो।

८—गर्भिणी प्रतिदिन दांत साफ करे, आंखों में अंजन लगावे, पान खाय और उत्तम वस्त्र पहिने किन्तु काले-वस्त्र भूलकर भी न पहिने। शयनागार स्वच्छ रखे और उसमें जिस प्रकार की सन्तान उत्पन्न करना चाहे, उस प्रकार के मनोनीत सुन्दर चित्र रखे। सुगंधित पुष्प, धूप-अगरबत्ती शयनागर में अवश्य हों। गर्भाधान के समय तो इनकी अत्यावश्यकता है।

९—गर्भिणी अपने खान-पान में भी अत्यन्त सावधान रहे। बासी, गरिष्ठ, दुष्पाच्य—आहार न करे। दूध का उपयोग सर्वश्रेष्ठ है अधिक शाक-सब्जी खाने से सन्तान का रंग सांवला हो जाता है। हाँ, फलाहार उचित मात्रा में अवश्य करना चाहिए।

१०-गर्भिणी नीचे कामों से बचे। दुष्टा, बकवादिनी स्त्रियों के संपर्क में न रहे। पति-द्रोहिणी, व्यभिचारिणी, कुचाली, चोर, चुगलखोर प्रभृति दुर्गुणवाली औरतों से सम्बन्ध न रखे। अधिक मात्रा में भोजन न करे और भूखी भी न रहे। दुर्गन्धित द्रव्य न सूंघे। अनिष्ट-पदार्थ न ले। कर्कश-कठोर शब्द न सुने। क्रोध न करे। मैथुन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

न करे। चिल्लावे नहीं, कूदे-फांदे नहीं, सूने-अँधेरे घर में न रहे, भय न करे, झगड़े नहीं, ऊंचे-नीचे आसन पर न बैठे, कड़े बिस्तरों-बिछौनों पर न सोवे। ईर्षा, द्वेष, अपमान, घृणा, वैर आदि न करे। इनसे सन्तान पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

११—गर्भिणी की योनि में कभी-कभी विशेष खुजली-सी हो जाती है। उस समय योनि-रोग चिकित्सा-में बताये गये प्रयोगों में से कोई प्रयोग करो। गिलोय और त्रिफला के काढ़े से धोकर नं० १५४ वाला प्रयोग करो। यदि योनि से पानी-सा बहता हो तो सुपारी, कत्था, जायफल, हरड़, नीम के पत्ते इन्हें बराबर-बराबर लेकर कपड़छन चूर्ण करलो और योनि में लगाओ। यदि दाह भी होती हो तो इसी में कपूर मिलालो

(१८०) महिलाओं के लिये आवश्यक-नोट—

१—महिलाओं को घूमने-फिरने का काम अवश्य करते रहना चाहिये। कई स्त्रियां ऐसी जमकर बैठती हैं, मानों वहीं गड़ गईं। प्रायः वे बलहीन और मूर्च्छा-रोगग्रस्त रहती हैं। खुली हवा में घूमना-फिरना बहुत अच्छा है। जो ताजी हवा नहीं लेतीं, उनके कपोल पोले, बदरंग या सफेद पड़ जाते हैं।

२—आग अधिक मत तापो। इससे मुख की शोभा और रंग बिगड़ जाते हैं। अग्नि के पास अधिक बैठने और तापने से शरीर ढीला, ठंडा और शिथिल पड़ जाता है। अजीर्ण, बिवाई और मंदाग्नि होती है। अधिक पीठ सेकना भी हानिकर है। हाड़ों में जो मज्जा (अस्थिसार) होता है वह बार-बार पिघलता है, अतः देह निर्बल होती है।

३—प्रतिदिन प्रातःकाल में शीघ्र उठो। प्रातःकालीन पवन का स्वागत करो। वह उत्साह और बल बढ़ाता है। बड़ी आयु तक जीना चाहो तो प्रातःकाल शीघ्र उठा करो। प्रातःकाल में उठने से नीरोगता, कर्मेन्द्रियों को शक्ति और मुख को शोभा मिलती है। मस्तिष्क शुद्ध होता और बुद्धि तीव्र होती है। हृदय-ताप शांत होता और सारे दिन काम करना और सुख भोगना सुलभ रहता है। मुख की सिकुड़न, झुर्रियां; पीलापन, फुन्सी आदि मिट जाती हैं। असमय में बुढ़ापा भी नहीं आता।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

४—कसे हुए वस्त्र मत पहनो। कमर कसकर कभी न बांधो। पेट अधिक दबाया जायगा तो जनन-शक्ति में ह्रास होगा। गर्भिणी पेट कसेगी तो गर्भस्राव या गर्भपात हो जायगा या समय से पहिले प्रसव हो जायगा या निर्जीव बालक होगा। अतः प्रत्येक ऋतु में स्त्री अपने कपड़े ढीले-ढाले रखे। अधिक वस्त्र स्त्री न लपेटे।

५—स्त्रियों को कभी-कभी ऐसे स्थानों में सोना पड़ता है, जहां खटमल और पिस्सू होते हैं। ऐसी स्थिति में वे दियासलाई, उजाले का सामान, गंधक-बिरोजा का तेल आदि का प्रबन्ध रखें। प्रकाश में कीड़े कम आते हैं। 'गंधा-बिरोजा' का तेल खटमल-पिस्सुओं को दूर रखता है, अतः बिछौने पर या आसपास तेल छिड़क दे। किन्तु इतना ध्यान रखे कि वहां पर पास में जलता हुआ दिया या अन्य अग्निमय पदार्थ भूलकर भी न रखे, नहीं तो आग लग जायगी।

(१८१) मासिक-धर्म और उसके विषय में जानकारी—

मासिक की तीन अवस्थायें हैं। (१) प्रारंभ (२) नियमित होना (३) समाप्ति। प्रारंभ में अत्यन्त सावधानी रखें। इस विषय का उल्लेख अन्यत्र कर चुके हैं। मासिक से नियमित होनेवाली स्त्री २८ वें दिन मासिक से होती है। उसे रज पांचवें दिन तक होता है। ऋतु-काल में तीन से लेकर ४-४॥ छटांक तक रजःस्राव होता है। जिस स्त्री का रज ठीक नहीं होता, उसे गर्भधारण में कठिनाई होती है। रजःस्राव तीस से लेकर ४५ वर्ष तक होता है और तभी तक सन्तान भी होती है। किसी-किसी स्त्री के ५० वर्ष की अवस्था में भी सन्तान होती हुई देखी गई है। एक बार एक स्त्री के ६० वर्ष की आयु में प्रथम सन्तान हुई थी।

जो महिलायें जितनी छोटी आयु में मासिक से हो जाती हैं, उनका मासिक बन्द भी उतनाही शीघ्र होताहै। रज यथार्थ में रुधिर नहीं है। रज का रिझाव गर्भ से है, और निर्दोष-शरीर का ताजा रजःस्राव घाव से निकले खून के सामान रक्तवर्ण होगा। जिस स्त्री को आराम से रजःस्राव नहीं होता, उस समय पीड़ा होती है तो उन्हें गर्भ रह भी जाय, फिर भी वह टिकाऊ नहीं रहता। बिकारी रज का रंग भी प्रतिमास परिवर्तित होता रहता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रायः ४३ वर्ष की आयु पर रजःसमाप्ति का अवसर आ ही जाता है। उस समय गर्भाशय के रोग अधिक होते हैं। रजःसमाप्ति को 'टेढ़ का समय' कहते हैं। तीस वर्ष तक लगातार रजःन्वला होने के बाद रजःस्राव बन्द हो जाता है। उस समय ४४ से ४८ वर्ष की अवस्था रहती है। रजःसमाप्ति के पूर्व से ही रज का तार बिगड़ना प्रारंभ हो जाता है। इस दशा में कभी रज अधिक, कभी बहुत थोड़ा, कभी हलके रंग का, कभी रक्त के समान लाल, कभी पतला, कभी गाढ़ा, कभी राव जैसा और कभी स्याही-सा काला होता है। कभी-कभी गर्भपात जैसा रिझाव (बहाव) होता है। इस समय उन्हें अधिक कष्ट का सामना करना पड़ता है, जो आरामतलब होती हैं। फुरतीली और सावधानी से भोजन करनेवाली अधिक कष्ट नहीं उठाती। रजः समाप्ति पर प्रायः स्त्री पर बुढ़ापा छा जाता है। उसकी छाती और पेट पर चर्बी बढ़ जाती है। बुढ़ापा आने लगता है। कभी-कभी रूपवती स्त्री भी बड़ी बदसूरत-सी प्रतीत होती है। सावधानी रखने से महिला इन उपद्रवों को सरलता से पार कर जाती है। वह बाद में ऐसी स्वस्थ हो जायगी, जैसी जीवन में पहिले न हुई हो।

रजःसमाप्ति का मुख्य चिह्न मोटापन है। प्रायः चलतीं फिरतीं कामकाज करने वाली महिलायें मुटापे से भी पीड़ित नहीं होतीं। कइयों को बबासीर के मस्से भी कष्ट देते हैं। तब उनसे खून अधिक-मात्रा में बहने लगता है। इस रक्त को रोकना भी नहीं चाहिये। रजःसमाप्ति यदि सकुशल हो जाती है तो फिर महिला का जीवन फिर से आनन्दमय हो जाता है। इतना ध्यान अवश्य रहे कि रजःसमाप्ति पर महिला मानसिक उद्विग्नता से दूर रहे। शारीरिक कष्टों में जो भी कष्ट अधिक परेशान करे, उसकी योग्य-चिकित्सक से चिकित्सा अवश्य करा ले। जो इस समय प्रसन्न और व्यवस्थित रहती हैं, वे फिर से सौन्दर्य और यौवन में विभोर हो जाती हैं।

(१८२) गर्भ रहने की पहचान और चिह्न—

गर्भ रहने पर पहिला चिह्न होता है (१) मासिक धर्म का न होना। दूसरा चिह्न है (२) उबकाई आना। यह गर्भ रहने के १५-२० दिन बाद होता है। इसमें चित्त बिगड़ा रहता है, बहुत उलटियां होती हैं और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरुचि रहती है। बहुधा उबकाई प्रातःकाल ही आती है। तीसरा चिह्न है (३) स्तन-पीड़ा। स्तनों में सुई चुभाने जैसी पीड़ा होती है। यह चिह्न दूसरे माह के लगभग होता है। ३-४ माह बाद स्तन दबाने पर चूचुकों में से पतला पानी माइल दूध निकल आता है। प्रायः प्रथमबार के गर्भ का यह अव्यभिचरित लक्षण है। (४) चौथा चिह्न यह है कि स्तनों के चारों ओर एक काली धुंधली-सी कुण्डली बन जाती है और यह समय बीतते-बीतते और अधिक कृष्ण होती जाती है। प्राथमिक गर्भ-निर्णय में यह कुण्डली एक स्पष्ट-निर्णयदात्री है। पांचवा चिह्न बालक का फड़कना है। तीसरे माह से लेकर छठे माह तक यह लक्षण अत्यन्त स्पष्ट होता है। बालक के फड़कने पर कइयों को चक्कर या मूर्च्छा भी आ जाती है। कभी-कभी बच्चा दिन में १०-१२ बार तक फड़कता है। छठे माह में प्रायः चिड़िया की फड़फड़ाहट की तरह गर्भ फड़कता हुआ मालूम देताहै। (६) छठा चिह्न है, पेट का बढ़ना और कठोर होते जाना। मेद के मुटापे से इसमें भिन्नता है। उसमें कोमलता और पिलपिलाहट होती है और गर्भ में कड़ापन-ठोसपन और रोक होती है। (७) सातवां चिह्न है 'नाभि का फूल जाना, और उठ आना'। पहिले दो-महीने नाभि भीतर धँसती है, बाद में गर्भ बढ़ने पर, बाहर निकलती आती है। (८) आठवीं पहचान 'दुर्बलता' है, गर्भधारण के प्रारंभ में यह चिह्न रहता है, फिर गर्भ बढ़ने पर स्त्री पुष्ट और सुन्दर होती चली जाती है। (९) नवीं पहचान 'मूत्रस्थान का चर्राना' है। इस कारण से स्त्री को रात में सोते से जाग कर बारबार पेशाब को जाना पड़ता है। किन्तु अच्छी तरह पेशाब न होकर थोड़ी-सी बूंदें ही गिरकर रह जाती हैं। इन चिह्नों के अतिरिक्त अधिक नींद-आना, ऊंघना, पेट में जलन, बहुत थूक आना, मुंह में छाले हो जाना, दांतों में दर्द उठना, भूख न लगना, दोहला होना (अट-पटी इच्छायें उठना), कलेजा धड़कना, देह पर पीले चट्टे पड़ना, अरुचि प्रभृति अन्यान्य साधारण-चिह्न भी होते हैं। मुख्य ९ चिह्नों का वर्णन ऊपर कर दिया गया है।

(१८३) गर्भिणी के लिये आवश्यक हिदायतें—

१—गर्भिणी कसे-चुस्त कपड़े न पहिने। ढीले-ही पहिनें। छाती-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पेट पर कोई रोक न रखे। चोली ढोली रखे। मौजे न पहिनें।

२—गुनगुने पानी से स्नान करे। शरीर को धीरे-धीरे खूब मले। गर्भिणी मेह में और समुद्र में स्नान न करे।

३—प्रथम गर्भवाली अधिक चले-फिरे नहीं। अधिक बैठी भी न रहे।

४—साधारण परिश्रम करे। ताजी हवा ले। थोड़ा भोजन करे।

५—हवादार और धूपदार घर में रहे। अन्धेरे में न रहे।

६—दिन में १-२ घण्टे प्रतिदिन आराम अवश्य करे। लेट भी सकती है।

७—गर्भिणी कई बार में थोड़ा-थोड़ा पोषक-आहार ले। दाख, अंगूर, अनार, सेव, आग में पके आडू, चोकरदार रोटी, राब, आहार में कच्ची खांड लेना; यह सब ठीक है।

(१८४) गर्भिणी के कतिपय विशेष-रोग और उनकी चिकित्सा—

गर्भिणी के कतिपय रोगों की चिकित्सा पहिले दी जा चुकी है। कतिपय विशेष-रोगों के विषय में यहां पर प्रकाश डाला जा रहा है।

१—प्राथमिक गर्भ में स्तन बहुधा दुखते हैं। तब चोली ढीली रखे, या पहिने ही नहीं। प्रातः सायं ५-५ मिनट गरम पानी से सेके।

२—गर्भिणी की छाती कभी-कभी बहुत सूज जाती है। ऐसा लगता है, जैसे फोड़ा उठने-वाला है या छाती पकनेवाली है। इससे घबड़ाना नहीं चाहिये। ये गर्भ के कारण हैं। धीरे-धीरे ये अपने ही आप दूर हो जांयगे। यदि अधिक कष्ट हो तो पहिले स्तनों पर पतला कपड़ा रखकर ऊपर से फलालैन रखें।

३—मूत्रस्थान के कष्टों में, यदि मूत्र रुक जाय तो थोड़ा-थोड़ा चला-फिरा करे। यदि फिर भी न उतरे तो कोई चिन्ता नहीं। गर्भ के कारण ही प्रायः ऐसा होता है।

४—गर्भिणी को पेशाब अधिक होता हो तो खांसी करनेवाली ढीली-रसीली वस्तु थोड़ी खावे, क्योंकि खांसने से मूत्र और अधिक होगा।

५—यदि चक्कर अधिक आवें तो स्त्री बिना सिरहाने के, पीठ के बल चित्त लेटे। सिर ऊंचा न रखे। कड़े-कपड़े ढीले कर दे। किवाड़ खोल दे। मुंह पर पानी छिड़के, सुगन्ध सूंघे और भीड़ अलग करदे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

६—छाती अधिक धड़के तो हृदय की बीमारी समझ कर घबड़ावे नहीं। गर्भ रक्तवाहिनी नाड़ियों को दबाता है। अतः हृदय-कार्य में गतिरोध होने से यह गड़बड़ी होती है। रात में लेटने पर धड़कन बढ़ जाती है, क्यों कि लेटने में नाड़ियों पर अधिक बल पड़ता है। लेट जाने पर बड़े पेट के दबाव से छाती और पेट के नीचे की आँत ऊपर सरक जाती है। अतः हृदय अपना पूरा काम नहीं कर पाता।

७—सातवें माह में टांग और जांघ की नसें अकड़ती हैं। रात को तो इसकी मात्रा और भी बढ़ जाती है, इसका कारण भी गर्भ का दबाव है। ऐसी स्थिति में तनाव मे कुछ ऊपर की ओर दुपट्टा लपेटकर बांधे। अफीम के रस से मलवावे। लौंगें चन्दन की तरह घिसकर पतला-पतला लेप कर दे। अन्तिम उपाय परीक्षित है।

८—गुदा के ऊपर नसें तन्ना जांय तो गरम नमक की पोटली या बोतल में गरम पानी भरकर, उस पर फलालैन लपेट कर वहां सेके और तलवे के नीचे भी रखे।

९—गर्भ रहने पर पिछले दिनों पानी-सा बहता है। यह निचले धड़ पर गर्भ का दबाव पड़ने से हुआ करता है। इसमें अधिक लेटा रहना ठीक है। हवादार कमरे में रहे। कम्बल के बिछौने पर सोवे। साधारण पुष्ट भोजन करे। प्रतिदिन नहावे और फिटकरी के पानी से योनि धोवे।

१०—कभी-कभी योनि चर्राती है और उसमें खुजली चलती है। यह भी गर्भ के कारण है। अधिक कष्ट हो तो ठंडे पानी में नमक डाल कर योनि धोवे। बीमारी तेज हो तो 'सिरका और पानी' सम भाग लेकर उससे दिन में २-३ वार अंग धोवे।

(१८५) 'गर्भपात' के विषय में आवश्यक जानकारी—

गर्भिणी-चर्या में गर्भिणी के कर्तव्याकर्तव्य पर विस्तृत-प्रकाश डाला जा चुका है। यदि गर्भिणी उन पर ढंग से नहीं चलती तो 'गर्भ-स्राव या गर्भपात' हो जाता है। जहां एक वार गर्भ गिरा तो फिर उसका तार ही बंध जाता है। प्रसव की अपेक्षा गर्भपात अधिक दुख-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दाई है। गर्भ गिरते-गिरते देह टूट जाती है, फिर गर्भ की आशा भी जाती रहती है। ५-७ माह के गर्भ के बाद ट्रेन में भी लम्बा सफर न करे। एक बार जिसे गर्भपात हो जाय, वह दसगुनी अधिक सावधानी रखे। गर्भपात के बाद प्रसूता की भाँति ही चिकित्सा करे।

प्रारंभ में यदि स्त्री को गर्भपात की जरा-भी आशंका हो तो वह सीधे पीठ के बल या किसी करवट से आराम से लेट जाय। सादा भोजन जैसे साबूदाना, दलिया, दूध नीबू की ठंडाई आदि ले। अंगूर, दाख, मुनक्का अधिक उत्तम हैं। योनि में ठंडे पानी की पट्टियां रखे।

बारबार जिसे गर्भपात हो, वह ब्रह्मचर्य से रहे, पोषक आहार करे। ठंडे पानी से नहावे। गर्भिणी होने के बाद दिन में आराम ले, साधारण आहार करे, तेज जुलाब न ले। जिस महीने गर्भपात हो उस महीने अधिक सावधानी से रहे। उन दिनों अधिक लेटे। मन शांत रखे। नाच-रंग, रतजगा, परिश्रम आदि से बचे।

(१८६) प्रसव की झूठी पीरें और उस पर उपचार—

यह पहलौटी स्त्री को आती हैं। प्रसव से २-३ सप्ताह पूर्व आती हैं। पेट, पीठ, कमर, नितंब, जाघों में से कभी किसी में और कभी किसी में दर्द-पीड़ा होने लगती है। सांझ या रात को यह और अधिक होती है। ऐसे समय में विशेष धैर्य रखें। सच्ची और झूठी पीर की पहिचान यह है कि सच्ची पीरें पूरे-दिनों में आती हैं। झूठी पीरों में रक्त की झलक नहीं आती और सच्ची में आती है। सच्ची पीरें पीठ में ही उठती हैं और वे निरन्तर होती हैं; और उनमें व्यथा धीरे-धीरे बढ़ती चली जाती है। यह बात झूठी पीरों में नहीं होती।

झूठी पीरों को बन्द करने का उपाय—गर्भिणी पथ्य से रहे, दुग्ध या दुग्धयुक्त आहार करे। मीठे तेल में कपूर घोंटकर और गरम करके या अफीम का रस मिलाकर, सोते समय प्रतिदिन गुदा पर मल ले। नमक की पोटली गरम करके या फलालैन गरम जल में भिगोकर पेट सेके। तीव्रता में नर्स का प्रबन्ध करे या विशेषज्ञ को बुलावे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१८७) गर्भ में पुत्र-पुत्री की पहिचान—

गर्भ प्रायः २८० दिन या ४० अठवारा तक ठहरता है। यदि इस समय से कम समय में प्रसव हो तो कन्या होगी और यदि १-२ सप्ताह बाद प्रसव हो तो पुत्र होगा। दिन गणना मासिक के पांचवे, छठे या सातवें दिन से करे।

(१८८) बच्चों के मुंह आने से होनेवाली स्तन-पीड़ा पर—

छोटे दुध-मुंहें बच्चों का जब मुंह आ जाता है तो उसके दूध पीने पर स्तनों में भी कष्ट होने लगता है। ऐसी स्थिति में स्तनों पर भुना हुआ सुहागा २ तोले, गेहूं का सत (निशास्ता) सात तोले घोंट-पीसकर मिलाले और चुटकी से स्तनों पर लगावे। इसे बिना पोंछे ही बालक को दूध पिला सकती है। इससे माता का स्तन-शोथ भी ठीक होगा और बच्चे का मुंह आना भी। अथवा समग अर्बी (बबूल का गोंद) एक तोला, फिटकरी ४ रत्ती मिलाकर बारीक घोंट-पीस ले और स्तनों पर भुरके। यह उपाय भी परमोत्तम है। प्रसूता ध्यान रखे कि दूध पिलाने के बाद स्तन गीला न छोड़ दे। इससे स्तनशोथ (सूज जाने) का खतरा रहता है।

(१८९) छोटे बच्चे का दूध छुड़ाना—

बच्चे को 'नौ-महीना धरो और नौ-महीना भरो' के अनुसार ९ माह तक अवश्य दूध दे। फिर धीरे-धीरे सुपाच्य अन्न पर लावे और दूध घटाती जाय। किन्तु कतिपय प्रसंगों में दूध की कमी के कारण, माता को दूध पिलाने के उपरान्त कानों में सनसनाहट, आंखों में अंधेरा, सिरदर्द, घबराहट, मूर्च्छा-भ्रम-चक्कर, थकावट, अजीर्ण आदि होने लगते हैं, तब दूध पिलाना बन्द करदे। यदि बच्चा बिना दूध पिये न माने तो अन्य योग्य उचित प्रबन्ध करे। हो सके तो माता अपने स्तनों पर थोड़ा-सा एलवा (आधी रत्ती के लगभग) पानी में घोलकर स्तनों पर लगाले। बच्चे को उससे घृणा हो जायगी। यह बहुत कड़वा होता है। ३-४ बार लेपयुक्त दूध पीने पर वह हमेशा के लिये छोड़ देगा। एलवा बच्चे को हानिप्रद नहीं है, वह इसे उगल देता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१६०) एक विशेष सावधानी और जानकारी—

यदि दूध पिलाने के दिनों में एकदम दूध घटजाय तो समझो माता पुनः गर्भिणी हो गई। ऐसी स्थिति में वह अपना दूध बच्चे को न पिलाये। बच्चा बड़ा हो तो ऊपरी आहार दे या धाय लगादे। ऐसे समय में दूध पिलाने से मा-बच्चा दोनों को कष्ट होगा।

यदि माता रजस्वला होने लगे तो ८-६ माह के बच्चे को मा का दूध न पिलाकर अन्न की ओर ले आना चाहिये। अन्यथा दूध पीते हुए भी बच्चा निर्बल और दुबला-सा होता जायगा। क्योंकि अब दूध में दोष आ गया है।

(१६१) पति-पत्नी के आपसी-सम्बन्ध—

आपसी सम्बन्धों का स्वास्थ्य और सन्तत्युत्पादन से अत्यधिक गहरा सम्बन्ध है, अतः इस पर भी आवश्यक प्रकाश डाला जा रहा है। अफगानों में युवा-युवतियों का विवाह क्रमशः २१-१६ वर्ष की आयु में प्रायः होता है। इस अवस्था से पूर्व वहां विवाह होता ही नहीं। यही बात है कि अफगानी इतने तगड़े और जबर्दस्त होते हैं। अफगानी पत्नी की सबसे अधिक आकर्षक विशेषता यह है कि वह अपने पति से तब तक कोई भी झंझट, झगड़ा, फिक्र-चिन्ता पैदा करने वाली बात हरगिज नहीं कहती, जब तक वह उसके पेट को गरमागरम भोजन से भली-भांति नहीं भर देती। दूसरी विशेषता उन पति-पत्नियों में यह रहती है कि पत्नी पति के सामने सदा विनम्र रहती है और उसकी दृष्टि सदा भूमि पर ही रहती है, उधर पति भी उसे कभी नहीं धमकाता या डराता अथवा क्रोध प्रगट करता है। भारतीय पति-पत्नियों के लिये भी उक्त तीनों बातें विशेष अनुकरणीय हैं।

यक्ष्मा (टी. बी.) या तपेदिक और क्षय-रोग से बचने के लिये इस युग में बड़ी सावधानी की आवश्यकता है, आयुर्वेद में लिखा है—

'यः संसेव्यते कामी, कामिनीं सततं प्रियाम्।
तस्य संजायते यक्ष्मा धृतराष्ट्र-पितुर्यथा॥

अधिक काम सेवन जीवन-संरक्षण में बड़ा बाधक है। मैथुनोत्तर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जैसे पुरुष के लिये शक्तिप्रद-प्रयोगों की जरूरत है, वैसे ही स्वलित हो जाने पर स्त्री को भी। गर्भधारणार्थ कियेगये प्रसंग को छोड़कर शेष समय में इस पर ध्यान रखना नितांत आवश्यक है। जो प्रयोग पुरुष करता है, उन्हें स्त्री भी कर सकती है। प्राय: स्त्रियों में सौम्य-प्रयोग ठीक रहते हैं। अति तो भूलकर भी कहीं न होने दे। 'भोग की अति' और 'आहार की अति' दोनों अतियां मानव-समाज की अत्यधिक घातक हैं।

(१९२-९३) गर्भिणी के वमन पर दो-शर्तिया प्रयोग—

अनेकों प्रयोग करने पर भी गर्भिणी का वमन ठीक नहीं होता। ऐसी स्थिति में ये दो प्रयोग ऐसे दे रहे हैं, जिनसे आपको सफलता अवश्य ही प्राप्त होगी। दोनों में से चाहे जो भी प्रयोग काम में लीजिये।

१—पहला प्रयोग यह है कि बढ़िया चावल छह-तोले लेकर पानी में भिगो दो। आधा घण्टा तक भीग जाने के बाद उसमें ६ माशा धनियां भी डाल दो। ५-७ मिनट में ही इसे मलकर छान डालो और ३-४ बार में थोड़ा-थोड़ा पिलाओ। गर्भिणी का वमन बन्द करने में अक्सीर है।

२—दूसरा प्रयोग यह है कि कमल-गट्टे के भीतर की मिंगी, छोटी किन्तु हरी-गीली इलायची के दाने और मिश्री—प्रत्येक १-१ तोला उत्तम वंशलोचन छहमाशे लें। इनको कूट पीसकर बारीक कपड़छनचूर्ण कर लें। इसकी मात्रा एक माशे से तीन माशे तक की है। ठंड के दिन हों तो यह प्रयोग गरम-दूध से ही करें। यदि गरमी के दिन हों तो उबले हुए दूध को भली-भाँति ठंडा करके उससे दो।

इस दूसरे प्रयोग से सिर्फ गर्भिणी की वमन ही ठीक नहीं होती, अपितु गर्भपात या गर्भस्राव से भी बचाव होता है। जिनके बच्चे बार-बार हो-होकर मर-मर जाते हैं, या मरा हुआ बच्चा होता है, वे भी इसका अवश्य ही व्यवहार करें। सुपरीक्षित है।

(१९४) सन्तान न हो, पर मासिक चालू रहे—

इस पर अभी मेरा परीक्षण नहीं हुआ। यह पर-परीक्षित प्रयोग दे रहा हूं। हमारे प्रेमी पाठक इस पर परीक्षण करके अपना फलाफल सूचित करेंगे। प्रयोग इस प्रकार है:—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

—सूखा हुआ सिंघाड़ा, बबूल की फली, बरगद की जटा, नागौरी असगन्ध, मूसली (काली), कौंच के बीज, मोचरस प्रत्येक २-२ तोले। सालम मिश्री, कमरकस, उटंगन के बीज, बंगभस्म १–१ तोला। छोटा गोखरू २० तोला। इमली के बीजों की मिंगी ३ तोला। बरगद के दूध में भिगोया हुआ तालमखाना २० तोला। लजवन्ती के बीज १० तोला। चांदी के वर्क २५ नग।

गुठली रहित छुहारा चार तोला।

—इनको उत्तम से उत्तम लेकर साफ हमाम दस्ते में कूटकर खूब बारीक कराइये। बाद में कपड़छन भी कर लें, और एक शीशी में डाट लगाकर रख दें। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे है। स्त्रियों को मक्खन से देने पर गर्भ नहीं रहता और मासिक चालू रहता है।

हमने यह प्रयोग पुरुषों पर आजमा देखा है। अशक्ति, शुक्रतारल्य, आंखों के सामने अँधेरा छा जाना, प्रमेह, स्वप्नदोष; हड़फूटन, पिण्डलियों का दर्द प्रभृति पुरुषरोगों पर अच्छा काम करता है। अधिक मैथुन-जन्य नपुंसकता पर परमोत्तम है। पुरुष इस प्रयोग का अपने पर अवश्य ही व्यवहार करें। अवश्य सफलता मिलेगी।

(१६५) पर-परीक्षित 'संतति-निरोधक' प्रयोग—

ईसबगोल-दाना एक सेर लेकर, चक्की में बारीक पीस डालें। दूसरी ओर दो-सेर गेहूँ भट्टी में भुनालें। इन गरमागरम गेहुँओं में ईसबगोल का आटा दबा दें। ८ प्रहरबाद (२४ घण्टे बाद) सबको मिलाकर पीस डालें और जिस मिट्टी के बरतन में पहिले २-३ साल से घी रखा हुआ चला आया हो, उसमें यह सब रख दें और ऊपर से मुंह (मौड़ा) बांध दें। बाद में इसे अन्न के ढेर में दबा दें और चालीस-दिन तक दबायें रखे। बाद में निकाल लें।

एक सेर उत्तम गाय का घी गरम करें और इसमें ऊपर का सारा आटा डाल दें और साथ में दो-सेर शक्कर, बूरा या मिश्री भी डाल दें। इसे भली-भाँति कलछे से चला-चलाकर मिला लें। औषध तैयार होगई।

इसकी विशेष विधि यह है कि इस औषध को उस समय तैयार करना चाहिये, जिससमय गर्भिणी आठ माह की गर्भ-युक्त हो। ताकि जब-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तक इसे प्रसव हो, तब तक औषध तैयार हो जाय। जब बच्चा पैदा हो जाय, उसके तीसरे-दिन से इस प्रयोग को यथाशक्ति खिलावे। ऊपर से गरम-दूध दे। प्रयोग स्वादिष्ट है, अतः खाने में कठिनाई नहीं होती।

इस प्रयोग की बड़ी प्रशंसा की गई है। किन्तु हम इसे आजमा नहीं सके। अतः अपने प्रेमी-पाठकों से निवेदन है कि वे अवसर पर इसका परीक्षण अवश्य करें और परिणाम से मुझे सूचित करें।

(१९६) गर्भावस्था और कृमि-जन्य विकृति—

सारी पुस्तक भर में आप सिर्फ यही प्रयोग कुछ विदेशी औषध-मिश्रित देखेंगे। क्या करूं, तत्काल-फलप्रद होने के कारण इसे आपके समक्ष उपस्थित कर रहा हूं। अनुसन्धान चालू है, सफलता मिलने पर ऐसा ही आयुर्वेदीय प्रयोग अवश्य भेंट करूंगा। गर्भिणी में कृमि-विकार बड़ा कष्ट देता है, वहां साधारण-औषधें न देकर, शीघ्र फलप्रद औषध की आवश्यकता होती है। क्यों कि गर्भिणी को कृमि-जन्य-विकृति में अपार कष्ट होता है। जैसे—हाथ-पैरों और जीभ में जकड़न, मुंह का टेढ़ा हो जाना, वमन की तीव्रता, मीठा खाने पर थोड़ी देर को आराम और फिर परेशानी, अरुचि आदि लक्षण तेजी से होते हैं। कभी-कभी तो बोलना भी कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति दुर्भाग्यवश आ जाय तो आधी रत्ती 'सेंटोनिन' दे और उसके १२ घण्टे बाद 'कैस्टर-आइल' (साफ किया हुआ 'अरण्डी का तेल' पिला दे। यह प्रयोग ३-४ दिन किया जाय तो पेट के सारे कीड़े आराम से निकल जांयगे। प्रथम दिन में ही पर्याप्त लाभ हो जाता है। इसके बाद कीड़े पेट में पैदा ही न हों, इसलिये निम्न लिखित क्वाथ-प्रयोग करे। क्वाथ-प्रयोग यह है—

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल, हर्रा, बहेड़ा, आंवला, नीम की भीतरी छाल, निशोथ और बच। इन्हें २-३ माशे लेकर आधासेर पानी में भिगोदे और आग पर मध्यमाग्नि से खुले-मुँह के बरतन में गरम करे। जब आधा पाव पानी शेष रहे तो उतार-छानकर पिलादे। दो-तीन दिन ही १-१ बार क्वाथ देना काफी है। बाद में रक्त-वृद्धि के लिये लोह-प्रयोग करे। सुपरीक्षित है।

(१९७) स्त्रियों के मूत्राघात, मूत्रकृच्छ और सुजाक पर—

सत बैरोजा ६ तोला। बबूल का गोंद तीन-तोला। रूमी मस्तगी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और सफेद राल ४-४ तोला। ईसबगोल २ तोला। बड़ी इलायची (डोंडा) १० तोला। मिश्री २४ तोला। —इन सबका बारीक चूर्ण कर ले और ४-४ माशे प्रातःसायं गोदुग्ध से दे। यह प्रयोग स्त्रियों के सुजाक, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, प्रदररोग, सोमरोग, वमन होना प्रभृति विकारों पर अच्छा काम करता है। बेधड़क काम में लाइये।

(१६८) कान में दर्द उठने पर उत्तम-प्रयोग—

महिलायें हमेशा कान साफ रखें। कानों में तेल डालें और साफ किया करें तो प्रायः कान के रोग कभी न होंगे। यदि फिर भी कान दर्द उठे तो यह प्रयोग करें।

हींग, धनियां, सोंठ ३-३ माशे लेकर ५ तोला सरसों के तेल में पीसें और थोड़ा-सा (करीब-२ तोला) पानी मिलाकर आग पर पकावें। जब पानी जल जाय तो उतार कर छान लें। इसे जब भी डालना हो, कुनकुना (गरम) करके ही डालें। फौरन दर्द बन्द होगा। चाहे जैसी भी घोर-पीड़ा क्यों न हो, अवश्य मिट जायगी।

(१६९) अत्यन्त कामातुरता पर—

पुरुषों में कामाभिलाषा अधिक होती है। यदि स्त्री में भी बढ़ जाय तो ठीक नहीं। जिन महिलाओं में कामेच्छा अत्यधिक बढ़ी हुई हो, उनके लिये यह अत्यन्त सरल-प्रयोग भेंट कर रहा हूं। अवसर पर अवश्य ही काम में लीजिये।

ऐसी स्त्री को प्रसंग से पहिले देशी कपूर दो-रत्ती और सुहागा दो-रत्ती, पान में रखकर खिलादो। बढ़ी हुई कामेच्छा की तुष्टि तृप्ति शीघ्र ही हो जायगी। यह स्त्री को शीघ्र द्रवित करने वाला प्रयोग है। इससे कोई विशेष हानि भी नहीं होती।

(२००) बिच्छू के विष की अपूर्व औषध—

लाहौरी-नमक (सैंधानमक) खूब बारीक पीस-घोंटकर रख लो। बस, औषध तैयार है। जिसे-बिच्छू ने काटा हो; उसके दंश-स्थान पर लगा दो और थोड़ा-सा यही नमक पानी में घोल-कर नाक-कान में भी डाल दो। रोगी रोता आयगा और हँसता जायगा। यदि अवसर पर सैंधा-नमक न मिले तो साधारण-नमक से ही काम चलाओ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

— स्वस्थ-महिला परिषद् —

लेखक-श्री पं० रामसेवकजी शुक्ल, शुक्लायुर्भवन, गंजीपुरा, जबलपुर।

शीलवती—ज्ञानो ! इसमें कोई सन्देह नहीं कि अपन कालेज में इतना पढ़-लिख गये, परन्तु स्वयं को न जाना—अपने शरीर को न जाना; यह भी न जाना कि अपन कैसे जियें और कैसे आनन्द भोगें ? मैं तो महिला-परिषद् की कार्यकर्त्री सदस्या हो गई हूं। जब से मैंने उस परिषद का लाभ उठाया है, तब से मैं स्वस्थ रहती हूँ। देखो, अब न तो मुझे मूर्च्छा आती, न उदासो रहती, न आलस्य रहता और न शरीर में कहीं पीड़ा ही है। अब मैं पहिले जैसी एकान्त में बैठकर भूतों का सम्मेलन नहीं करती। अब मुझसे घर-बाहर के सब लोग प्रसन्न रहते हैं। नहीं तो पहिले मैं जहां से भी निकल जाऊं, वहीं हर कोई पूछता—अरी शीला ! तू कैसी हो गई है ? दिन-प्रतिदिन कृश होती जा रही है। आखें धँस गई हैं—नेत्रों की कोरें काली हो गई हैं—गाल पिचके जा रहे हैं। मुंहासों ने आनन को कानन बना रखा है। क्या कहूँ, कहां तक सुनाऊँ ? अब तो मैं इतनी परिवर्तित हो गई हूं कि वे सब बातें स्वप्न को सी भासित होती हैं। ज्ञानी ! मैं तुझसे सत्य कहती हूं कि यदि तू भी स्वस्थ-महिला-परिषद की सदस्या हो जाय तो एक सप्ताह के भीतर तू अपने में विशाल परिवर्तन पावेगी।

प्रभा—(बीच में आकर) अच्छा, शीलवती अपनी परिषद की केनवासिंग कर रहीं हैं ! अब तो तुमने बहुत सदस्याएं बना ली हैं। मेरी समझ में कालेजों और हाई-स्कूलों की कम से कम पचास प्रतिशत सदस्याएं तुम्हारी सदस्याएं हो चुकी होंगी।

शीलवती—(सदस्य-पंजिका खोलकर सामने रखते हुए) अभी सदस्याओं की क्रमसंख्या ६८१ है और यह हमें नौलाख तक ले जानी है।

ज्ञानी—तो क्या ९००००१ नौ-लाख-एक तक ?

शीलवती—हां।

प्रभा—अभी तो भारत-भर की समस्त छात्राओं की सम्पूर्ण संख्या सोलह हजार आठ भी न होगी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शीलवती—अभी नहीं, इससे हमें क्या ? इसे हम अपने यहांतक ही सीमित न रखेंगे। हमारा कार्यक्षेत्र अखिल विश्व होगा। जहां तक महिलाओं के स्वास्थ्य का सम्बन्ध है, सारे संसार की स्त्रियां रुग्ण हैं—यदि हमारे देश में शरीर-रोग अधिक हैं तो भारतेतर भौतिक-वादी देशों में मानस-रोग अधिक हैं। अतः हमारा कार्यक्षेत्र सीमित नहीं; है।

ज्ञानी—तो आज तुम मुझे इस परिषद् की सदस्या बनाने आई हो ?

प्रभा—इतने पर भी तुम्हें यह पूछना शेष था ?

ज्ञानी—सदस्य-शुल्क क्या है ?

शीलवती—द्रव्य बिलकुल नहीं। सामान्य सदस्य-शुल्क के रूप में यह आशा की जाती है कि कम से कम तीन प्रारम्भिक बैठकों में उपस्थित रहें। फिर जब इच्छा हो तब आवें, पर अभी तक का हमारा अनुभव है कि तीन बैठकों में आने के पश्चात् कोई भी सदस्या अनुपस्थित नहीं रहती। अपितु अनेक सदस्याओं का आग्रह है कि बैठक मासिक के स्थान में पाक्षिक कर दी........

मनोरमा—क्या कहा ? हम तो मासिक-बैठक से ही हैरान हैं, तू पाक्षिक की प्रार्थना कर रही है। हे परमेश्वर ! स्त्रियों को तूने यह मासिक-बैठक की व्याधि क्यों लगा दी ? केवल नौ-माह के लिये तू यह बैठक बन्द कर देता है, तभी तो इस विश्व का सचालन करने वाली मानव-जाति का एक सदस्य प्रादुर्भूत होता है। यदि कहीं नौ वर्ष के लिये भी बन्द कर दे तो स्यात् अखिल भू-मंडल का नहीं तो कम से कम अपने देश का उद्धार करने वाली एक मानवी व्यक्ति अवश्य प्रकट हो।

ज्ञानी—और यदि आजीवन यह बैठक स्थगित कर दी जावे तो ?

रामकली का प्रेतात्मा—(आकाशवाणी सुनाई देती है।) वह नारी स्वयं अखिल-लोक-नायक परब्रह्म परमात्मा की प्रतिमूर्ति बन इस जगत् में अपनी जैसी असंख्य दुर्गाओं का निर्माण कर संसार का कल्याण कर देगी। इसीलिये प्रथम संतति का प्रसव करते-करते मैंने शरीर का त्याग कर दिया; क्योंकि आज समाज के कामी-नरों में गर्भ-संस्थापन की अविवेक पूर्ण उन्मत्तता तो है परन्तु न उनमें कामसुख ही है और न उन्हें यह ही ज्ञान है कि कैसा बीज, किस समय, किस भूमि में,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

किस विधि से वपन करना चाहिये। मैं तो अब योग्य-योग्य नारियों को चुनकर उनके शरीर में अपने योग-बल से प्रविष्ट होकर ऐसे कार्य कररही हूं,जिससे नारी-समाज उन्नत हो रहा है। मैं ही हूं जिसने स्वस्थ-महिला परिषद् की सृष्टि की है। मैं तब तक आराम से नहीं बैठ सकती, जब तक संसार का समस्त नारी-जगत् दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से मुक्त न हो जावे। जब नारी नीरोग होगी तो नर भी स्वयं ही नीरोग हो जावेगा;क्योंकि वह उसी भूमिकी उपज है—उसी लता का संजीव-फल है।

सब—(अभी तक अवाक, सुनकर परस्पर में) यह क्या बात है ? यह तो कोई दैवी-शक्ति प्रतीत होती है।

शीलवती—कुछ भी हो। हमारा अंतरात्मा इस प्रकार प्रतिध्वनि करता ही है। चाहे यह कोई भी कह रहा हो, बात तो सच है। हमारा यह अनुभव है कि हमारी परिषद् की कोई भी सदस्या रोगिणी नहीं है। ज्ञानी ! तुम सदस्यता स्वीकार कर लो, फिर हम अपने यहां की सदस्याओं का तुम्हें परिचय करावेंगे। उनसे बात करके तुम्हें ज्ञात होगा कि वे कैसे-कैसे रोग-ग्रस्त हुईं और फिर उनसे कैसे मुक्त हुईं।

प्रभा—परिषद् में क्या केवल छात्राएँ ही सदस्या हो सकती हैं ?

शीलवती—नहीं। इसका द्वार समस्त स्त्री-जाति के लिये खुला है। आबाल-वृद्ध, विधवा-सधवा, ऊढ़ा-अनूढ़ा, संयुक्ता-वियुक्ता, पद्मिनी-शंखिनी-चित्रिणी-हस्तिनी, वेश्या-कुलटा, साध्वी-पतिता, सवत्सा-वंध्या, सगर्भा-अगर्भा, सुरूपा-कुरूपा, सुवाक-कुवाक कोई भी हो—केवल स्त्री हो; हमारी सदस्या हो सकती है। रोगिणी हो, क्षयिणी हो, उन्मत्ता हो, मूर्च्छावती हो, कैसी भी हो; हमारे यहां आ सकती है। विलम्ब न लगेगा—वह नीरोग होगी। आत्मा से, मन से, इंद्रियों से और तन से सब प्रकार से नीरोग होगी।

ज्ञानी—तो मैं तुम्हारी परिषद् की सदस्यता की प्रार्थिनी हूँ। परन्तु मेरा एक बड़ा रोग है, उससे मुझे मुक्त हो जाना चाहिये।

शीलवती—निःसन्देह, और शीघ्र।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ज्ञानी—परन्तु मेरे जैसा रोग न किसी को हुआ और न होगा। और मैं समझती हूँ कि जब तक मेरी चिकित्सा स्वयं परमेश्वर ही न करे, मैं नीरोग न होऊँगी।

शीलवती—तुम्हें हमारी परिषद् में परमेश्वर भी मिल जावेगा।

रामकली का प्रेतात्मा— मैं हूँ परमेश्वर की विभूति। क्या चाहिये, बोलो ?

(एक अलौकिक-प्रकाश को देखते ही ज्ञानी मूर्छित हो जाती है। शीलवती आदि उसे महिला परिषद् के रुग्णालय में ले जाती हैं।)

शीलवती—अखिल-लोक-नायक परब्रह्म परमात्मा भी उद्भव-स्थिति-संहार-कारिणी सर्वशक्तिमती लीला-देवी के चरणों में कोटिशः प्रणाम। भगवति ! आज एक अद्भुत-सदस्या ने आपके आश्रम में प्रवेश किया है। वह मूर्छितावस्था में अपने रुग्णालय में पड़ी है, कुछ कारण ज्ञात नहीं। शीघ्र चलिये।

लीला—(ज्ञानी के पास जाकर) हाथ देखती है। इसे कामरोग है। काम की नव-दशाओं को पार करके यह दशमावस्था की ओर जा रही है। रामे ! तुम जाओ और तत्काल सुन्दर पुरुष का वेष धारण करके आ जाओ। शेष जन यहां से चले जावें।

[सुन्दर-सुन्दर चित्रों से सुसज्जित एक वैभवपूर्ण कमरे के बीच में पलङ्ग पर एक स्त्री अचेत पड़ी है। कोटि-कोटि काम की छवि को लजाने वाला युवक उसी पलङ्ग में स्त्री के कटिप्रदेश के समीप बैठा, उस स्त्री के मस्तक-कपोल-कुच आदि प्रदेशों में अपने कर-कमलों के संस्पर्श से जीवन-संचार करने का प्रयत्न कर रहा है ? एक ओर लीला चुपचाप सब कुछ देख रही है। दीवालों पर भांति-भांति के चित्रों के बीच—कहीं वृन्दावन-विहारी राधावल्लभ अपनी प्रेयसी की वेणी गूँथ रहे हैं—कहीं वन के कंकरीले-मार्ग में चलती-चलती खिन्न और थकी हुई प्रेयसी को स्कंध में आरूढ़ कर बड़े उल्लास से कहीं ले जा रहे हैं—कहीं राधिका अपने कामशास्त्र विशारद कान्त के मुख का चर्वित-तांबूल अपने मुख में प्रक्षिप्त करा लेने की आग्रह-पूर्ण मुद्रा में दीख रही है। भाव यह कि संयोग शृंगार के जितने दृश्य हो सकते हैं, वे सब वहां दृष्टि-गोचर हो

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रहे हैं। चारों ओर बड़े-बड़े चित्रित गोलक, यंत्र-बल से परिवर्तित हो-होकर मधुर ध्वनि करते हुए भांति-भांति की कामक्रीडाओं का प्रदर्शन प्रस्तुत कर रहे हैं। सहसा पलङ्ग पर पड़ी हुई निश्चेष्ट बाला अपने नेत्र-पलकों को उन्मीलित कर युवक पर दृष्टिपात करती है। उसी क्षण युवक बड़े प्रेम से उसका आलिंगन करके बड़ा गंभीर चुम्बन करता है।]

बाला—मैं कहां हूं ? हे परमेश्वर ! आप कौन हैं ? मेरी शय्या पर क्यों बैठे हैं ? हाय, मैं कहीं की न रही। (पुनः मूर्छित हो जाती है।)

युवक—(सर्वांग में अपने शीतल एवं कोमल कर-कमलों का संस्पर्श करते हुए) ज्ञानी ! खिन्न क्यों हो रही हो ? प्रिये, तुमने हमारे लिये कितना कष्ट भोगा और अब इस प्रकार बेसुध पड़ी हो। देखो ! हमें देखो ! क्या तुमने हमें नहीं पहिचाना ? हम वही ज्ञानसुन्दर शर्मा हैं, जिसके लिये तुम इस प्रकार व्याकुल थीं।

(बाला मूर्छितावस्था में गंभीर श्वास लेती है)

लीला—रामे ! देखो। तुम इसी प्रकार इससे प्रेमालाप करते जाओ। जल पिला दिया था न ? अब इसके सर्वांग में इस तैल का मंद-मंद मर्दन करो। यह कपूर - केशर - चंदन आदि सुगंधियों से युक्त वातशामक तैल है। इस की गंध से भी इसे लाभ होगा। तुम जो कहोगी, वह सब यह सुनेगी। इसे सब कुछ समझ में आवेगा और इसके मन पर जब-जब अनुकूल प्रभाव पड़ जावेगा, तब-तब यह तुम्हारी ओर निहारेगी और एक समय ऐसा आवेगा, जब यह तुमसे प्रभावित हो जावेगी। तुम्हारे व्याख्यान से इसे यह विश्वास हो जाना चाहिये कि इसे इसका यथार्थ प्रिय और यथार्थ प्रेमी प्राप्त होगया। आंवले के मुरब्बे के अवलेह में यह स्वर्णमाक्षिक भस्म भुनी हुई सोंठ के साथ है। इसे चटादो। सुवासित एवं कोष्ण दुग्ध आता है; जैसे ही इसे कुछ चेत आवे तब पिला देना। जब यह प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखे, तब इससे प्रेमी नायकवत् व्यवहार करना; जब सशंक हो तब एक चिकित्सक बन जाना। अन्ततोगत्वा यह ज्ञानसुन्दर पर पूर्णतया आसक्त हो जावेगी। तुमसे इसे पति का, प्रेमी का प्रेम प्राप्त होगा। रामे ! अब हम जाते हैं। तुम इसे सम्हालना।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

[युवक पूर्ववत् प्रेमालाप एवं सर्वांग में तैल-मर्दन करता है। अंगप्रत्यंग का स्पर्श बाला के शरीर में मानों प्राण-संचार कर देता है।)
बाला—(अर्धनिमीलित सलज्ज नेत्रों से देखती हुई।) अब मुझे अच्छा लग रहा है। आप मुझे अच्छा कर लेंगे ? क्या अब मैं नहीं मरूंगी ?

युवक—कैसे मरोगी ? ज्ञानी ! तुम इस आश्रम में आगई हो। अब, तुम सब प्रकार के कष्टों से मुक्त होजाओगी। यहां कोई कमी नहीं है। और जो तुम चाहोगी, वह सब होगा।

बाला—(अपना उर, उदर आदि अनाच्छादित करके युवक का हाथ कुचों पर रखते हुए) देखिये, मेरा हृदय नहीं है। मैं उसे खो बैठी हूं। अब आप मुझे हृदय दीजिये।

युवक—प्रिये ! मैं तुम्हें अपने हृदय के साथ अपना मन प्रदान करता हूं और तुम्हारे अन्तः हृदयमें अपनी आत्माको विलीन करता हूँ।

(दोनों परस्पर में गाढ़ालिंगन कर मौन पड़जाते हैं। समय-समय पर युवक बाला की पीठ, नितंब आदि पर हाथ फेरता जाता है एवं मुख आदि का चुंबन करता है।

×× ×× ××

लीला—आपकी पुत्री को अपतंत्रक हो गया है। इसे प्रचलित भाषा में हिस्टीरिया या योषापस्पार कहते हैं। वैसे तो इसे अनेक उपद्रव और भी हैं। इसकी योनि से कुछ स्राव भी होते हैं, जो इसके शरीर को क्षीण करते हुए इसके हृदय को बिलकुल हताश कर चुके हैं। इसका चित्त विक्षिप्त होगया है।

देवीदत्त—मैं वृद्ध हो गया हूँ। यह लड़की एम. ए. उत्तीर्ण है। पच्चीस वर्ष की है। हमारे समाज में ऐसी कुप्रथा है कि लड़कों के लिये दस-दस, बीस-बीस हजार रुपया देना पड़ता है और फिर भी ठिकाना नहीं लगता। हम सोचते थे — लड़की पढ़ लिख गई है, इसे लड़के दौड़ कर ब्याहेंगे, पर फल उलटा ही हुआ। लोग समझते हैं कि, लड़की इतनी पढ़ी है, अब इसका विवाह सामान्य-जन से तो होगा नहीं, इसलिये अच्छे घरके पढ़े-लिखे लड़कों की कीमत इतनी अधिकहोगई है।

×× ×× ××

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लीला—रामे ! उठो। अब इसके पिता आ रहे हैं। क्या यह सो रही है ? अब क्या स्थिति है ?

रामा—हां। सो रही है। इसे यह विश्वास हो गया है कि उसने मुझे अपने उपयुक्त पति के रूप में प्राप्त कर लिया है तथा वह मेरे संयोग से अवश्य ही रोग-मुक्त हो जावेगी।

लीला—तुम्हारी प्रच्छन्नता का इसे संदेह तो नहीं हुआ ?

रामा - नहीं। मैंने इसके समस्त कामांगों का अवलोकन किया। आज तक इसने अपनी कक्षा (कांख) तक के लोम न निकाले थे। निःसंकोच इसने मुझसे कह-कह कर वे लोम क्षुरधार द्वारा पृथक करवाये इसे श्वेत-स्राव होता है,जैसा आपने वस्त्रोंसे धब्बों के अनुमान किया था।

लीला—आगे और कुछ करने को तो नहीं कहा ?

रामा—कहा था। परन्तु मैंने इसे प्रेम से समझा दिया कि इन अंगों की विकृति को दूर दूर कर लें, फिर तो अपने सुखोपभोग के लिये सारा जीवन पड़ा है। वह मान भी गई।

लीला—अच्छा, हम जाकर इसके पिता को लाते हैं। तुम इसे जता कर चली जाओ।

×× ×× ××

देवीदत्त—(बाला के सिरपर हाथ फेरते हुए) ज्ञानी,अब तबियत ठीक है ?

ज्ञानी—हां, अब मैं अच्छी हूँ और विश्वास है कि शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जाऊंगी।

देवीदत्त—अच्छा है बेटी। हम भी तुम्हारे विवाह का शीघ्र प्रबन्ध कर रहे हैं।

ज्ञानी—(नेत्रों को कुछ मूंदती हुई) पर, मैं अच्छी तो हो जाऊं ?

देवीदत्त—हां, जब बिलकुल अच्छी हो जावो तब।

ज्ञानी—जी हां।

×× ×× ××

ज्ञानी—मैंने पिता जी को समझा दिया है और विवाह की बात टल जावेगी। अब आप ऐसा कीजिये कि मेरा विवाह आप से ही होवे और आप मुझे सर्वदा सुलभ रहें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ज्ञानसुन्दर—प्रिय, तुम्हारे हम पति हैं और यथार्थ पति हैं, हम तुम्हें छोड़ेंगे कैसे ?

ज्ञानी—बस, यही इस दासी की प्रार्थना है। जन्म-जन्मांतरों में साथ न छोड़ना। (गद्गद् होकर गले से लिपट जाती है)

ज्ञानसुन्दर—परन्तु तुम जैसी शरणागत हमारी अनेक हैं ?

ज्ञानी—रही आवें। परन्तु मेरे लिये सदैव अपने हृदय के किसी छोटे से कोने में स्थान रखना।

ज्ञानसुन्दर—अवश्य, पर बात यह है कि तुम्हें अभी अनेक रोग हैं, उनसे मुक्त हो जाओ। और इसके लिये हमें लीला-देवी की सहायता लेनी पड़ेगी। उनके समक्ष तुम्हें अपने सब वृतांत—और व्याधि का पूरा स्वरूप रखना पड़ेगा। वे बहुत गंभीर हैं, अपनी बात पूर्णतया गुप्त रहेगी और वे सर्वदा अपनी सहायता करेंगी।

ज्ञानी—आप जैसा उचित समझें।

× × × × × ×

(कमरे में पलङ्ग पर ज्ञानसुन्दर के अंक में लेटी हुई ज्ञानी—और सामने कुर्सी पर लीला)

ज्ञानसुन्दर—ज्ञानी, तुम लीला के समस्त प्रश्नों का उत्तर ठीक-ठीक देना, कोई संकोच और भय न करना।

लीला—यह स्राव कब से होता है ?

ज्ञानी—लगभग दो-वर्ष से।

लीला—हम तुम्हारे अंगों का अवलोकन करेंगे। × × × योनिच्छद कब और कैसे विदीर्ण हुआ ? यह भग-शिश्नका, भगोष्ठ तथा भगद्वार में विकृति कैसी ? (कुचों को देखकर) इन चूचुकों का यह स्वरूप कैसा ?

ज्ञानी—मैं कुछ नहीं जानती।

लीला—एम, ए. पास हो और कुछ नहीं जानतीं ?

ज्ञानी—हमें कभी ऐसे विषयों का ज्ञान ही नहीं कराया गया।

लीला—तुमने अपनी योनि में अपने हाथ से घर्षण किया है !

ज्ञानी—हां, खुजली होती थी तो जोर से भी खुजाते थे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लीला—यह सब करमैथुन का दुष्परिणाम है। तुमने अपनी अज्ञानता का आघात अपने कुचों पर भी किया है और मस्तिष्क पर भी; अब तुम अपना पूरा इतिहास सुना जाओ।

ज्ञानी—अनेक दिनों से मैं अपनी पाठ्य पुस्तकों में, उपन्यासों में, नाटकों में, संसार में—पढ़ती-देखती रही हूं, नर-नारी प्रीति के अनेक चित्र। हमारे घर में रोज होने वाले भाई-भाभी, काका-काकी, आदि के तरुण-सम्बन्धों से किस-किस प्रकार के संकल्प-विकल्प उठे, यह मैं क्या कहूँ ? आपको तो स्वयं सब सुविज्ञात है।

लीला—अच्छा, अब तुम्हारी चिकित्सा यहां प्रारम्भ होगी। तुम्हें कार्य करना पड़ेगा। झाड़ना-बुहारना और कूटना-पीसना तुम्हारे व्यायाम होंगे। इनसे तुम यह भी सीखोगी कि अपने अंगों को किस प्रकार साफ रखें। यदि तुम अपने कोमलांग के केशों को पृथक कर वहां सफाई रखतीं; जिस प्रकार साबुन आदि से अपने शरीर का स्नान किया, उसी भांति उस अंग में भी सफाई रखतीं; जिस प्रकार अपने मुख आदि में स्नो, पोमेड, चिकनाई आदि का प्रयोग करतीं तो आज तुम्हारी जननेंद्रियोंमें यह श्यामता, यहकर्कशता और यह दुर्गंधि न होती।

"निर्मलांघ्रि-मलायनः" पैरों को साफ रखने और मलमार्गों को साफ रखने का उपदेश विशेष रूप से देने का यही उद्देश्य है कि हाथ-मुंह आदि को तो मनुष्य साफ कर ही लेता है क्योंकि इनकी गंध, मलिनता आदि का रसनेद्रिय, घ्राणेंद्रिय आदि पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है; परंतु मलमार्गों और पैरों ने नेत्र, नासिका और रसनेंद्रिय का क्या बिगाड़ा है ? अतः स्त्रियां इनकी ओर विशेष ध्यान नहीं देतीं। मूत्रोत्सर्ग के पश्चात् यदि और नहीं तो कम से कम जल से तो प्रक्षालन कर ही लेना चाहिये। विशेषकर स्त्री का मूत्रमार्ग ऐसे स्वरूप का है कि उसमें लगा हुआ मूत्र योनिद्वार, भगोष्ठ आदि में अपना क्षारीय दाहक-प्रभाव करता है। योनि-मार्ग से विशेषकर ज्ञातयौवनाओं के, एक प्रकार का लालावत् स्राव काम-कल्पनाओं अथवा कामुक वातावरण के अवसर पर स्रवित होता है, जो यदि साफ न किया गया अथवा उन अंगों में आवश्यक लेप आदि न किये गये तो वहां सड़कर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऐसे विकार उत्पन्न कर देता है, जिसके फलस्वरूप प्रदर जैसी भयंकर व्याधियां हो जाती हैं। अस्तु, ऐसे समयों में योनिप्रक्षालन तथा आवश्यक लेप करना बहुत आवश्यक है।

ज्ञानी—ऐसी वस्तुओं का ज्ञान हमें कोई कराता ही नहीं।

लीला—गुन न हिरानो, गुनगाहक हिरान्नो है। "आयुर्वेद-चिकित्सक" अपने प्रत्येक प्रकाशन में महिलाओं के लिये अत्यन्त आवश्यक एवं उपयोगी विषय प्रस्तुत करता रहता है। उसे देखने से सब बातें स्पष्टतया ज्ञात हो जाती हैं।

ज्ञानी—अब मुझे पुनः भारीपन प्रतीत होने लगा।

लीला - अच्छा हम जातेहैं। ज्ञानसुन्दर जी आपको परिचर्यामें रहेंगे। (ज्ञानी और ज्ञानसुन्दर में बड़ा प्रेम बढ़ा; ज्ञानी अब बिलकुल अच्छीहै।)

ज्ञानी— प्रियतम ! आपने अपने सयम का वहुत प्रमाण दिया। अभी तक मैं रुग्ण थी। आपने मेरी बड़ी सेवा की। अब मुझे आपकी सेवा करने का अवसर दीजिये। पढ़ा है, स्वर्ग में भोग ही भोग है। आप क्या मुझे इस लोक में स्वर्ग का प्रकाश दिखावेंगे ?

ज्ञानसुन्दर—अवश्य।

लीला—ज्ञानी, तुम्हारे पिता एक युवक के साथ आ रहे हैं।

ज्ञानी—क्या बात है ? श्री ज्ञानसुन्दर जी को भी बुलवा लें।

देवीदत्त—बेटी, हमने श्रीसुन्दरम् से तुम्हारा विवाह निश्चित किया है।

ज्ञानी—(ज्ञानसुन्दर की ओर देखकर) आपने मेरी बड़ी सेवा की है। आपनेही मुझे जीवनदान दियाहै। आपकी सम्मति अपेक्षित है।

ज्ञानसुन्दर—ज्ञानी, मैं अपनी स्वीकृति देने के पूर्व तुमसे कुछ बात करना चाहूँगा।

(दोनों एकान्त में जाते हैं। वहां से कुछ ही समय में ज्ञानी रामा के साथ आती है।)

ज्ञानी—पिता जी ! यह रामा थीं, जिन्होंने मेरे प्राण बचाये। इनकी स्वीकृति लीजिये।

रामा—भावी वर-वधू को मेरा आशीर्वाद है।

लीला—ज्ञानी ! स्वस्थ-महिला परिषद् की सदस्याओं की वृद्धि करना।

000126
Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

1574

प्रदर और प्रमेह ये दोनों रोग क्रमशः स्त्री-पुरुषों को दुष्ट रोग हैं। प्रदर 'धातु जाने को' कहते हैं। प्रदर कई प्रकार से होता है और यह गर्भाशय-मार्ग में ही होता है। 'सोमरुङ्मूत्रमार्गे स्यात्-प्रदरो गर्भवर्त्मनि'। शास्त्रकारों ने प्रदर के समान एक सोमरोग का वर्णन भी किया है। सोमरोग मूत्र-मार्ग में होता है और प्रदर गर्भ-मार्ग में ही होता है। प्रदर औरतों को अत्यन्त कमजोर करता एवं कष्ट देता है। इसके (१) रक्तप्रदर और (२) श्वेतप्रदर ये मुख्य दो भेद हैं।

(२०१) रक्तप्रदर की चिकित्सा—

यूनानी (हकीमी) शास्त्र में कही गई एक अनुपम दवा है जिसे 'खूनखराबा' इस नाम से कहने पर अत्तारों (दवा बेचने वालों) के यहां मिल जाती है। यह लाल रंग की होती है। कपड़छन करके, शीशी में रखें। मात्रा एक माशा की है। सुबह, दोपहर, शाम एवं रात्रि में प्रतिदिन ४ खुराक पानी के साथ या दूध के साथ दें। इससे रक्तप्रदर निश्चित ही ठीक हो जाता है। साथ-साथ में त्रिफला-क्वाथ या फिटकरी के पानी से 'योनि प्रक्षालन' (डूस) लेते रहना चाहिये। 'खूनखराबा' रक्तार्श, रक्तपित्त पर भी काम करता है।

(२०२) रक्तप्रदर नाशक प्रयोग—

सफेद राल	८ तोला।	मिश्री	८ तोला।
प्रवाल पिष्टी	१ तोला।	कलमी शोरा	२ तोला।

—इन्हें भली-भांति कूट-पीस कर छान लें और शीशी में भरकर रखलें।

सुबह-शाम ३ से ४ माशे तक, शीतल जल या कच्चे दूध के साथ लें। साथमें पका हुआ ऊमर मिलसके तो खिलाते रहना चाहिये। यह नुसखा रक्तप्रदर, रक्तपित्त, रक्तार्श, गर्मी में नक्सीर फूट जाना और मूत्रकृच्छ्र पर भी—अच्छा काम करता है।

(२०३) रक्तप्रदर बन्द करने को—

नागकेशर १ तोला। पीपल की लाख २ तोला। कमलगट्टा १ तोला। कमल केशर १ तोला। प्रवाल पिष्टी ६ माशा। इलायची बीज ६ माशा। शुद्ध बीजबोल १ तोला। कामदुधा रस ३ माशा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बका कपड़छन्न चूर्ण करें। मात्रा ३ माशा से ६ माशा तक। शक्कर, कच्चादूध या बासे शीतल-जल से दिन ३-४ बार दें।

(२०४) श्वेतप्रदर की चिकित्सा—

लहसुन (प्याज) का रस लेकर शक्कर-पानी के साथ मिलाकर पिलाते रहें। कैसा ही श्वेतप्रदर क्यों न हो, फौरन बन्द हो जाता है। भूरा-कुम्हड़ा की साग दें एवं पेठा भी सुबह-शाम खाने को दें।

(२०५) मासिक धर्म बन्द करने का—

मलयागिर चन्दन का लेप, या प्याज के स्वरस का लेप या फिटकरी का फोहा योनिमें रखनेसे मासिक-धर्म (ऋतुस्राव) बन्द होगा।

(२०६) बिगड़ा हुआ मासिक-धर्म खोलने का उपाय—

बांस की पत्ती	ऽ। भर।	हल्दी	ऽ। भर।
गाजर बीज	ऽ। भर।	काली तिली	ऽ। भर।

—सबका यवकुट चूर्ण रखें। १० तोला यवकुट चूर्ण का ८ सेर पानी में क्वाथ करें। अष्टमांश क्वाथ पीने को दें। दिन में ४ बार दें। प्रतिबार २॥-२॥ तोला की मात्रा रखें। भोजन में रूक्षान्न दें एवं चतुर्थांश क्वाथ से प्रतिदिन स्नान करावें। इससे रुका हुआ आर्तव खुलेगा।

(२०७) बिगड़े मासिक को खोलने का दूसरा उपाय—

सोंठ	१)	पीपल	१)	पीपरामूल	१)	अजवाइन फूल	॥)
अजमोद	१)	लौंग	१)	मूली बीज	२)	कलौंजी	१)
पुराना गुड़	४)	गाजर बीज	॥)				

—सबका चूर्ण करके गुड़ में झड़बेरी के बराबर गोलियां बनालें। २-२ गोली गर्म पानी के साथ दिन में ३ बार दें।

(२०८) रुकेहुए मासिक-धर्म को खोलनेवाली वर्ति—

अफीम   कलिहारी   गोंद   गुड़।

—सबको बराबर-बराबर लेकर वर्ति बनालें एवं योनि में रखें। ऊपर की गोली भी खाने को दें। पुराने कई दिनों से बिगड़े हुए मासिक धर्म पर ये तीनों अन्तिम प्रयोग अति लाभ-प्रद हैं।

—ले० श्री डॉ० भागचन्द्र जी जैन वैद्यरत्न, नारायणगंज (मंडला)

Acc No.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनुभव-पूर्ण चार-सौ प्रयोगों से ओत-प्रोत अत्युपयोगी

-'आयुर्वेद-चिकित्सक' सन् ५३ की फाइल-

(प्रत्येक वैद्य, डाक्टर और गृहस्थ के लिये अत्यावश्यक)

इस पूरी फाइल में एक से एक बढ़े-चढ़े अनुभव पूर्ण ६५ लेख । साथ ही साथ जादू की तरह काम करने वाले अत्यन्त सुपरीक्षित गभग चार-सौ प्रयोग-रत्न हैं।

उल्लेखनीय लेखों में से स्वस्थ-महिला, चेचक और बच्चे, सूखा-रोग, मलेरिया, विकृतदुग्ध, ऋतुचर्या पर ६ लेख, अपतर्पण, अतिसार पर १६ अनुभव, ताम्बूल, आठ-औषधों से धर्मार्थ-औषधालय चलाना, अनेकों रोगों पर अनुभव पूर्ण चिकित्साक्रम आदि ६५ लेख हैं।

प्रयोगों में—हार्टफेल होने से बचाने वाला शर्तिया-प्रयोग 'हृदय-रक्षक रस' और 'हृदयरक्षक वटी' धातुवर्धक, प्रदर की शर्तिया औषध, प्रदरान्तक कल्प, करामाती पचासों चुटकुले, सिद्ध शरबत (५० रोगों पर), दुबले-पतलों को शर्तिया मोटा बनाने वाला योग, अनेकों नमक-सुलेमानी, महिला-रसायन, चेचक पर पचीसों अनुभूत प्रयोग, कृमिमुद्गर वटी, पेड़ू मुलायम करने वाला, पचासों उदर-रोगों पर शर्तिया 'छत्तीसा-चूर्ण' स्वादबहार, अत्यार्तव-हर, व्रणपूरक, दीपन-पाचन वटी, नयनामृत, उत्तम काजल, प्लेग-हैजानाशक, नपुन्सकत्व हर आदि चार-सौ एक से एक बढ़कर प्रयोग हैं।

चार रुपये मनी-आर्डर से पेशगी भेजने पर इसी फाइल के साथ ही 'तत्काल फलप्रद प्रयोग' (प्रथम भाग) भी भेंट में दिया जायगा। वी. पी. से सवा चार रुपया ही होगा। आज ही मनी-आर्डर भेजकर सन् ५३' की पूरी फाइल अवश्य मंगाइये।

४०१ प्रयोग और ३५० पृष्ठ का पोथा इस मूल्य में बहुत ही सस्ता है।

वैद्य पं० चन्द्रशेखर जैन शास्त्री, संपादक-'आयुर्वेद-चिकित्सक'।
लाखाभवन, पुरानी चरिहाई, जबलपुर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

— ये ग्रन्थ अवश्य मंगाइये —

सौ-रोगों का सफल इलाज

जीर्णज्वर, टाइफाइड (मोतीझरा), टी. बी. (तपेदिक), बच्चों के रोगों, महिलाओं के रोगों, कब्ज, अतिसार, बवासीर, अजीर्ण, जुकाम, सर्दी, खांसी, सिरदर्द, प्रमेह, मधुमेह, स्वप्नदोष, प्रसूता के रोग, गर्भिणी के रोगों, नेत्ररोग, अम्लपित्त, प्लेग, हैजा, चेचक प्रभृति अत्यधिक प्रचलित सौ-रोगों पर अत्युत्तम सरल अनुभूत पथ्यात्मक चिकित्सा। रईसों, महिलाओं को अत्युत्तम। पृष्ठ १७५। सजिल्द २), अजिल्द १॥)

— धर्मार्थ औषधालयों के प्रयोग —

(प्रतिदिन काम में आने वाले पैसे-पैसे के प्रयोग)

पुस्तक में 'गागर में सागर' भर दिया है। हमारे २० वर्ष के अनुभव का निचोड़ है। शर्तिया काम करने वाले इस प्रयोग-संग्रह को मँगाकर सस्ते में औषधालय या धर्मार्थ औषधालय चलावें। जनता, सेठ, धर्मार्थ संस्थायें अवश्य मँगावें। पृष्ठ १००। मूल्य १।) मात्र।

पथ्यदर्शक (प्रथम भाग)

लगभग २८ रोगों का मात्र पथ्य से इलाज। जीवन भर के लिये प्रत्येक गृहस्थ को अत्युपयोगी। (मक्खन-सा कागज, बढ़िया छपाई, पृष्ठ ३२) एक प्रति ।)। पांच प्रतियां १)। ४) में २५ प्रतियां घर बैठे मंगावें।

— दस-रुपये में वैद्य बनिये —

याद रखिये, हम झूठे सर्टीफिकेट देकर वैद्य नहीं बनाते। हमने आयुर्वेद-शास्त्र का मथन करके रोग-विज्ञान एवं सरल-चिकित्सा का पुस्तक-कोर्स तैयार किया है। इसका अध्ययन करके चौथी-कक्षा पास विद्यार्थी भी अच्छा मार्के का वैद्य बन-सकता है। इस कोर्स का पूर्वार्द्ध छपकर तैयार है। आज ही ५) मनी आर्डर से भेजकर फौरन मंगाइये। वी. पी. से आठ आना और अधिक देना होगा।

आप सचमुच एक-वर्ष में ख्याति प्राप्त उत्तम-वैद्य बन जायंगे। जवाबी-पत्र मिलने पर परामर्श भी दिया जायगा। आज ही लिखिये—

आयुर्वेद-चिकित्सक संघ (अध्यापन-विभाग) लालाभवन, जबलपुर।

प्रकाशक—चन्द्रशेखर शास्त्री। मुद्रक—अन्जुमन प्रेस, जबलपुर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection